



દ્વિતીય વર્ષ

ડી. એલ. એડ્. અભ્યાસક્રમ મોડ્યુલ

કોર્સ – 5 (બ)

પદ્ધતિશાસ્ત્ર અને વિષયવસ્તુ : હિન્દી
(ધોરણ:- 5 થી 8)

પદ્ધતિશાસ્ત્ર અને વિષયવસ્તુ : સંસ્કૃત
(ધોરણ:- 6 થી 8)

જીસીઈઆરટી, વિધાભવન,
ઉદ્યોગભવન સામે, સેક્ટર-12,
ગાંધીનગર

આવૃત્તિ
2020

● કન્વીનર :

- ડૉ. કે. કે. કરકર

● વિષય સલાહકાર :

હિન્દી :

- ડૉ. રવીન્દ્રભાઈ અંધારિયા

સંસ્કૃત :

- નરેન્દ્ર રાવલ

● લેખન-સંપાદન :

હિન્દી :

- ડૉ. જી. બી. જોશી

- ડૉ. સંજય આર. તલસાગીયા

સંસ્કૃત :

- એમ. એ. ધારૈયા

- કલ્પનાબેન બી. રાજપૂત

- પ્રવીણચંદ્ર જાની

- ડૉ. હિરલકુમાર એમ. બારોટ

● સમીક્ષા :

હિન્દી :

- પ્રકાશ સોની

- કૈલાસબેન એલ. નાકરાગી

સંસ્કૃત :

- ડૉ. જ્ઞાતાબેન પરમાર

● ભાષા શુદ્ધિ :

હિન્દી :

- રેવાભાઈ બી. પ્રજાપતિ

સંસ્કૃત :

- ભૂમિકાબેન કંસારા

● નિર્માણ સંયોજન :

- શ્રી આઈ. વી. પટેલ

(સભ્ય સચિવ)

- ડૉ. હરેશભાઈ ચૌધરી

- ડૉ. અખિલ ઠાકર

- ડૉ. ગૌરાંગ વ્યાસ

પ્રસ્તાવના

પરિવર્તનનાં પગથિયાં ચડીને જ પ્રગતિના રાજમાર્ગ સુધી પહોંચી શકાય છે. પ્રગતિનાં પીયૂષ પીવા માટે પરિવર્તન આવશ્યક છે. આ બાબતને અનુલક્ષીને પ્રાથમિક શિક્ષક પ્રશિક્ષણ પ્રભાવી બનાવવા માટે સમયાંતરે તેના અભ્યાસક્રમમાં ફેરફાર કરવાની જરૂરિયાત ઊભી થતાં ક્રમશઃ પુનઃ રચના કરવામાં આવી હતી.

પ્રાથમિક શિક્ષક પ્રશિક્ષણ અભ્યાસક્રમની પુનઃ રચનાના ઇતિહાસમાં ડોકિયું કરીએ તો ઇ.સ. 1995માં રાજ્યવ્યાપી અમલી બનેલ ક્ષમતાકેન્દ્રી અભિગમને અનુલક્ષીને ક્રમશઃ ઇ.સ. 1999 અને 2002માં અભ્યાસક્રમની પુનઃરચના કરવામાં આવી. ત્યારબાદ રાષ્ટ્રીય અભ્યાસક્રમ માળખું (NCF - 2005) જાહેરાત અન્વયે રાજ્યની પ્રાથમિક શાળાઓના પાઠ્યક્રમમાં પરિવર્તન આવતાં તેમજ અભ્યાસક્રમમાં પુનરાવર્તન પામતી ક્ષમતાઓ દૂર કરવાના હેતુસર ઇ.સ. 2008-09માં અભ્યાસક્રમને પુનર્ગઠિત કરવામાં આવેલ.

વર્તમાન સમયના પરિપ્રેક્ષ્યમાં ગુજરાત રાજ્યમાં NCF -2005, RTE-2009 અને NCTE દ્વારા પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવેલ NCFTE-2009 તથા 12 મી પંચવર્ષીય યોજનાની ભલામણોને ધ્યાને લઈને પ્રાથમિક શિક્ષણ ક્ષેત્રે થયેલ ફેરફારોના અનુસંધાને પ્રાથમિક શિક્ષક પ્રશિક્ષણ અભ્યાસક્રમનું પુનઃગઠન ઇ.સ. 2014માં કરી તેનું નવું નામાભિધાન ડી.એલ.એડ્. (D.El.Ed.) રાખવામાં આવેલ છે. નવા અભ્યાસક્રમમાં ક્ષમતાઓને બદલે અધ્યયન નિષ્પત્તિઓ (Learning Outcomes) ને સ્થાન આપવામાં આવેલ છે.

ડૉ. રવીન્દ્રભાઈ દવે સાહેબના અધ્યક્ષપાણ હેઠળ રચવામાં આવેલ અભ્યાસક્રમ સમિતિ અને ડી.એલ.એડ્. કોર ટીમના માર્ગદર્શનને અંતે ડી.એલ.એડ્. (D.El.Ed.) અભ્યાસક્રમનું ઘડતર કરવામાં આવેલ છે.

આ બે વર્ષીય ડી.એલ.એડ્. અભ્યાસક્રમ ત્રણ વિભાગોમાં વિભાજિત છે. જેના પ્રથમ વિભાગમાં સાત અધ્યયન ક્ષેત્રો, બીજા વિભાગમાં પાંચ કાર્ય કૌશલ્ય ક્ષેત્રો અને ત્રીજા વિભાગમાં પાંચ પ્રતિબદ્ધતા ક્ષેત્રો સમાવિષ્ટ છે.

આ વર્તમાન ડી.એલ.એડ્. (D.El.Ed.) અભ્યાસક્રમને અનુલક્ષીને પ્રસ્તુત મોડ્યુલ કોર્સ નંબર- 5 (બ) હિન્દી અને સંસ્કૃત તૈયાર કરવામાં આવેલ છે. આ મોડ્યુલની સંરચનામાં જી.સી.ઈ.આર.ટી., ગાંધીનગર, જિલ્લા શિક્ષણ અને તાલીમ ભવનો, પ્રશિક્ષણ કૉલેજો, વિષય તજજ્ઞશ્રીઓ તેમજ સમીક્ષકશ્રીઓનો સહયોગ પ્રાપ્ત થયેલ છે. આ ઉપરાંત, UNICEF નો પાણ આર્થિક તેમજ શૈક્ષણિક સહયોગ પ્રાપ્ત થયો છે. પ્રસ્તુત મોડ્યુલ ડી.એલ.એડ્. (D.El.Ed.) પ્રશિક્ષણાર્થીઓને ઉપયોગી બનશે તેવી શ્રદ્ધા છે.

આ મોડ્યુલ ક્ષતિરહિત બને તે માટે જી.સી.ઈ.આર.ટી. દ્વારા પૂરતી કાળજી લેવામાં આવી છે. આમ છતાં તેની ગુણવત્તા વધારે તેવાં સૂચનો જી.સી.ઈ.આર.ટી. સદાય આવકારે છે.

આઈ. વી. પટેલ

સભ્ય સચિવ

ડી.એલ.એડ્. અભ્યાસક્રમ સમિતિ

જી.સી.ઈ.આર.ટી., ગાંધીનગર

ડૉ. ટી. એસ.જોશી

નિયામક

જી.સી.ઈ.આર.ટી.,

ગાંધીનગર

અનુક્રમણિકા

□ હિન્દી : કક્ષા 5 સે 8

ક્રમ	ઈકાઈ કા નામ	પેજ નંબર
01.	અભ્યાસક્રમ કા સ્વરૂપ ંવં પ્રમુખ કૌશલોં મેં પ્રભુત્વ	01
02.	હિન્દી પાઠ્યપુસ્તક ંવં શિક્ષક સંદર્શિકા	18
03.	વ્યાકરણ શિક્ષણ	27
04.	ભાષા શિક્ષા કી વિધિયાં ંવં મૂલ્યાંકન	48
05.	હિન્દી સાહિત્ય કે સ્વરૂપ ંવં સાહિત્યકાર	53

□ સંસ્કૃત : ઘોરણ 6 થી 8

ક્રમ	પ્રકરણનું નામ	પેજ નંબર
01.	સંસ્કૃત ભાષા : વેદકાળથી વર્તમાન સુધી	02
02.	સંસ્કૃતનો સાહિત્યિક વારસો	11
03.	સંસ્કૃત અધ્યયન-અધ્યાપન પદ્ધતિઓ અને મૂલ્યાંકન	18
04.	સંસ્કૃત સમજપત્ર અને વ્યાવહારિક વ્યાકરણ	35
		

□ इकाई का प्रारूप :

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ

1.3 विषयवस्तु

1.3.1 अभ्यासक्रम का अर्थ

1.3.2 अभ्यासक्रम का स्वरूप

(अ) अभ्यासक्रम का बाह्य स्वरूप

(i) भाषा के प्रमुख उद्देश्य

(ii) अध्ययन निष्पत्तियाँ

(ब) अभ्यासक्रम का आंतरिक स्वरूप

(i) अध्ययन निष्पत्तियों में उत्कृष्ट गुणवत्ता प्राप्त करना

(ii) अध्ययन निष्पत्तियों की विकासात्मक शृंखला

(iii) मानवीय मूल्यों को उजागर करना

1.4 इकाई का सारांश

1.5 समझ जाँचनेवाले के प्रश्न

1.6 संदर्भ साहित्य

1.7 प्रायोगिक कार्य

1.1 प्रस्तावना :

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिन्दी भारत की राजभाषा है। हिन्दी को राजभाषा (राज्य या प्रशासन की भाषा) के रूप में 14 सितंबर, 1949 को स्वाधीन भारत की संविधान सभा ने घोषित किया है।

हिन्दी भाषा का राजभाषा के रूप में प्रयोग करनेवाले राज्य उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश - हैं। जबकि द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग करनेवाले पंजाब, महाराष्ट्र और गुजरात राज्य हैं।

भारतीय भाषा की भगिनी भाषा और विश्व की श्रेष्ठ ध्वन्यात्मक भाषा के रूप में जिस भाषा को आदर के साथ याद करते हैं, उस हिन्दी भाषा की कई विशेषताएँ हैं। हिन्दी भाषा का अपना एक व्याकरण है। हिन्दी भाषा का व्यापक और मौलिक साहित्य है। शब्द-संपदा और साहित्य भंडार भी अत्यंत समृद्ध है। वह विचार विनिमय का सरल माध्यम है। उच्चतर अध्ययन की इस भाषा में भारतीय संस्कृति या मूल्यों का प्रतिबिंब है।

अतः हिन्दी भाषा की इन सारी महत्वपूर्ण विशेषताओं को मद्देनजर रखकर गुजरात प्रान्त की प्राथमिक पाठशालाओं में कक्षा-4 द्वितीय सत्र से हिन्दी सिखाना प्रारंभ होता है, जो कक्षा-8 तक सिखाना तय किया गया है। अतएव कक्षा-5 से 8 तक के हिन्दी अभ्यासक्रम के स्वरूप को समझना अनिवार्य है।

1.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ :

☐ उद्देश्य (objectives):

प्रशिक्षणार्थी...

- अभ्यासक्रम का अर्थ समझ सकेंगे।
- अभ्यासक्रम के स्वरूप को समझ सकेंगे।
- हिन्दी भाषा के प्रमुख कौशलों को अर्जित करेंगे।
- हिन्दी भाषा की अध्ययन निष्पत्तियों का परिचय प्राप्त करेंगे।

☐ अध्ययन निष्पत्तियाँ (Learning outcomes):

प्रशिक्षणार्थी....

- अभ्यासक्रम का अर्थ दे सकेंगे।
- अभ्यासक्रम के बाह्य और आंतरिक स्वरूप का भेद कर सकेंगे।
- हिन्दी भाषा के प्रमुख उद्देश्यों के स्वरूप को समझ सकेंगे।
- कक्षा-5 से 8 हिन्दी की अध्ययन निष्पत्तियों के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अध्ययन निष्पत्ति विषयक अध्ययन प्रक्रिया की व्यूहरचना को समझ सकेंगे।

1.3 विषयवस्तु :

1.3-1 अभ्यासक्रम का अर्थ :

शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। इसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगी विकास करने का लक्ष्य है। सर्वांगी विकास के लिए शिक्षा में अभ्यासक्रम का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि अभ्यासक्रम छात्रों की क्षमता विकास का न केवल मार्ग निर्धारण करता है अपितु उसके मानांक भी निर्धारित करता है। यद्यपि अभ्यासक्रम एक व्यापक और दीर्घसूत्री संकल्पना है, जबकि वही अभ्यासक्रम कक्षाध्यापन के लिए कक्षाव्यवहार में प्रयोजित होता है तब वह पाठ्यक्रम का स्वरूप धारण करता है।

प्रस्तुत अध्याय में कक्षा-5 से 8 के अभ्यासक्रम के स्वरूप को समझने के लिए हम अग्रसर हो रहे हैं, तब हमें गुजरात राज्य में हिन्दी भाषा का स्थान तथा छात्र की शब्दसंपदा एवं भाषानुभव को ध्यान में रखना होगा, क्योंकि अभ्यासक्रम तब ही निर्धारित क्षमता सिद्धि में सहायक होगा जब उसका स्वरूप उक्त दोनों तत्त्वों को लक्ष्य में रखकर संरचित किया गया होगा।

अब हम कक्षा 5 से 8 के हिन्दी भाषा के अभ्यासक्रम के स्वरूप को समझेंगे।

1.3.2 अभ्यासक्रम का स्वरूप :

किसी भी वस्तु या प्रक्रिया का स्वरूप समझने के प्रमुख दो आधार हैं। इनमें से एक आधार है - उसका बाह्य स्वरूप तथा दूसरा आधार है - उसका आंतरिक स्वरूप। अभ्यासक्रम के स्वरूप को समझने के लिए आरंभ में हिन्दी कक्षा 5 से 8 के अभ्यासक्रम के बाह्य स्वरूप का परिचय प्राप्त करेंगे। तत्पश्चात् अभ्यासक्रम के आंतरिक स्वरूप को समझेंगे।

(अ) अभ्यासक्रम का बाह्य स्वरूप :

अभ्यासक्रम पूर्व निर्धारित शैक्षिक अनुभवों का समुच्चय है। इसलिए इस समुच्चय को समझने के लिए हमें अभ्यासक्रम के बाह्य स्वरूप को जाँचना - परखना होगा। अभ्यासक्रम के बाह्य स्वरूप को समझने के लिए हमें भाषा के प्रमुख उद्देश्य और हिन्दी कक्षा-5 से 8 की अध्ययन निष्पत्तियों को समझना है। इसलिए प्रथमतः 'भाषा के प्रमुख उद्देश्य' को समझेंगे।

(i) भाषा के प्रमुख उद्देश्य :

हिन्दी भाषा के प्रमुख उद्देश्य पाँच हैं - (1) अर्थग्रहण (2) अभिव्यक्ति (3) सर्जनात्मकता (4) व्यावहारिक उपयोजन और (5) तार्किक चिंतन। इन पाँच उद्देश्यों को हिन्दी के प्रमुख लक्ष्य भी माने जाते हैं। आइए ! इनके बारे में समझते हैं -

- **अर्थग्रहण :**

सुनकर, देखकर, पढ़कर या अनुभूति के माध्यम से व्यक्त मनोव्यापारों का बोधन करना ही 'अर्थग्रहण' है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। जो अभिव्यक्त होता है वह अभिव्यक्ति करनेवाले के मनोजगत में रहे विचार, अवधारणा, संवेदनाएँ, ज्ञान तथा अनुभव हैं। इनका सही तथा सार्थक अर्थ करना, उनके भीतर रहे लक्ष्यार्थ को प्राप्त करना अर्थग्रहण है। अर्थग्रहण से व्यक्ति की सोच विकसित होती है। अर्थग्रहण क्षमता को विकसित करने के लिए कक्षानुसार अध्ययन सामग्री तथा अध्येता के अनुकूल भाषा प्रयोग आवश्यक है। अर्थग्रहण ही भाषा शिक्षा सीढ़ी का प्रथम सोपान है।

- **अभिव्यक्ति :**

विचारों, अनुभवों, भावों, आवश्यकताओं और इच्छाओं को मौखिक, लिखित या सांकेतिक रूप से व्यक्त करना 'अभिव्यक्ति' है। अभिव्यक्ति के दो स्वरूप होते हैं - मौखिक अभिव्यक्ति और लिखित अभिव्यक्ति। मौखिक अभिव्यक्ति अन्तर्गत वक्तव्य, संवाद, प्रश्नोत्तर आदि का समावेश होता है, जबकि लिखित अभिव्यक्ति में निबंध लेखन, कहानी लेखन, पत्र-लेखन, रिपोर्टाज आदि समाविष्ट हैं। अभिव्यक्ति जीवन का अविभाज्य अंग है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपनी संवेदना, विचार या स्थिति को अभिव्यक्त कर सकता है। अतएव भाषा के उपादानों का सार्थक प्रयोग कर पाना अनिवार्य है।

- **सर्जनात्मकता :**

सर्जनात्मकता का अर्थ है - परंपरागत अभिव्यक्ति प्रणाली को त्यागकर अपनी मौलिक अभिव्यक्ति प्रणाली को प्रतिष्ठित करना। भाषा शिक्षण का जहाँ तक सम्बन्ध है वहाँ भाषा के नावीन्यपूर्ण और कलात्मक प्रयोग के द्वारा अपने भावों की मौलिक अभिव्यक्ति 'सर्जनात्मकता' है। इस उद्देश्य के विकसित होने पर व्यक्ति भाषा की वैविध्यपूर्ण विधाओं में अपने भावों और विचारों को चिरस्थायी बना सकता है और अपने जीवन को भी उन्नत बना सकता है। साथ ही भाषा का भी विकास एवं सर्जन होता है।

- **व्यावहारिक उपयोजन :**

अनुभूति, अर्जित माहिती और ज्ञान, समझ का व्यवहार में प्रयोग 'व्यावहारिक उपयोजन' है। भाषा को सही ढंग और प्रभावी रूप से रोजमर्रा के जीवन में उपयोग करना ही भाषा का 'व्यावहारिक उपयोजन' है। छात्र भाषिक तत्त्वों की पहचान और परख द्वारा भाषा को हस्तगत कर अपने विचारों और भावों का उपयोग करें, यही आवश्यक है। भाषा प्रकृति: संप्रेषण का माध्यम है। संप्रेषण के लिए अनिवार्य है - भाषा का सार्थक उपयोग। भाषा अलंकार की सामग्री नहीं है, भाषा व्यवहार की सामग्री है। अतः भाषा में व्यावहारिक उपयोग का महत्त्व है।

- **तार्किक चिंतन :**

किसी भी विषय के संबंध में तर्कपूर्ण सोचना या चिंतन करना, मनन करते हुए अपनी बात को प्रकट करना 'तार्किक चिंतन' कहलाता है। यह किसी भी व्यक्ति की सोच - विचार करने की मानसिक प्रक्रिया है। जो वैज्ञानिक अभिगम आधारित है।

तार्किक चिंतन - यह मुक्त चिंतन है। तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उत्तरनेवाली किसी भी प्रस्तुति का तार्किक चिंतन

करनेवाले स्वीकार नहीं करते हैं। तार्किक चिंतन के उपकरणों में पृथक्करण, संश्लेषण, तुलना, साम्य-वैषम्य तथा प्रमाण को लिया जा सकता है। जब अध्येता किसी भी प्रस्तुति का इनमें से किसी उपकरण का प्रयोग कर मूल्यांकन करता है तब तार्किक चिंतन होता है।

अनुभव अभिव्यक्ति का रूप तब धारण करता है, जब व्यक्ति ने अनुभव को तार्किक रूप से ग्रहण किया हो। अनुभव अनुभूति का रूप तब धारण करता है जब अनुभव के विषय में तार्किक चिंतन हुआ हो। शिक्षा अनुभव प्रदान करती है तथा अध्येता का तार्किक चिंतन अनुभव को अनुभूति में तबदील करता है। इस हेतु भाषा शिक्षा के द्वारा छात्रों की तार्किक चिंतन क्षमता का विकास होना चाहिए।

इतनी जानकारी व समझ प्राप्त करने के पश्चात् कोष्ठक में दिए गये प्रश्नों के विषय में सोचिए।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

1. 'अभ्यासक्रम' किसे कहते हैं ?
2. 'अर्थग्रहण' और 'अभिव्यक्ति' में क्या अंतर है ?
3. 'सर्जनात्मकता' का क्या अर्थ होता है ?
4. 'व्यावहारिक उपयोजन' किसे कहते हैं ?
5. छात्रों की 'तार्किक चिंतन' क्षमता का विकास होना क्यों अनिवार्य है ?

हमने अभ्यासक्रम के बाह्य स्वरूप को समझने के लिए 'भाषा के प्रमुख उद्देश्यों' की समझ प्राप्त की। अब बाह्य स्वरूप के ही अंगभूत घटक-कक्षा-5 से 8 की 'अध्ययन निष्पत्तियों' की जानकारी प्राप्त करेंगे। एक प्रशिक्षणार्थी के रूप में कक्षा -5 से 8 की 'अध्ययन निष्पत्तियों' को पढ़कर समझने की कोशिश कीजिए।

(ii) अध्ययन निष्पत्तियाँ :

अध्ययन निष्पत्तियाँ (कक्षा : 5)

प्रमुख उद्देश्य	अध्ययन निष्पत्ति क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति विधान
1. अर्थग्रहण (श्रवण+वाचन)	1.5.1	परिचित शब्द, सरल वाक्य, बातचीत, संवाद सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे।
	1.5.2	गीत, सरल कविता, पहेलियाँ, परिचित बालकहानी और चुटकुले सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे।
	1.5.3	परिचित परिस्थितियों में सामान्य सूचनाओं को सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे।
	1.5.4	'क्या', 'कौन', 'क्यों', 'कब' और 'कैसे' वाले प्रश्नों को सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे।
	1.5.5	२१ से ५० तक की गिनती सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे।
	1.5.6	शब्दकोश के क्रम के बारे में जान सकेंगे।
2. अभिव्यक्ति (कथन+लेखन)	2.5.1	संयुक्ताक्षर, शब्द एवं वाक्यों का शुद्ध रूप से उच्चारण और लेखन कर सकेंगे।
	2.5.2	परिचित विषय के बारे में साहजिक रूप से बोल सकेंगे।
	2.5.3	परिचित विषय पर साहजिक रूप से लिख सकेंगे।
	2.5.4	व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में काव्यगान कर सकेंगे।
	2.5.5	सरल प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।
	2.5.6	शब्दों और अंकों में २१ से ५० तक की गिनती का उच्चारण एवं लेखन कर सकेंगे।

प्रमुख उद्देश्य	अध्ययन निष्पत्ति क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति विधान
3. सर्जनात्मकता	3.5.1 3.5.2 3.5.3	चित्र के स्थानीय परिवेश में पाई जानवेवाली चीजों (सब्जी, फल, अनाज, यातायात के साधन, रसोईघर, पेड़-पौधे) की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। छपी हुई सामग्री (जैसे-रेपर्स, अखबार, सामयिक) आदि पढ़कर समझ सकेंगे। चित्र के आधार पर लेखन कर सकेंगे।
4. व्यावहारिक उपयोग	4.5.1 4.5.2 4.5.3 4.5.4 4.5.5 4.5.6	सरल शब्द एवं समानार्थी, विरुद्धार्थी शब्दों का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। लिंग और वचन को समझकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। संज्ञा, विशेषण और क्रिया को पहचान सकेंगे। विशेषण और क्रिया का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। मुहावरों का अर्थ समझकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। सरल वाक्यों का मातृभाषा में अनुवाद कर सकेंगे।
5. तार्किक चिंतन	5.5.1 5.5.2 5.5.3 5.5.4 5.5.5 5.5.6 5.5.7 5.5.8 5.5.9	दृश्य या घटना को देखकर वर्णन कर सकेंगे। चित्र के आधार पर कहानी का कथन कर सकेंगे। अधूरे वाक्य पूर्ण कर सकेंगे। दी गई परिस्थिति के बारे में सोचकर अपनी राय दे सकेंगे। चित्र का अवलोकन करके भेद ढूँढ़ सकेंगे। एक वाक्य को अलग अलग तरीकों से अभिव्यक्त कर सकेंगे। संकेत में कही हुई बात को समझकर विवरण दे सकेंगे। छात्र में श्रव्य या वाच्य सामग्री से अंतर्निहित मूल्य (जैसे-अनुशासन, ईमानदारी, आज्ञापालन, पर्यावरण संवर्धन, राष्ट्रप्रेम) विकसित कर सकेंगे। छात्र में निर्णयशक्ति, स्वजागृति, प्रभावी संप्रेषण जैसे जीवन कौशल विकसित कर सकेंगे।

अध्ययन निष्पत्तियाँ (कक्षा : 6)

प्रमुख उद्देश्य	अध्ययन निष्पत्ति क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति विधान
1. अर्थग्रहण (श्रवण+वाचन)	1.6.1 1.6.2 1.6.3 1.6.4 1.6.5 1.6.6 1.6.7 1.6.8	परिचित शब्द, वाक्य और सरल बातचीत सुनकर एवं पढ़कर समझ सकेंगे। वाक्य में प्रयुक्त संयुक्ताक्षरवाले शब्दों को समझ सकेंगे। परिचित गीत, कविता, पहेलियाँ सुनकर एवं पढ़कर समझ सकेंगे। बालकहानी, चुटकुले, एकांकी और पत्र सुनकर एवं पढ़कर समझ सकेंगे। 'कौन' कारक के रूपोंवाले प्रश्नों को सुनकर एवं पढ़कर समझ सकेंगे। छपी हुई सामग्री पढ़कर समझ सकेंगे। तकनीकी साधनों के माध्यम से सुनी हुई एवं पढ़ी हुई बातों को समझ सकेंगे। सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्ययुक्त परिच्छेद को पढ़कर समझ सकेंगे।

प्रमुख उद्देश्य	अध्ययन निष्पत्ति क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति विधान
2. अभिव्यक्ति (कथन+लेखन)	2.6.1 2.6.2 2.6.3 2.6.4 2.6.5 2.6.6 2.6.7 2.6.8	सरल एवं संयुक्त वाक्य का शुद्ध रूप से उच्चारण एवं लेखन कर सकेंगे। चित्र के आधार पर कहानी का वर्णन एवं लेखन कर सकेंगे। परिचित विषय पर अपने विचार लिखित एवं मौखिक रूप से व्यक्त कर सकेंगे। कविता का आरोह-अवरोहयुक्त सामूहिक एवं व्यक्तिगत गान कर सकेंगे। 'कौन' कारक के रूपोंवाले प्रश्नों के उत्तर मौखिक और लिखित रूप से व्यक्त कर सकेंगे। परिस्थिति अनुसार सरल भाषा में चिट्ठी लिख सकेंगे। विरामचिह्न का योग्य स्थान पर प्रयोग कर सकेंगे। शब्दों और अंकों में 51 से 100 तक की गिनती का उच्चारण एवं लेखन कर सकेंगे।
3. सर्जनात्मकता	3.6.1 3.6.2 3.6.3 3.6.4 3.6.5 3.6.6	वर्णों पर से शब्दों की रचना कर सकेंगे। शब्द पर से वाक्य बना सकेंगे। समान प्राप्तवाले शब्द बना सकेंगे। चित्र के आधार पर 8-10 वाक्य बोलेंगे एवं लिख सकेंगे। घटना का वर्णन कर सकेंगे। वाक्यों को सही क्रम में रखकर कहानी बना सकेंगे।
4. व्यावहारिक उपयोग	4.6.1 4.6.2 4.6.3 4.6.4 4.6.5 4.6.6 4.6.7 4.6.8 4.6.9 4.6.10	समानार्थी शब्द, विरुद्धार्थी शब्दों का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। कहावतों का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे। लिंगभेद को समझकर उसका वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। वचन परिवर्तन करके उसका वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण को समझकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। क्रिया को समझकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। वाक्य, परिच्छेद का मातृभाषा में अनुवाद कर सकेंगे। शब्दकोश का उपयोग कर सकेंगे। रोजमर्रा के व्यवहार की शब्दावलि समझ सकेंगे।
5. तार्किक चिंतन	5.6.1 5.6.2 5.6.3 5.6.4 5.6.5 5.6.6	संकेतों का अर्थघटन कर सकेंगे। यूथचर्चा में अपने भावों एवं विचारों को मुक्त रूप से व्यक्त कर सकेंगे। चित्र देखकर या विवरण पढ़कर अनुमान लगा सकेंगे। काव्यपंक्तियों को पढ़कर उनमें निहित भावों और विचारों को व्यक्त कर सकेंगे। छात्र में श्रव्य या वाच्य सामग्री में से अंतर्निहित मूल्य (जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कर्तव्यपालन, परोपकार, कृतज्ञता, निडरता, सच्चाई) विकसित हो सकेंगे। छात्र में संप्रेषण और समस्या समाधान जैसे कौशल विकसित हो सकेंगे।

अध्ययन निष्पत्तियाँ (कक्षा : 7)

प्रमुख उद्देश्य	अध्ययन निष्पत्ति क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति विधान
1. अर्थग्रहण (श्रवण+वाचन)	1.7.1 1.7.2 1.7.3 1.7.4 1.7.5 1.7.6 1.7.7 1.7.8	अपरिचित शब्द, वाक्य, सरल बातचीत और संवाद सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे। कहानियाँ, चुटकुले, एकांकी, पत्र और सरल वर्णन सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे। गीत, कविता, पहेलियाँ और दोहे सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे। छपी हुई और हस्तलिखित पाठ्यसामग्री पढ़कर समझ सकेंगे। बालसाहित्य को पढ़कर उसके भावार्थ को समझ सकेंगे। तकनीकी साधनों के माध्यम से सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे। 'क्या', 'कौन', 'कब', 'कहाँ', 'क्यों', और 'कैसे' वाले प्रश्नों को सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे। परिच्छेद को पढ़कर समझ सकेंगे।
2. अभिव्यक्ति (कथन+लेखन)	2.7.1 2.7.2 2.7.3 2.7.4 2.7.5 2.7.6 2.7.7 2.7.8	परिच्छेद का शुद्ध रूप से पठन एवं लेखन कर सकेंगे। ढाँचे पर से कहानी का कथन एवं लेखन कर सकेंगे। आरोह-अवरोहयुक्त व्यक्तिगत और सामूहिक गान कर सकेंगे। 'क्या', 'कौन', 'कब', 'कहाँ', 'क्यों', और 'कैसे' वाले प्रश्नों के उत्तर मौखिक एवं लिखित रूप से दे सकेंगे। शुद्ध उच्चारण के साथ बातचीत कर सकेंगे। किसी भी विषय पर पत्र लिख सकेंगे। कोई घटना, प्रसंग, संवाद, और चुटकुले, कहानी को मौलिक भाषा में अभिव्यक्त कर सकेंगे। योग्य स्थान पर विरामचिह्न का प्रयोग कर सकेंगे।
3. सर्जनात्मकता	3.7.1 3.7.2 3.7.3	शब्दों को उचित क्रम में रखकर अर्थपूर्ण वाक्य बना सकेंगे। पहेलियाँ और चुटकुलों का निर्माण कर सकेंगे। कहानी का विकास और विस्तार कर सकेंगे।
4. व्यावहारिक उपयोग	4.7.1 4.7.2 4.7.3 4.7.4 4.7.5 4.7.6 4.7.7 4.7.8 4.7.9 4.7.10 4.7.11	समानार्थी शब्द, विरुद्धार्थी शब्द, मुहावरों और कहावतों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। शब्द के लिंग परिवर्तन को जानकर उसका व्यवहार में प्रयोग कर सकेंगे। शब्द के वचन परिवर्तन को जानकर उसका व्यवहार में प्रयोग कर सकेंगे। संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण के प्रकार को समझ सकेंगे। क्रिया के काल को जानकर उसका प्रयोग कर सकेंगे। परिच्छेद का मातृभाषा में अनुवाद कर सकेंगे। शब्दकोश का उपयोग कर सकेंगे। भाषा की शाब्दिक और वाक्य संबंधी खूबियों को जानकर उसका उचित प्रयोग कर सकेंगे। समय सारिणी (पाठशाला, बस अड्डा और रेल अड्डा तथा प्रसार माध्यमों के कार्यक्रमों) का उपयोग कर सकेंगे। राशन की दुकान का भावपत्रक, होटल का मेनु आदि की सूची का उपयोग कर सकेंगे। रोजमर्रा के व्यवहार की शब्दावली का प्रयोग कर सकेंगे।

प्रमुख उद्देश्य	अध्ययन निष्पत्ति क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति विधान
5. तार्किक चिंतन	5.7.1 5.7.2 5.7.3 5.7.4 5.7.5 5.7.6 5.7.7 5.7.8	काव्यपंक्तियों का भावार्थ बता सकेंगे। कहानी का सारांश बता सकेंगे। वाद-विवाद में हिस्सा ले सकेंगे। किसी विषय या घटना पर अपनी राय दे सकेंगे। किसी मत को कारण सहित स्वीकार या अस्वीकार कर सकेंगे। यूथचर्चा, प्रश्नोत्तर आदि में हिस्सा ले सकेंगे। छात्र में श्रव्य या वाच्य सामग्री में से अंतर्निहित मूल्य (जैसे प्राणीप्रेम, समभाव, राष्ट्रप्रेम, सद्व्यवहार, नियमितता, मातृप्रेम, विनोदप्रियता, बड़ों का आदर) विकसित हो सकेंगे। छात्र में रचनात्मक विचार, आंतर मानवीय व्यवहार, तार्किक चिंतन, विवेचनात्मक सोच, निर्णयशक्ति जैसे कौशल विकसित हो सकेंगे।

अध्ययन निष्पत्तियाँ (कक्षा : 8)

प्रमुख उद्देश्य	अध्ययन निष्पत्ति क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति विधान
1. अर्थग्रहण (श्रवण+वाचन)	1.8.1 1.8.2 1.8.3 1.8.4 1.8.5 1.8.6	परिचित शब्द, वाक्य, बातचीत, संवाद आदि सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे। कहानी, चुटकुले, पत्र, एकांकी, वर्णन आदि सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे। गीत, कविता, दोहे, पहेलियाँ सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे। छपी हुई और हस्तलिखित पाठ्यसामग्री पढ़कर उसके भावार्थ को समझ सकेंगे। तकनीकी साधनों के माध्यम से सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे। 'क्या', 'कौन', 'कब', 'कहाँ', 'क्यों' और 'कैसे' वाले प्रश्नों को सुनकर और पढ़कर समझ सकेंगे।
2. अभिव्यक्ति (कथन+लेखन)	2.8.1 2.8.2 2.8.3 2.8.4 2.8.5 2.8.6 2.8.7 2.8.8	सरल एवं संयुक्त वाक्य और परिच्छेद का शुद्ध रूप से उच्चारण एवं लेखन कर सकेंगे। गीत, कविता, पहेलियाँ और दोहे आरोह-अवरोह के साथ गा सकेंगे। मौखिक एवं लिखित रूप में प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे। शुद्ध उच्चारण के साथ अपनी मौखिक अभिव्यक्ति कर सकेंगे। परिचित विषय पर अपनी मौखिक अभिव्यक्ति कर सकेंगे। आवश्यकतानुसार किसी भी विषय पर पत्र लिख सकेंगे। काव्य और परिच्छेद पढ़कर समीक्षा कर सकेंगे। रूपरेखा के आधार पर कहानी का कथन एवं लेखन कर सकेंगे।
3. सर्जनात्मकता	3.8.1 3.8.2 3.8.3	चित्र का अवलोकन करके कहानी, काव्य आदि मौलिक रूप से लिख सकेंगे। अपूर्ण काव्य एवं कहानी को पूर्ण कर सकेंगे। पहेलियाँ और चुटकुलों का निर्माण कर सकेंगे।

प्रमुख उद्देश्य	अध्ययन निष्पत्ति क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति विधान
4. व्यावहारिक उपयोग	4.8.1 4.8.2 4.8.3 4.8.4 4.8.5 4.8.6 4.8.7 4.8.8 4.8.9	समानार्थी शब्द, विरुद्धार्थी शब्द, मुहावरों, कहावतों का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। लिंग परिवर्तन के नियमानुसार वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। वचन परिवर्तन के नियमानुसार वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। वाक्य में से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के काल को पहचानकर आवश्यकतानुसार उनका उपयोग कर सकेंगे। उपसर्ग एवं प्रत्यय का उपयोग करके नये शब्द की संरचना कर सकेंगे। आवश्यकता अनुसार अव्यय का उपयोग कर सकेंगे। हिन्दी से मातृभाषा में और मातृभाषा से हिन्दी में अनुवाद कर सकेंगे। शब्दकोश का उपयोग कर सकेंगे। प्रशासकीय शब्दावली का प्रयोग कर सकेंगे।
5. तार्किक चिंतन	5.8.1 5.8.2 5.8.3 5.8.4 5.8.5 5.8.6 5.8.7	अपूर्ण कहानी को मौलिक रूप से पूर्ण कर सकेंगे। घटना या प्रसंग के कारणों का अनुमान कर सकेंगे। समूहचर्चा के दौरान किसी मत को कारणसह स्वीकार या अस्वीकार कर सकेंगे। किसी भी विषय पर वादविवाद में हिस्सा ले सकेंगे। श्रव्य या वाच्य सामग्री में से अंतर्निहित मूल्यों को खोज सकेंगे। छात्र में श्रव्य या वाच्य सामग्री में से अंतर्निहित मूल्य (करुणा, बड़ो के प्रति आदर, प्रकृतिप्रेम, वतनप्रेम, विश्वबंधुत्व की भावना) विकसित हो सकेंगे। छात्र में समस्या समाधान, प्रभावी संप्रेषण, विवेचनात्मक सोच, रचनात्मक विचार और भावना पर नियंत्रण जैसे कौशल विकसित हो सकेंगे।

उपर्युक्त निर्देशित अध्ययन निष्पत्तियाँ - कक्षा 5 से 8 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उन अध्ययन निष्पत्तियों को हिन्दी के प्रमुख पाँच उद्देश्यों के अनुसार वर्गीकृत की गयी हैं। ये पाँच उद्देश्य - अर्थग्रहण, अभिव्यक्ति, सर्जनात्मकता, व्यावहारिक उपयोग एवं तार्किक चिंतन हैं।

अतः भाषा शिक्षक अभ्यासक्रम के उस बाह्य स्वरूप में समाविष्ट अध्ययन निष्पत्तियों की प्राप्ति के लिए छात्रों को पर्याप्त शिक्षानुभव प्रदान कर सकता है।

(ब) अभ्यासक्रम का आंतरिक स्वरूप :

अब हम अभ्यासक्रम के आंतरिक स्वरूप को समझेंगे। जैसे शरीर और आत्मा एक होने के बावजूद भी भिन्न रूप से देखे, समझे जाते हैं, उसी प्रकार अभ्यासक्रम के बाह्य स्वरूप और आंतरिक स्वरूप के सम्बन्ध को समझा जा सकता है। अभ्यासक्रम का बाह्य स्वरूप शरीर और आंतरिक स्वरूप उसकी आत्मा है।

कक्षा - 5 से 8 की हिन्दी के अभ्यासक्रम का स्वरूप त्रि-परिमाणी है। ये त्रि-परिमाण इस प्रकार हैं -

- अध्ययन निष्पत्तियों में उत्कृष्ट गुणवत्ता प्राप्त करना।
- अध्ययन निष्पत्तियों की विकासात्मक शृंखला समझना।
- मानवीय मूल्यों को उजागर करना।

इन तीनों परिमाणों के बारे में क्रमशः जानकारी प्राप्त करेंगे -

(i) अध्ययन निष्पत्तियों में उत्कृष्ट गुणवत्ता प्राप्त करना :

अध्ययन निष्पत्ति को अंग्रेजी में Learning Outcome कहते हैं। वह अभ्यासक्रम का अंगभूत घटक है। अध्येता की अध्ययन निष्पत्ति को अभिवृद्ध करना शिक्षक का परम दायित्व है, क्योंकि अध्ययन निष्पत्ति ही सर्वांगीण विकास की नींव है।

अध्ययन निष्पत्ति सम्बन्धित दो शब्दों का सही अर्थबोध करना अनिवार्य है : (1) अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति (Expected Learning Outcome) और (2) वास्तविक अध्ययन निष्पत्ति (Actual Learning Outcome)।

अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति का सरल अर्थ है - अध्ययन दौरान अध्येता की विषयवस्तु की शतप्रतिशत समझ, अध्ययन कौशलों का शतप्रतिशत अर्जन। संक्षेप में विषयवस्तु एवं कौशलों पर संपूर्ण प्रभुत्व प्राप्त करना ही अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति है। अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति एक प्रकार का अन्तिम लक्ष्यांक है, किन्तु यह आदर्श है।

वास्तविक अध्ययन निष्पत्ति का अर्थ यही है-अध्येता ने वास्तव में अध्ययन के दौरान प्राप्त की हुई सिद्धियाँ। दूसरे शब्दों में अध्येता की अध्ययन के दौरान विषयवस्तु समझ की वास्तविक सिद्धि तथा अध्ययन कौशलों की वास्तविक संप्राप्ति। यह निष्पत्ति ही अध्यापक के अध्यापन की प्रभावात्मकता का प्रमाण है। इसे गुणवत्ता स्तर/कक्षा भी कहा जा सकता है।

अध्ययन निष्पत्ति के तीन स्तर स्वीकार किये गए हैं। वे इस प्रकार हैं :

(1) उत्कृष्ट गुणवत्ता : यदि अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति अंक तथा वास्तविक अध्ययन निष्पत्ति अंक में अन्तराल न हो तो उसे उत्कृष्ट गुणवत्ता माना जाएगा। उसे सूत्रात्मक रूप में इस प्रकार कहा जाएगा।

अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति अंक - वास्तविक अध्ययन निष्पत्ति = 0 (शून्य)

(2) मध्यम गुणवत्ता : अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति अंक और वास्तविक अध्ययन निष्पत्ति अंक के बीच का अंतराल कम हो तो उसे मध्यम गुणवत्ता कहा जाता है।

(3) कनिष्ठ गुणवत्ता : अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति अंक और वास्तविक अध्ययन निष्पत्ति अंक के बीच का अंतराल अधिक हो तो उसे कनिष्ठ गुणवत्ता कहा जाता है।

हमें उत्कृष्ट गुणवत्ता प्राप्त करनी है। यह हमारा अपेक्षित लक्ष्य है। अतः आज संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया (अधिगम प्रणाली) अध्ययन निष्पत्तियों को केन्द्र में रखकर अपनी योजनाएँ तैयार कर रही है तब अध्ययन निष्पत्तियों में अध्येता कैसे उत्कृष्ट गुणवत्ता प्राप्त कर सके तत् विषय में सोचना होगा।

उत्कृष्ट गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए अध्ययन निष्पत्ति को समझना, अध्ययन निष्पत्ति विषयक अध्ययन अनुभव प्रदान करना एवं अध्ययन निष्पत्ति विषयक मूल्यांकन करना - ज़रूरी है। आइए इन सोपानों को क्रमशः समझते हैं -

• अध्ययन निष्पत्ति को समझना :

- हर एक अध्ययन निष्पत्ति की एक निश्चित सीमा होती है। जैसे 'छात्र वर्णों का शुद्ध उच्चारण एवं लेखन कर सकेंगे।' इस अध्ययन निष्पत्ति में छात्र वर्णों का ही शुद्ध उच्चारण एवं लेखन कर सके इतनी ही अपेक्षा रखी गई है, वाक्य का उच्चारण एवं लेखन की अपेक्षा नहीं है।

- हर एक अध्ययन निष्पत्ति में दो बातें समाविष्ट होती हैं - (1) विषयवस्तु (content) एवं (2) निष्पत्ति या फलश्रुति (outcomes)। जैसे 'वर्णों का शुद्ध उच्चारण एवं लेखन कर सकेंगे।' इस अध्ययन निष्पत्ति में वर्ण (हिन्दी में प्रयुक्त किये जाते सभी वर्ण) 'विषयवस्तु' के रूप में हैं, जबकि उन वर्णों का शुद्ध उच्चारण एवं लेखन कर सकेंगे 'निष्पत्ति' के रूप में हैं।

- **अध्ययन निष्पत्ति विषयक अध्ययन अनुभव प्रदान करना :**

इस सोपान को हम शिक्षण प्रक्रिया कहेंगे। शिक्षण प्रक्रिया में अनुभव किस तरह प्रदान करेंगे, कौन-कौन सी पद्धति-प्रयुक्ति का उपयोग करेंगे, कौन - कौन सी शैक्षिक सामग्री या संदर्भस्रोत का उपयोग करेंगे, कक्षाकक्ष में अध्ययन-अध्यापन दौरान एक शिक्षक के रूप में कौन-सी बातें ध्यान में रखनी आवश्यक हैं - इन सभी मुद्दों को मद्देनजर रखकर शिक्षक अनुभव प्रदान करते हैं। इन सारे मुद्दों के संदर्भ में विवरण प्रस्तुत है -

- हर एक इकाई में समाविष्ट अध्ययन निष्पत्तियों को मद्देनजर रखकर विषयवस्तु का चयन करना। जैसे कि - छात्र शब्दकोश का उपयोग कर सकेंगे - अध्ययन निष्पत्ति है। इस अध्ययन निष्पत्ति में 'शब्दकोश' कथावस्तु है और 'उपयोग कर सकेंगे' निष्पत्ति है। अतः 'शब्दकोश' विषयवस्तु में वर्णमाला क्रम, शब्दकोश क्रम, संयुक्ताक्षर, संक्षेपसूचि (जैसे- अ.=अव्यय, सं.=संज्ञा, क्रि.=क्रिया वगैरह) का समावेश होता है।
- शिक्षक के रूप में विषयवस्तु में समाविष्ट मुद्दों के संदर्भ में अनुभव प्रदान करना चाहिए। ताकि अपेक्षा स्तर की निष्पत्ति प्राप्त हो सके।
- शिक्षण प्रणाली की एक विधि है - 'प्रवृत्ति के द्वारा शिक्षा'। इस विधि में अनुभव (Experience), चिंतन (Reflection) उपयोजन (Application) और निष्कर्ष (consolidation) सोपान समाविष्ट हैं। इन सोपानों के संदर्भ में क्रमशः अनुभव प्रदान करना चाहिए।
- छात्र खुलकर अपने विचार पेश कर सके, छात्र - छात्र के बीच चर्चा हो सके, छात्रों को सोचने का अवसर मिले और खुद संदर्भस्रोत का उपयोग करके स्व-अध्ययन भी कर सके ऐसे ज्यादातर अवसर देने चाहिए।
- अध्यापन प्रक्रिया दौरान शिक्षक हिन्दी भाषा में ही व्यवहार करें एवं छात्र भी हिन्दी में ही अपने विचार प्रकट करें ऐसा करना अनिवार्य है।
- असरकारक शिक्षण प्रणाली के लिए उचित दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग करना चाहिए।
- वाद-विवाद, नाट्यीकरण, प्रकल्प (Project), रोल-प्ले, संवाद जैसे शिक्षण के प्रमुख तरीके एवं प्रश्नमंच, चित्रवर्णन, प्रसंगवर्णन, अंताक्षरी, समूहचर्चा जैसी गतिविधियों का उपयोग करके अनुभव प्रदान करना जरूरी है।
- शिक्षाकार्य दौरान अन्य विषयों के साथ भी अनुबंध कर अनुभव प्रदान करें।
- अतः किसी भी अध्ययन निष्पत्ति में छात्र उत्कृष्ट सिद्धि प्राप्त करें इसके लिए हमें प्रयत्न करने चाहिए।

- **अध्ययन निष्पत्ति विषयक मूल्यांकन करना :**

- सतत एवं सर्वग्राही मूल्यांकन में छात्रों की प्रगति को जाँचने के साथ-साथ छात्र की प्रगति में आनेवाले अवरोधों को जानकर उसे विभिन्न तरीकों से सीमित करके प्रगति की ओर अग्रसर करने का है।
- मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षा के अनुभव दौरान, विभिन्न प्रवृत्तियों में छात्रों की सक्रियता को जाँचकर, छात्रों ने किये हुए कार्यों को जाँचकर, विषयवस्तु के संदर्भ में कसौटियाँ लेकर हो सकती है।
- निर्धारित अध्ययन उपलब्धि के संदर्भ में सतत आकलन करके सीखनेवाले एवं न सीखनेवाले बच्चों के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। जैसे कि, विफल के लिए (x), अंशतः सफल के लिए (?) और सफल के लिए (✓) का चिह्न निर्धारित रिकार्ड में करना चाहिए।
- तार्किक चिंतन, सर्जनात्मकता एवं व्यावहारिक उपयोजन उद्देश्यों आधारित अध्ययन निष्पत्तियों के आकलन हेतु शिक्षक छात्रों के लिखित कार्यों की जाँच करता है। इस हेतु भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का निर्माण करेगा। तथा तदनुसार अध्येताओं की प्रतिक्रियाएँ एकत्र कर उनका परीक्षण करेगा। तत्पश्चात् विभिन्न प्रवृत्ति के आकलन के आधार पर हेतु

सिद्धि का अन्तिम निर्णय कर सकता है।

- मूल्यांकन का एकमात्र उद्देश्य अध्ययन निष्पत्ति में सिद्धि प्राप्त करना ही नहीं, अपितु कम सिद्धि प्राप्त करनेवाले उनके भाषा कौशलों को प्रगति की ओर अग्रसर करने के लिए सुधारात्मक कदम उठाने का है।
- हमारा लक्ष्य है - “Low Achieving learners are converted into high achieving learners” अर्थात् निम्न सिद्धि प्राप्त करनेवाले छात्रों को विशेष अनुभव प्रदान करके उच्च सिद्धि तक पहुँचाना है।

अतः इन सारी प्रक्रिया के फलस्वरूप अध्ययन निष्पत्तियों में पारंगतता (प्रभुत्व) प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए हमें प्रयास करने चाहिए।

आईए, इस बात को हम एक उदाहरण से समझते हैं -

□ उदाहरण :

- **अध्ययन निष्पत्ति :** छात्र संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का शुद्ध रूप से उच्चारण कर सकेंगे।

उपर्युक्त निर्देशित अध्ययन निष्पत्ति में ‘संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द’ विषयवस्तु के रूप में हैं और उनका ‘शुद्ध रूप से उच्चारण कर सकेंगे’ फलश्रुति के रूप में है।

इस अध्ययन निष्पत्ति के संदर्भ में अनुभव प्रदान करने से पहले अध्ययन निष्पत्ति को ठीक रूप से समझना अनिवार्य है। बाद में अध्ययन अनुभव प्रदान करने चाहिए।

- **स्पष्टीकरण :**

दो या दो से अधिक व्यंजन - ध्वनियाँ परस्पर संयुक्त होकर जब एक स्वर के सहारे बोली जाएँ तो संयुक्त ध्वनियाँ कहलाती हैं; जैसे-प्रारब्ध, प्राण, प्रकोप इत्यादि।

संयुक्त ध्वनियों के उच्चारण में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इनमें पूर्वापर सम्बन्ध अधिक स्पष्ट रहता है। ऐसी अवस्था में उच्चारण का तरीका यह होना चाहिए कि पहली ध्वनि का उच्चारण प्रारम्भ करते समय ही दूसरी ध्वनि के लिए भी तत्सम्बद्ध अवयव को तैयार रखें, ताकि दोनों का उच्चारण पूर्वापर सम्बन्ध सहित एक साथ हो जाय; जैसे - ‘प्राण’ में ‘प्र’ के उच्चारण के लिए जब ओठ ‘पू’ के लिए मिले, उसी समय ‘र’ उच्चार करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए, ताकि दोनों का उच्चारण एक साथ हो। एक-एक संयुक्त ध्वनि का इसी प्रकार अभ्यास करने से उच्चारण ठीक हो सकता है। ऐसा न होने के कारण ही लोग ‘स्नान’ का अशुद्ध उच्चारण ‘अस्नान’ या ‘सनान’ और ‘स्कूल’ का ‘इस्कूल’ या ‘सकूल’ कर बैठते हैं।

- **अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया :**

- जिन वर्णों के मेल से संयुक्ताक्षर बने हैं, उनसे छात्रों को अवगत कीजिए। **जैसे:**

क्+ष=क्ष	ट्+र=ट्र	ह्+य=ह्य
श्+र=श्र	द्+व=द्व	ह्+ऋ=ह्र
ज्+ञ=ज्ञ	द्+ध=द्ध	श्+च=श्च
त्+र=त्र	द्+घ=द्व	द्+य=द्य
क्+र=क्र	द्+द=द्व	प्+र=प्र
द्+म=द्व	द्+ग=द्व	स्+र=स्त्र

- संयुक्ताक्षरों से बने शब्दों का बार बार शुद्ध उच्चारण करवाइए।

जैसे :

- ☆ क्षमा, श्रवण, ज्ञान, त्रिशूल, क्रम, ट्रेन, द्वार, उद्धार, रदी, पद्म, असह्य, हृदय, निश्चय, पद्य, मर्म, प्रणाम, सहस्र, उद्धार
- ☆ संयुक्ताक्षरों वाले शब्दों के फ्लेश-कार्ड बनाकर छात्रों को दिखाएँ, उच्चारण करवाइए।
- ☆ संयुक्ताक्षर खोजने की प्रवृत्ति करवाइए।
- ☆ वाक्य में प्रयुक्त संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का पठन अभ्यास करवाइए।

• मूल्यांकन :

शिक्षक निम्नांकित प्रक्रिया के जरिए मूल्यांकन कर सकता है।

- जिन वर्णों के मेल से संयुक्ताक्षर बने हैं, उन वर्णों के फ्लेशकार्ड के जरिए मौखिक उच्चारण करवाइए।
- वर्ण के फ्लेशकार्ड ढूँढ़वाकर।
- संयुक्ताक्षरों से बने शब्दों का पठन करवाकर।
- वाक्य में प्रयुक्त संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों को ढूँढ़वाकर उन शब्दों का पठन करवाइए।
- संयुक्ताक्षरवाला वर्ण देकर उनके आधार शब्द निर्माण करवाना।
- यह भी न भूलें कि शिक्षणप्रक्रिया जारी हो तब भी शिक्षक सतत आकलन करके न सीखनेवाले बच्चों को जाँचकर पुनः अनुभव दे सकता है।

हमने अध्ययन निष्पत्तियों में उत्कृष्ट गुणवत्ता प्राप्त करने की प्रक्रिया समझने का प्रयत्न किया।

अब कोष्ठक में दिए गए सवालों का उत्तर दीजिए।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

6. 'अध्ययन निष्पत्ति' क्या है ?
7. 'पहेलियाँ और चुटकुलों का निर्माण कर सकेंगे।' इस अध्ययन निष्पत्ति में 'विषयवस्तु' और 'फलश्रुति' के रूप में क्या है ?
8. 'छात्र शब्दकोश का उपयोग कर सकेंगे।' इस अध्ययन निष्पत्ति का मूल्यांकन आप कैसे करेंगे ?

(ii) अध्ययन निष्पत्तियों की विकासात्मक शृंखला :

अभ्यासक्रम के आंतरिक स्वरूप का दूसरा परिमाण है - 'अध्ययन निष्पत्तियों की विकासात्मक शृंखला।' यह अभ्यासक्रम के आंतरिक स्वरूप की मजबूत कड़ी है। शिक्षा छात्र के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन को लक्ष्य करती है, किन्तु यह परिवर्तन कोई आकस्मिक (अप्रत्याशित) घटना नहीं है, बल्कि अनेक छोटे-मोटे प्रयत्नों का परिणाम होता है। यह परिणाम तभी प्राप्त होता है, जब अभ्यासक्रम में गुम्फित हर एक अध्ययन निष्पत्ति सुगुंथित, अखंड शृंखला का रूप धारण करती है।

प्रस्तुत बाह्य स्वरूप में निर्देशित अध्ययन निष्पत्तियों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि अध्ययन निष्पत्तियों का विकास अखंड शृंखला के रूप में है, इस तथ्य को समझने के लिए उदाहरण प्रस्तुत है -

उदाहरण : 1

- 3.6.1 वर्णों पर से शब्दों की रचना कर सकेंगे।
- 3.6.2 शब्द पर से वाक्य बना सकेंगे।
- 3.6.3 समान प्रासवाले शब्द बना सकेंगे।
- 3.6.4 चित्र के आधार पर 8-10 वाक्य बोलेंगे एवं लिख सकेंगे।
- 3.6.5 घटना का वर्णन कर सकेंगे।

निर्देशित अध्ययन निष्पत्तियों में सर्जनात्मकता के विकास में सब से पहले वर्णों पर से शब्दों की रचना कर सके, तत्पश्चात् शब्द पर से वाक्य बना सके, समान प्रासवाले शब्द बना सके आदि से विकसित होकर चित्र के आधार पर 8-10 वाक्य बोलेंगे एवं लिख सकेंगे तथा घटना का वर्णन कर सकेंगे - की अपेक्षा रखी है। ये अध्ययन निष्पत्तियाँ एक ही कक्षा के एक ही उद्देश्य में क्रमिक रूप से विकसित होती दर्शाई गई हैं।

उदाहरण : 2

- 2.5.1 संयुक्ताक्षर, शब्द एवं वाक्यों का शुद्ध रूप से उच्चारण एवं लेखन कर सकेंगे।
- 2.6.1 सरल एवं संयुक्त वाक्यों का शुद्ध रूप से उच्चारण एवं लेखन कर सकेंगे।

निर्देशित अध्ययन निष्पत्तियों में कक्षा-5 में संयुक्ताक्षर, शब्द एवं वाक्यों का शुद्ध रूप से उच्चारण एवं लेखन की अपेक्षा है, जबकि कक्षा-6 में सरल एवं संयुक्त वाक्य का शुद्ध रूप से उच्चारण एवं लेखन कर सकने की अपेक्षा रखी गई है। यहाँ कक्षा-5 और 6 में विकास की बात क्रमिक रूप से विकसित दर्शायी गई है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि अध्ययन के संदर्भ में विकासात्मक आवर्तन अर्थात्-किसी एक कक्षा में कोई एक अध्ययन उद्देश्य में अध्ययन निष्पत्तियों का क्रमिक रूप से विकास या किसी कक्षा में अध्ययन निष्पत्ति की स्थिति से उसके बाद की कक्षा में वही अध्ययन निष्पत्ति के संदर्भ में विकास की बात में क्रमिक विकास का समावेश होता है। इसे विकासात्मक आवर्तन कहते हैं।

कक्षा - 5 से 8 के हिन्दी अभ्यासक्रम को आप देखेंगे तो प्रत्येक प्रमुख उद्देश्य अन्तर्गत समाविष्ट अध्ययन निष्पत्तियाँ विकासात्मक शृंखला में दृष्टिगोचर होती हैं। इसके लिए अध्यापक के रूप में इस क्रमिक विकास को मद्देनजर रखकर ही अध्यापन कार्य करना होगा।

(iii) मानवीय मूल्यों को उजागर करना :

शिक्षण का मूल उद्देश्य जीवन को बेहतर और उन्नत बनाने का है। व्यक्ति का जीवन बेहतर होगा तो समाज जीवन बेहतर होगा। यदि समाज जीवन बेहतर होगा तो राष्ट्रीय जीवन भी बेहतर होगा। इसलिए पाठ्यक्रम ऐसा होना आवश्यक है - जो मानवीय मूल्यों को अध्येता के जीवन व्यवहारों में मार्गदर्शन कर सके। पाठ्यक्रम में गुम्फित विषयवस्तु के जरिए भाषा कौशल विकास के साथ-साथ मानवीय मूल्यों को उजागर करने का लक्ष्य भी है। अध्यापन दौरान इकाई के संदर्भ में मानवीय मूल्यों को उजागर करने के लिए अध्यापक को सबसे पहले मूल्यों को ढूँढ़ना चाहिए। मूल्यों को ढूँढ़ निकालने के लिए अध्यापक को निर्धारित इकाई को भली-भाँति समझना होगा। इकाई को भली - भाँति समझने का अर्थ है :

- इकाई की विषयवस्तु से परिचित होना।
- विषयवस्तु में प्रस्तुत घटनाक्रम को समझना।
- घटना के पीछे रहे कार्यकारण संबंधों को समझना।

- मुख्यपात्र की विशेषताएँ अलग करना।
- संवादों को समझकर उनमें रहे मनोभावों को समझना।
- विषयवस्तु की मुख्य धारा को समझना।
- रचना के द्वारा अध्ययन निष्पत्ति का अध्यापन कैसे होगा, यह समझना।

इस तरह इकाई को भली-भाँति समझने से इकाई में निहित मूल्यों की हमें जानकारी हो सकती है। अध्यापक के रूप में हमें जानकारी मिलने से इकाई में निहित मूल्यों को अध्यापन के समय अध्येता को भी इसकी ओर उन्मुख कर सकते हैं।

कक्षा-5 से 8 की हर एक इकाई में निहित मूल्यों की सूची 'शिक्षक संदर्शिका' में इकाई के प्रारंभ में 'जीवन मूल्य' शीर्षक अंतर्गत दी गई है। जिससे शिक्षक के रूप में हमें इकाई में निहित मूल्यों की जानकारी मिल सकती है।

जैसे :

☐ कक्षा-6

- **दयालु शिकारी** : मानवता, दया, करुणा, प्राणीप्रेम
- **सुबह** : साहस, निडरता, परिश्रम
- **राजा का हिस्सा** : परिश्रम, प्रेम, परोपकार, सच्चाई, सहानुभूति, सद्व्यवहार, प्रामाणिकता

☐ कक्षा : 7

- **कुत्ते की वफादारी** : प्राणीप्रेम, वफादारी, प्रतिज्ञा-पालन
- **दोहा अष्टक** : परोपकार, सद्व्यवहार, प्रेम, नम्रता, विवेक
- **हिन्द देश के निवासी** : प्रकृतिप्रेम, राष्ट्रीय एकता, समानता, विविध धर्मों के प्रति आदर भाव, बिनसांप्रदायिकता

☐ कक्षा - 8

- **ईदगाह** : त्याग, बड़ों के प्रति आदर
- **अंतरिक्ष परी सुनिता विलियम्स** : साहसिकता, राष्ट्रप्रेम, कर्मठता
- **माँ ! कह एक कहानी** : मातृप्रेम, न्यायप्रियता, पक्षीप्रेम, करुणा, कर्तव्यनिष्ठा

अतः यह स्पष्ट है कि शिक्षक जब भाषा शिक्षा का कार्य करे उसी वक्त अध्येता को मूल्याभिमुख करना न भूले। निष्कर्ष रूप से वर्तमान अभ्यासक्रम मानवीय मूल्यों को उजागर करने का दर्पण है।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

9. 'विकासात्मक आवर्तन' क्या है ?
10. इकाई में निहित मूल्यों को कैसे ढूँढ़ सकते हैं ?

1.4 इकाई का सारांश :

इस इकाई में हम समझ सके कि - सर्वांगी विकास के लिए शिक्षा में अभ्यासक्रम का महत्वपूर्ण स्थान है। अभ्यासक्रम एक व्यापक और दीर्घसूत्री संकल्पना है। अभ्यासक्रम कक्षाध्यापन के लिए कक्षाव्यवहार में प्रयोजित होता है तब वह पाठ्यक्रम का रूप धारण करता है।

अभ्यासक्रम का स्वरूप समझने के प्रमुख दो आधार हैं - (1) अभ्यासक्रम का बाह्य स्वरूप और (2) अभ्यासक्रम का आंतरिक स्वरूप। अभ्यासक्रम के बाह्य स्वरूप में भाषा के प्रमुख उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियों का समावेश होता है, जबकि अभ्यासक्रम का आंतरिक स्वरूप त्रि-परिमाणधारी है। आंतरिक स्वरूप त्रि-परिमाणों में अध्ययन निष्पत्तियों में उत्कृष्ट गुणवत्ता प्राप्त करना, अध्ययन निष्पत्तियों की विकासात्मक शृंखला एवं मानवीय मूल्यों को उजागर करना समाविष्ट है। अभ्यासक्रम के इन दोनों स्वरूपों का संबंध शरीर और आत्मा जैसा है।

1.5 समझ जाँचनेवाले प्रश्न :

प्रश्न -1 एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. हिन्दी को राजभाषा के रूप में कब घोषित किया गया ?
2. अभ्यासक्रम क्या निर्धारित करता है ?
3. अभ्यासक्रम का स्वरूप समझने के प्रमुख दो आधार लिखिए।
4. अभ्यासक्रम के बाह्य और आंतरिक स्वरूप का संबंध कैसा है ?

प्रश्न-2 संक्षेप में उत्तर दीजिए।

1. हिन्दी भाषा की प्रमुख पाँच विशेषताएँ लिखिए।
2. अभ्यासक्रम का अर्थ लिखिए।
3. हिन्दी भाषा के प्रमुख उद्देश्य कौन-कौन से हैं ?
4. टिप्पणी लिखिए : तार्किक चिंतन
5. 'अध्ययन निष्पत्ति को समझना' का मतलब क्या है ?
6. विकासात्मक आवर्तन का उदाहरण दीजिए।
7. कक्षा : 5 की किन्हीं दो इकाइयों में समाविष्ट मूल्यों का निर्देश कीजिए।

प्रश्न : 3 विधान समझाइए।

1. भाषा के कौशलों का विकास होता है तब अभ्यासक्रम सर्वग्राही स्वरूप को प्राप्त करता है।
2. अध्ययन निष्पत्तियों की विकासात्मक शृंखला अभ्यासक्रम के आंतरिक स्वरूप की मजबूत कड़ी है।
3. अभ्यासक्रम के बाह्य और आंतरिक स्वरूप का संबंध शरीर और आत्मा जैसा है।
4. वर्तमान अभ्यासक्रम मानवीय मूल्यों को उजागर करने का दर्पण है।

प्रश्न - 4 सविस्तार उत्तर दीजिए।

1. भाषा के प्रमुख उद्देश्य समझाइए।

2. अध्ययन निष्पत्ति में उत्कृष्ट गुणवत्ता कैसे प्राप्त हो सकती है ?
3. कक्षा-6 से 8 की कोई एक अध्ययन निष्पत्ति पसंद करके उसमें अध्येता प्रभुत्व प्राप्ति कैसे कर सकते हैं, उदाहरण सह समझाइए।
4. इकाई में निहित मूल्यों को कैसे ढूँढ़ सकते हैं ? किन्हीं तीन इकाइयों में समाविष्ट मूल्य लिखिए।

1.6 संदर्भ साहित्य :

1. डॉ. जे. बी. जोशी, सी. एच. मैयड 'हिन्दी भाषा शिक्षण' प्रथम वर्ष, गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर, प्रथम संस्करण, 2008
2. डॉ. जे.बी. जोशी, सी.एच. मैयड 'हिन्दी भाषा शिक्षण' द्वितीय वर्ष, गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर, प्रथम संस्करण, 2009
3. डॉ. संजय तलसाणिया, रेवाभाई प्रजापति तथा अन्य, 'हिन्दी शिक्षक संदर्शिका कक्षा-5 से 8' प्रथम और द्वितीय सत्र, गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर, 2014

1.7 प्रायोगिक कार्य :

- **प्रशिक्षणार्थियों के लिए...**
 1. कक्षा-5 से 8 अध्ययन निष्पत्तियों की सूची का चार्टस बनाइए।
 2. हिन्दी कक्षा 5 से 8 की प्रत्येक इकाई में समाविष्ट मूल्यों की सूची बनाइए।
 3. बुलेटिन बोर्ड पर मूल्य संबंधी समाचार, लेख, प्रसंग रखिए।
 4. प्रार्थना सभा में महापुरुषों की मूल्यलक्षी घटनाएँ पेश कीजिए।
 5. अध्ययन निष्पत्तियों का विकासात्मक आवर्तन कोष्टक तैयार करवाकर कक्षाकक्ष में लगाइए।
- **अध्यापक की प्रवृत्तियाँ :**
 1. 'हिन्दी अभ्यासक्रम का स्वरूप' विषय पर परिसंवाद या वार्तालाप का आयोजन कीजिए।
 2. योग एवं आत्मशुद्धि अभियान का आयोजन कीजिए।



□ इकाई का प्रारूप :

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ

2.3 विषयवस्तु

2.3.1 हिन्दी पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ

(अ) हिन्दी कक्षा-5 पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ

(ब) हिन्दी कक्षा-6 पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ

(क) हिन्दी कक्षा -7 पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ

(ड) हिन्दी कक्षा-8 पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ

2.3.2 हिन्दी कक्षा - 5 से 8 शिक्षक संदर्शिकाओं की विशेषताएँ

2.4 इकाई का सारांश

2.5 समझ जाँचनेवाले प्रश्न

2.6 संदर्भ साहित्य

2.7 प्रायोगिक कार्य

2.1 प्रस्तावना :

भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य भाषा कौशलों का विकास करना एवं अध्येता को मूल्यनिष्ठ बनाना है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए भाषा की पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षक संदर्शिकाओं का निर्माण किया जाता है। वर्तमान शिक्षा में पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षक संदर्शिका का स्थान महत्वपूर्ण है, इसलिए इसकी संरचना का कार्य दायित्वपूर्ण हो जाता है।

पाठ्यपुस्तक निर्माण के दो पहलू हैं। एक बाह्य स्वरूप और दूसरा आंतरिक स्वरूप। इन दो पहलुओं में निहित मुद्दों को मद्देनजर रखकर पाठ्यपुस्तक संरचना करनी चाहिए। पाठ्यपुस्तक के बाह्य स्वरूप में आवरण, कागज़, छपाई, अक्षरों का कद, आकार एवं कद, सजावट, पृष्ठ संख्या, सिलाई-बँधाई, कीमत आदि का समावेश होता है। जबकि आंतरिक स्वरूप में विषयवस्तु की क्रमिकता, वैविध्यपूर्ण इकाइयाँ, भाषा-शैली, मूल्यों को उजागर करनेवाली कृतियाँ, अन्य विषयों से अनुबंध, भाषा विकास के संदर्भ में इकाई एवं अध्ययन निष्पत्तियों के आनुषांगिक अभ्यास, स्वाध्याय, प्रवृत्तियों का उल्लेख एवं पूरक अध्ययन की सामग्री आदि का समावेश होता है।

शिक्षक संदर्शिका का निर्माण भी उसके दो पहलू बाह्य और आंतरिक स्वरूप में निहित मुद्दों को मद्देनजर रखकर करना चाहिए। शिक्षक संदर्शिका के बाह्य स्वरूप में पाठ्यपुस्तक के बाह्य स्वरूप में निर्देशित बातों का समावेश होता है। जबकि आंतरिक स्वरूप हरेक इकाई में समाविष्ट विषयवस्तु के माध्यम से कौन-कौनसे उद्देश्य, अध्ययन निष्पत्तियाँ एवं मूल्य छात्रों में विकसित करने हैं, उनका उल्लेख होता है। साथ-साथ भाषा के प्रमुख उद्देश्य, अध्ययन निष्पत्तियाँ और मूल्य विकसित करने के लिए शिक्षक कौन-कौन से अनुभव देंगे, कैसे अनुभव प्रदान करेंगे, उसके लिए कौन-कौन सी पद्धति-प्रयुक्तियों का उपयोग करेंगे, छात्रों की सिद्धि का सतत आकलन करते हुए कैसे कक्षाध्यापन कार्य करेंगे - इन सारी बातों का विवरण दिया जाता है।

अतः इन मुद्दों के संदर्भ में हम कक्षा - 5 से 8 के हिन्दी पाठ्यपुस्तक और शिक्षक संदर्शिकाओं की विशेषताओं से अवगत होंगे -

2.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ :

☐ उद्देश्य (objectives) :

प्रशिक्षणार्थी...

- हिन्दी पाठ्यपुस्तक के आंतरिक एवं बाह्य स्वरूप की विशेषताओं को समझेंगे।
- हिन्दी शिक्षक संदर्शिका के आंतरिक एवं बाह्य स्वरूप की विशेषताओं को समझेंगे।

☐ अध्ययन निष्पत्तियाँ (Learning Outcomes) :

प्रशिक्षणार्थी...

- हिन्दी कक्षा-5 से 8 के पाठ्यपुस्तकों के आंतरिक एवं बाह्य स्वरूपों में समाविष्ट लक्षणों को समझ सकेंगे।
- हिन्दी कक्षा-5 से 8 के पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा कर सकेंगे।
- हिन्दी कक्षा-5 से 8 की शिक्षक संदर्शिकाओं के आंतरिक एवं बाह्य स्वरूपों में समाविष्ट लक्षणों को समझ सकेंगे।
- हिन्दी कक्षा-5 से 8 की शिक्षक संदर्शिकाओं की समीक्षा कर सकेंगे।

2.3 विषयवस्तु :

पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षक संदर्शिका शिक्षकों के लिए पथदर्शक हैं। जो शिक्षा प्रणाली में एक अति उपयुक्त एवं अनिवार्य उपकरण हैं। वे छात्रों को भाषाकीय कौशलों की शिक्षा प्राप्त करने में सहायक बनते हैं। अतएव हम क्रमशः कक्षा - 5 से 8 हिन्दी पाठ्यपुस्तक और शिक्षक संदर्शिकाओं की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

2.3.1 हिन्दी पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ :

(अ) हिन्दी कक्षा-5 पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ :

• बाह्य स्वरूप :

- मुखपृष्ठ सचित्र है। इस चित्र में उड़ती हुई तितलियाँ दिखाई गई हैं। अंतिम पृष्ठ पर राष्ट्रगान 'वंदे मातरम्' और तिरंगा लहराता दिखाया गया है। मुख पृष्ठ और अंतिम पृष्ठ के इनर पेज में क्रमशः 'खेलें खेल' (साप सीढ़ी रमत) और 'जल ही जीवन है' के प्रेरक चित्र हैं। जो विद्यार्थीकेन्द्री शिक्षा और मूल्यों को विकसित करने की प्रेरणा देते हैं।
- विषयवस्तु की स्पष्टता के लिए चित्र - संयोजन कलात्मक है। पाठ्यपुस्तक में इकाई के आधार पर रंगीन चित्र दिए गए हैं, जो शिक्षा में सहायक होंगे।
- अक्षर की छपाई कक्षानुसार मोटे टाइपवाली सप्रमाण है।
- छात्रों की अर्थग्रहण क्षमता अनुसार पृष्ठों की संख्या 116 तक सीमित की गई है।
- पुस्तक के कागज़ सफेद, टिकाऊ एवं मजबूत है।
- छात्रों की वय और कक्षा के अनुसूच पाठ्यपुस्तक का कद बड़ा किया गया है, जो उचित है।
- पुस्तक की क्रीमत 45-00 रुपये हैं। पृष्ठसंख्या एवं रचना को देखते हुए क्रीमत उचित है।

• आंतरिक स्वरूप :

- 'हिन्दी के प्रमुख उद्देश्य एवं इनमें समाविष्ट अध्ययन निष्पत्तियों का छात्रों में विकास हो' इन बातों को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तक निर्माण की गई है।
- छात्रों की कक्षा तथा शैक्षिक सूत्र 'सरल से कठिन की ओर' को ध्यान में रखकर विषयवस्तु का निरूपण करने का प्रयास किया गया है।

- इस पुस्तक में चित्रपाठ, कविता, चुटकुले, एकांकी, चित्रकहानी, निबंध, जीवन-प्रसंग, पहेलियाँ आधारित रचनाएँ हैं। इन रचनाओं के चयन में छात्रों की रुचि व स्तर को ध्यान में रखा गया है, तदुपरांत भाषा के मूलभूत कौशलों का विकास एवं छात्रों के जीवन को बेहतर और उन्नत बनाने का लक्ष्य भी समाविष्ट है।
- इकाई के प्रारंभ में रचना का सारांश दिया गया है। उसे पढ़ने से इकाई तथ्य-बोधन के बारे में पता चलता है।
- भाषा रटने से नहीं, बल्कि उसका समझकर उपयोग करने से आत्मसात होती है। इस सिद्धांत के अनुसार 'अभ्यास' शीर्षक अंतर्गत भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न इकाई के तथ्य-बोधन के लिए एवं भाषा उद्देश्यों को विकसित करने के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।
- 'स्वाध्याय' शीर्षक अंतर्गत निर्देशित प्रश्नों में वैविध्य है। स्वाध्याय में निर्देशित प्रश्नों की शिक्षक चर्चा करेंगे। इसका आशय यह है कि बाद में छात्रों को ऐसा मौका दिया जाय कि वे स्वयं बिना किसीकी सहायता से आत्मविश्वास के साथ स्वाध्याय कर सकें।
- 'भाषा सज्जता' शीर्षक के अंतर्गत व्याकरण विषयक सामग्री रखी गयी है। यह सामग्री पढ़ने से ज्ञात होता है कि व्याकरण का ज्ञान उदाहरण के जरिए दिया जाय।
- इकाई के अंत में 'योग्यता विस्तार' दिया गया है। जिसमें इकाई की आनुषांगिक पूरक सामग्री, उद्देश्य आधारित प्रवृत्तियाँ एवं पुस्तकालय संबंधी निर्देश दिये गए हैं।
- कुल मिलाकर 16 इकाइयाँ हैं। हर चार इकाइयों के बाद 'पुनरावर्तन' शीर्षक के रूप में प्रश्न समग्री रखी गयी है। जिस सामग्री से छात्रों का निश्चित अध्ययन निष्पत्तियों में पुनरावर्तन, दृढिकरण हो सकता है।
- सालभर में ली जानेवाली मौखिक, क्रियात्मक और लिखित कसौटियों के नमूने दिए गये हैं, जिससे शिक्षकों को मूल्यांकन करने में सहायता और मार्गदर्शन मिलेगा।

(ब) हिन्दी कक्षा-6 पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ :

हिन्दी कक्षा-6 के प्रथम और द्वितीय सत्र के पाठ्यपुस्तक अलग-अलग हैं। इन पाठ्यपुस्तकों के बाह्य स्वरूप और आंतरिक स्वरूप की विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

• बाह्य स्वरूप :

- मुखपृष्ठ रंगीन, छात्र की वय एवं कक्षा के अनुसार चित्रों के संयोजनवाले हैं। अंतिम पृष्ठ पर राष्ट्रगीत 'जनगणमन - अधिनायक' है। दोनों पृष्ठों के कागज़ मजबूत हैं।
- कागज़ सफेद एवं मजबूत हैं। कागज़ पर की छपाई एवं चित्रों की छपाई स्वच्छ है।
- हर एक इकाई के शीर्षक के अक्षर एवं अन्य सामग्री आधारित शीर्षक बोल्ड टाइप एवं रंगीन हैं। अक्षरों, शब्दों और लाईनों के बीच आवश्यक अंतर है।
- पुस्तक का आकार एवं कद कक्षानुसार रखा गया है। आकार एवं कद योग्य होने से छात्र को पढ़ने में सुविधायुक्त है।
- सजावट की दृष्टि से पाठ्यपुस्तक छात्र को आकर्षित करनेवाली है।
- पाठ्यपुस्तक की सिलाई-बँधाई मजबूत और टिकाऊ है।
- प्रथम सत्र के पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 60 और द्वितीय सत्र के पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 52 हैं। पृष्ठसंख्या कक्षानुसार है।
- पाठ्यपुस्तक की क्रीमत उसके पृष्ठ संख्या एवं साज-सज्जा को देखते हुए योग्य है।

• **आंतरिक स्वरूप :**

- छात्रों का हिन्दी के प्रमुख उद्देश्य-अर्थग्रहण, अभिव्यक्ति, सर्जनात्मकता, व्यावहारिक उपयोजन एवं तार्किक चिंतन - में विकास करना है। साथ-साथ अध्येता को मूल्यनिष्ठ बनाना है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है।
- प्रथम सत्र में 8 इकाइयाँ और द्वितीय सत्र में 7 इकाइयाँ हैं। इकाइयों में वैविध्य है। पाठ्यक्रम में गेय कविताएँ, कहानियाँ प्रसंगकक्षा, एकांकी, पहेलियाँ, पत्र जैसी गद्य तथा पद्य रचनाएँ हैं। जिनमें छात्रों के स्तर व रुचि को ध्यान में रखा गया है। साथ ये गद्य-पद्य रचनाएँ छात्रों में जीवन मूल्यों को प्रस्थापित करनेवाली हैं।
- इकाई के प्रारंभ में रचना का सारांश दिया गया है। उसे पढ़ने से इकाई तथ्य-बोधन होता है।
- भाषाप्रयोग में क्रमिकता तथा भाषाशैली में विविधता है।
- भाषा रटने से नहीं, बल्कि उसका समझकर उपयोग करने से आत्मसात होती है। इस सिद्धांत के अनुसार 'अभ्यास' शीर्षक अन्तर्गत भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न इकाई के तथ्य-बोधन के लिए एवं अध्ययन निष्पत्तियों को विकसित करने के लिए उपयोगी हैं।
- 'स्वाध्याय' शीर्षक अंतर्गत निर्देशित प्रश्नों में वैविध्य है। जो इकाई विषयवस्तु के दृढ़िकरण हेतु छात्र के लिए उपयुक्त है। इन प्रश्नों के जरिए अध्येता बिना किसी की सहायता से आत्मविश्वास के साथ स्व-अध्ययन कर सके ऐसी अपेक्षा है।
- 'इतना जानिए' शीर्षक के अन्तर्गत विरामचिह्न और संयुक्ताक्षर विषयक, पेशेवाले लोग एवं गृहउपयोगी वस्तुओं की सूची दी गई हैं। इस सामग्री से भाषा सज्जता में बढ़ोतरी होती है।
- 'भाषा सज्जता' शीर्षक अंतर्गत व्याकरण विषयक सामग्री रखी गयी है। यह सामग्री पढ़ने से ज्ञात होता है कि व्याकरण का ज्ञान उदाहरण के जरिए दिया जाय।
- इकाई के अंत में 'योग्यता विस्तार' दिया गया है। जिसमें इकाई की आनुषांगिक पूरक सामग्री, उद्देश्य-आधारित प्रवृत्तियाँ एवं पुस्तकालय संबंधी निर्देश दिये गये हैं।
- प्रथम सत्र पाठ्यपुस्तक में दो 'पुनरावर्तन' एवं द्वितीय सत्र में एक 'पुनरावर्तन' शीर्षक के रूप में प्रश्न सामग्री रखी गयी है। इन प्रश्नों में वैविध्य है। जो अलग - अलग अध्ययन निष्पत्तियों के दृढ़िकरण हेतु उपयोगी है।
- इन पाठ्यपुस्तकों का अन्य विषयों से अनुबंध है। जैसे कि 'जय-विज्ञान की' इकाई का विज्ञान एवं तकनीकी विषय से अनुबंध है।

(क) हिन्दी कक्षा-7 पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ :

हिन्दी कक्षा-7 के प्रथम और द्वितीय सत्र के पाठ्यपुस्तक अलग-अलग हैं। इन पाठ्यपुस्तकों के बाह्य स्वरूप और आंतरिक स्वरूप की विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

• **बाह्य स्वरूप :**

- दोनों सत्रों के पाठ्यपुस्तकों के मुखपृष्ठ, अंतिम पृष्ठ अध्येताकेन्द्री शिक्षा और मूल्यों को विकसित करने की प्रेरणा देते हैं।
- विषयवस्तु की स्पष्टता के लिए चित्र - संयोजन कलात्मक है। पाठ्यपुस्तकों में इकाई के आधार पर रंगीन चित्र दिये गए हैं, जो शिक्षा में सहायक होंगे।
- कागज़ सफेद एवं मजबूत हैं। कागज़ पर की छपाई एवं चित्रों की छपाई में स्वच्छता है।
- हर एक इकाई के शीर्षक के अक्षर एवं अन्य सामग्री आधारित शीर्षक बोल्ड टाइप एवं रंगीन हैं। अक्षरों, शब्दों और लाईनों के बीच आवश्यक अंतर है। अक्षर की छपाई कक्षानुसार मोटे टाइपवाली सप्रमाण है।

- छात्रों की वय और कक्षा के अनुरूप पाठ्यपुस्तक का कद बढ़ा किया गया है, जो उचित है।
- सजावट की दृष्टि से पाठ्यपुस्तक छात्रों को आकर्षित करनेवाली है।
- पुस्तकों की सिलाई-बँधाई मजबूत और टिकाऊ है।
- प्रथम सत्र और द्वितीय सत्र के पाठ्यपुस्तकों की पृष्ठ संख्या क्रमशः 52 और 68 हैं। पृष्ठसंख्या कक्षानुसू है।
- प्रथम और द्वितीय सत्र के पाठ्यपुस्तकों की क्रमिक, पृष्ठ संख्या और साज-सज्जा को देखते हुए योग्य है।

• **आंतरिक स्वरूप :**

- हिन्दी के प्रमुख उद्देश्यों को छात्रों में विकास करना है एवं अध्येता को मूल्यनिष्ठ बनाना है। इन्हीं लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है।
- प्रथम सत्र में 8 इकाइयाँ और द्वितीय सत्र में 10 इकाइयाँ हैं। इकाइयों में वैविध्य है। इन पाठ्यपुस्तकों में गेय कविताएँ, कहानी, जीवनी, पहेलियाँ, दोहे, प्रेरक प्रसंग, पत्र, चुटकुले, वाद-विवाद, एकांकी जैसी रचनाएँ हैं। जिनमें छात्रों के स्तर व रुचि को ध्यान में रखा गया है। ये सारी रचनाएँ छात्रों के जीवन मूल्य और जीवन कौशल विकसित करनेवाली हैं।
- इकाई के प्रारंभ में रचना का सारांश दिया गया है। उसे पढ़ने से इकाई बोधन के बारे में पता चलता है।
- छात्रों की कक्षा व रुचि तथा शैक्षिक सूत्र 'सरल से कठिन ओर' को ध्यान में रखकर विषयवस्तु का निष्पन्न किया गया है।
- इकाई विषयवस्तु के बाद 'शब्दार्थ' और 'मुहावरे' दिये गए हैं। जिससे इकाई विषयवस्तु सरलता से समझ सकते हैं।
- 'अभ्यास' शीर्षक अंतर्गत वैविध्यपूर्ण प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न इकाई तथ्य-बोधन के लिए एवं भाषा उद्देश्यों को विकसित करने के लिए उपादेय रहेंगे। यह अपेक्षित है कि शिक्षक अभ्यास विषयक कार्य में हर एक छात्र को सम्मिलित करें।
- 'स्वाध्याय' शीर्षक अंतर्गत निर्देशित प्रश्नों में वैविध्य है। स्वाध्याय में निर्देशित प्रश्नों की शिक्षक चर्चा करेंगे। इसका आशय यह है कि बाद में छात्रों को ऐसा मौका दिया जाय कि वे स्वयं बिना किसी की सहायता से आत्मविश्वास के साथ स्वाध्याय कर सकें।
- व्याकरण विषयक सामग्री 'भाषा सज्जा' शीर्षक अंतर्गत रखी गयी है। यह सामग्री व्याकरण सिखाने के लिए जो आदर्श पद्धति है, जिसे 'आगमन पद्धति' कहते हैं, उस पद्धति के आधार पर प्रस्तुत की गई है।
- इकाई के अंत में 'योग्यता विस्तार' दिया गया है। जिसमें इकाई के आनुषांगिक पूरक सामग्री, उद्देश्य आधारित प्रवृत्तियाँ, प्रकल्प कार्य एवं पुस्तकालय संबंधी निर्देश दिये गए हैं।
- प्रथम और द्वितीय सत्र में दो-दो 'पुनरावर्तन' शीर्षक के रूप में प्रश्न सामग्री रखी गयी है। इन प्रश्नों में वैविध्य है। जो अलग-अलग अध्ययन निष्पत्तियों के दृढ़ीकरण हेतु उपयोगी है।
- इन पाठ्यपुस्तकों का अन्य विषयों से अनुबंध है। जैसे कि 'डॉ. विक्रम साराभाई' इकाई का विज्ञान एवं तकनीकी विषय और 'समय-सारिणी' इकाई का गणित विषय से अनुबंध है।

(ड) **हिन्दी कक्षा-8 पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ :**

हिन्दी कक्षा-8 प्रथम और द्वितीय सत्र की पाठ्यपुस्तकें अलग-अलग हैं। इन पाठ्यपुस्तकों की बाह्य और आंतरिक स्वरूप की विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

• **बाह्य स्वरूप :**

- मुखपृष्ठ और अंतिम पृष्ठों के चित्र रंगीन एवं आकर्षक हैं।
- विषयवस्तु की स्पष्टता के लिए चित्र-संयोजन कलात्मक है। इकाई कथावस्तु को स्पष्ट करनेवाले रंगीन चित्र दिए गए हैं, जो अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया में सहायक होंगे।

- कागज़ सफेद एवं मजबूत हैं। कागज़ पर की छपाई एवं चित्रों की छपाई स्वच्छ है।
- हर एक इकाई के शीर्षक के अक्षर एवं अन्य सामग्री आधारित शीर्षक बॉल्ड टाइप एवं रंगीन हैं। अक्षरों, शब्दों और लाईनों के बीच आवश्यक अंतर है।
- पाठ्यपुस्तक की सजावट छात्रों को आकर्षित करनेवाली है।
- पाठ्यपुस्तक का आकार एवं कद कक्षानुसार रखा गया है। आकार एवं कद योग्य होने से छात्रों को पढ़ने में सुविधायुक्त है।
- पाठ्यपुस्तकों की सिलाई-बँधाई मजबूत और टिकाऊ है।
- प्रथम और द्वितीय सत्र की पाठ्यपुस्तकों की पृष्ठ संख्या क्रमशः 68 और 58 है। पृष्ठसंख्या कक्षानुरूप है।
- प्रथम और द्वितीय सत्र के पाठ्यपुस्तकों की क्रीमत क्रमशः 16-00 रुपये और 20-00 रुपये हैं। पाठ्यपुस्तकों की क्रीमत पृष्ठ संख्या एवं साज-सज्जा को देखते हुए योग्य है।

• **आंतरिक स्वरूप :**

- 'हिन्दी के प्रमुख उद्देश्य एवं इनमें समाविष्ट अध्ययन निष्पत्तियों का छात्रों में विकास हो' इन बातों को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तक निर्माण की गई है।
- प्रथम सत्र में 9 इकाइयाँ और द्वितीय सत्र में भी 9 इकाइयाँ हैं। इकाइयों में वैविध्य है। इन पाठ्यपुस्तकों में कविता, दोहे, पत्र, यात्रावृत्त, रेखाचित्र, कहानी, चुटकुले, पहेलियाँ, जीवनी, एकांकी, वाद-विवाद जैसी रचनाएँ हैं। जिनमें छात्रों के स्तर व रुचि को ध्यान में रखा गया है। सारी रचनाएँ छात्रों के जीवन मूल्य और जीवन कौशल विकसित करनेवाली हैं।
- इकाई के प्रारंभ में रचना का सारांश दिया गया है। उसे पढ़ने से इकाई तथ्य - बोधन के बारे में पता चलता है।
- छात्रों की कक्षा व रुचि तथा शैक्षिक सूत्र 'सरल से कठिन की ओर' को ध्यान में रखकर विषयवस्तु का निष्पण किया गया है।
- इकाई विषयवस्तु के बाद 'शब्दार्थ' और 'मुहावरे' दिये गए हैं। जिससे इकाई विषयवस्तु को सरलता से समझ सकते हैं।
- 'अभ्यास' शीर्षक अंतर्गत वैविध्यपूर्ण प्रश्न दिये गए हैं। ये प्रश्न इकाई तथ्य-बोधन के लिए एवं भाषा उद्देश्यों को विकसित करने के लिए उपादेय रहेंगे। यह अपेक्षित है कि शिक्षक अभ्यास विषयक कार्य में हर एक छात्र को सम्मिलित करें।
- 'स्वाध्याय' शीर्षक अंतर्गत निर्देशित प्रश्नों में वैविध्य है। स्वाध्याय में निर्देशित प्रश्नों की चर्चा शिक्षक करेंगे। इसका आशय यह है कि बाद में छात्रों को ऐसा मौका दिया जाय कि वे स्वयं बिना किसीकी सहायता से आत्मविश्वास के साथ स्वाध्याय कर सकें।
- 'भाषा सज्जता' शीर्षक अंतर्गत व्याकरण विषयक सामग्री रखी गयी है। यह सामग्री पढ़ने से ज्ञात होता है कि व्याकरण का ज्ञान उदाहरण के जरिए दिया जाय।
- इकाई के अंत में 'योग्यता विस्तार' दिया गया है। जिसमें इकाई के आनुषांगिक पूरक सामग्री, उद्देश्य आधारित प्रवृत्तियाँ, प्रकल्प कार्य एवं पुस्तकालय संबंधी निर्देश दिये गए हैं।
- प्रथम और द्वितीय सत्र में दो-दो 'पुनरावर्तन' शीर्षक के रूप में प्रश्न सामग्री रखी गयी है। इन प्रश्नों में वैविध्य है। जो अलग-अलग अध्ययन निष्पत्तियों के दृढ़िकरण हेतु उपयोगी है।
- इन पाठ्यपुस्तकों का अन्य विषयों से अनुबंध है। जैसे कि 'अंतरिक्ष परी सुनिता विलियम्स' और 'सवाल बालमन के, जवाब डॉ. कलाम के' इकाइयों का विज्ञान एवं तकनीकी विषय से अनुबंध है।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

1. पाठ्यपुस्तक की समीक्षा के लिए कौन-कौन से दो पहलु पर विचार किया जाता है ?
2. पाठ्यपुस्तक के बाहरी और आंतरिक स्वरूप में कौन-कौनसी बातों का समावेश होता है ?
3. कक्षा-5 से 8 तक के पाठ्यपुस्तकों में कौन - कौन से प्रकार की रचनाएँ समाविष्ट हैं ?
4. 'अभ्यास' और 'स्वाध्याय' प्रश्नों का आशय क्या है ?

हमने कक्षा-5 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकों की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। अब हम हिन्दी कक्षा - 5 से 8 की शिक्षक संदर्शिकाओं की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

2.3.2 हिन्दी कक्षा - 5 से 8 शिक्षक संदर्शिकाओं की विशेषताएँ :

• **बाह्य स्वरूप :**

- मुखपृष्ठ, अंतिम पृष्ठ और इनर पेज रंगीन हैं।
- कागज़ सफेद एवं मजबूत है। कागज़ की छपाई एवं चित्रों की छपाई स्वच्छ है।
- अक्षरों, शब्दों और लाइनों के बीच आवश्यक अंतर है। अक्षर की छपाई मोटे टाइपवाली सप्रमाण है।
- सजावट की दृष्टि से आकर्षित एवं सिलाई-बँधाई मजबूत तथा टिकाऊ है।

• **आंतरिक स्वरूप :**

- प्रारंभ में 'पाठ्यपुस्तक के सम्बन्ध में..' शीर्षक के रूप में पाठ्यपुस्तकों की विशेषताएँ दर्शाई गई हैं। उन विशेषताओं को पढ़ने से शिक्षक पाठ्यपुस्तक निर्माण का आशय क्या है, उसको समझ सकते हैं।
- 'शिक्षक संदर्शिका के संबंध में...' शीर्षक के रूप में शिक्षक संदर्शिका के उपयोग हेतु निर्देश दिए गए हैं। जिससे शिक्षक भाषा के प्रमुख उद्देश्यों को सिद्ध करने हेतु कक्षा में किस तरह कार्य करेंगे उसके बारे में समझ सकते हैं।
- 'अध्ययन उद्देश्य एवं अध्ययन उपलब्धियाँ' शीर्षक के रूप में हिन्दी भाषा के प्रमुख उद्देश्य एवं उद्देश्यों में समाविष्ट उपलब्धियों की सूची दी गई है।
- हर एक इकाई में उद्देश्य एवं अध्ययन उपलब्धियाँ, जीवन मूल्य, जीवन कौशल, अनुमानित समय तालिका, सहायक सामग्री एवं अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया जैसे शीर्षकों के रूप में विवरण दिया गया है।
- इकाई के प्रारंभ में उद्देश्य एवं अध्ययन उपलब्धियों की सूची पढ़ने से शिक्षक समझ सकता है कि इस इकाई में कौन-कौन से उद्देश्य एवं अध्ययन उपलब्धियों के बारे में अध्येता को अनुभव प्रदान करने हैं ? शिक्षक से यह निवेदन है कि संबंधित इकाई के संदर्भ में लक्ष्य क्या है ? उनको स्पष्ट रूप से समझें।
- भाषा के प्रमुख कौशलों के विकास के साथ - साथ यह अपेक्षित है कि छात्र का जीवन बेहतर एवं उन्नत बने। इकाई की विषयवस्तु का आधार लेकर छात्रों में कौन-कौन से जीवन मूल्य एवं जीवन कौशल विकसित करना है, उसका निर्देश दिया गया है। शिक्षक के रूप में हमें यह जानकारी मिलने से इकाई में निहित मूल्यों और कौशलों के संदर्भ में अध्ययन के समय अध्येता को इसकी ओर उन्मुख कर सकते हैं।
- 'अनुमानित समय तालिका' का भी उल्लेख है। इससे कौन - से उद्देश्य विषयक कितने समय में अनुभव प्रदान करने हैं, उसका पता शिक्षक को चलता है।

- इकाई में समाविष्ट उद्देश्य एवं अध्ययन उपलब्धियाँ सिद्ध करने हेतु अध्येता को अनुभव प्रदान करने के लिए जो आवश्यक सहायक सामग्री की जरूरत रहती है, इस सहायक सामग्री की सूची भी दी गई है।
- अध्ययन - अध्यापन प्रक्रिया की विशद विवेचना की गई है। इसमें पूर्व निर्धारित उद्देश्य सिद्ध करने के लिए शिक्षक अपनी कार्ययोजना क्या रखेगा, उसका निर्देश दिया गया है। साथ-साथ शिक्षक चर्चा के दौरान अध्येता की साझेदारी कैसे प्राप्त करेंगे, अध्यापन को कैसे आनंददायी करेंगे ? छात्र को स्व-अध्ययन का मौका कब और कैसे देंगे ? छात्र का निरंतर मूल्यांकन कैसे करेंगे ? आदि विषय में मार्गदर्शन दिया गया है।
- हर एक इकाई में बॉक्स में पाठ्यपुस्तक के पन्ने की विगत भी छपी है। जिससे शिक्षक सरलता से छात्रों को अनुभव प्रदान कर सकते हैं।

समग्रतया शिक्षक संदर्शिकाएँ बाह्य और आंतरिक स्वरूप से समुचित ढंग से तैयार की गई हैं। जो अध्येताओं के विभिन्न कौशलों के विकास में उचित प्रदान कर सकेगी।

2.4 इकाई का सारांश :

इस अध्याय में कक्षा-5 से 8 की पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षक संदर्शिकाओं की बाह्य एवं आंतरिक स्वरूप की विशेषताओं का निरूपण किया गया है। इन विशेषताओं से पता चलता है कि - पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षक संदर्शिकाएँ बाह्य और आंतरिक स्वरूप के तत्त्वों की दृष्टि से योग्य हैं।

2.5 समझ जाँचनेवाले प्रश्न :

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हिन्दी पाठ्यपुस्तक के बाह्य स्वरूप का मूल्यांकन किन मुद्दों के जरिए किया जाता है ?
2. हिन्दी पाठ्यपुस्तक के आंतरिक स्वरूप में समाविष्ट तत्त्वों के नाम निर्देश कीजिए।
3. कक्षा-5 से 8 तक के पाठ्यपुस्तकों में कौन-कौन से प्रकार की रचनाएँ समाविष्ट हैं?
4. 'अभ्यास' और 'स्वाध्याय' प्रश्नों का आशय क्या है ?
5. 'भाषा सज्जता' एवं 'योग्यता विस्तार' में निरूपित निर्देश लिखिए।

2. सविस्तार उत्तर दीजिए।

1. कक्षा-5 हिन्दी पाठ्यपुस्तक के बाह्य और आंतरिक स्वरूप की विशेषताएँ लिखिए।
2. कक्षा-6 हिन्दी पाठ्यपुस्तक के बाह्य और आंतरिक स्वरूप की विशेषताएँ लिखिए।
3. कक्षा-7 हिन्दी पाठ्यपुस्तक के बाह्य और आंतरिक स्वरूप की विशेषताएँ लिखिए।
4. कक्षा-8 हिन्दी पाठ्यपुस्तक के बाह्य और आंतरिक स्वरूप की विशेषताएँ लिखिए।
5. कक्षा -5 से 8 हिन्दी शिक्षक संदर्शिकाओं की बाह्य और आंतरिक स्वरूप की विशेषताएँ लिखिए।

2.6 संदर्भ साहित्य :

1. कक्षा 5 से 8 की हिन्दी पाठ्यपुस्तक, जी.सी.ई.आर.टी., गांधीनगर एवं गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर
2. कक्षा-5 से 8 की शिक्षक संदर्शिका, जी.सी.ई.आर.टी., गांधीनगर एवं गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर

3. हिन्दी भाषा शिक्षण, प्रथम वर्ष डॉ. जे.बी.जोशी, सी.एच. मैयड, गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर, 2008
4. हिन्दी भाषा शिक्षण, द्वितीय वर्ष, डॉ. रवीन्द्र अंधारिया, डॉ. जे. बी. जोशी तथा अन्य, गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर, 2009

2.7 प्रायोगिक कार्य :

- **प्रशिक्षणार्थियों के लिए...**

1. हिन्दी कक्षा 5 से 8 की पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा कीजिए।
2. मनपसंद पुस्तक पढ़कर उसकी समीक्षा कीजिए एवं पुस्तक के बारे में प्रार्थना संमेलन में बात कीजिए।
3. पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षक संदर्शिकाओं की विशेषताओं का चार्ट निर्माण करके कक्षाकक्षा में रखिए।

- **अध्यापक की प्रवृत्तियाँ :**

1. हिन्दी कक्षा 5 से 8 की पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा के संदर्भ में प्रकल्प कार्य (Project work) करवाइए।
2. प्रशिक्षणार्थियों को मनपसंद पुस्तक के बारे में प्रार्थना संमेलन में बात करने का मौका दीजिए।



☐ इकाई का प्रारूप :

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ

3.3 विषयवस्तु

3.3.1 व्यावहारिक व्याकरण की संकल्पना और अर्थ

3.3.2 व्याकरण शिक्षण का महत्व

3.3.3 हिन्दी कक्षा- 5 से 8 में समाविष्ट व्याकरण के मुद्दों की समझ

(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम (ग) विशेषण

(घ) क्रिया और क्रिया के काल (च) वचन

(छ) लिंग (ज) अव्यय (झ) उपसर्ग (ट) प्रत्यय

(ठ) विरामचिह्न (ड) शब्दकोश (ढ) मुहावरे (ण) कहावतें

3.3.4 व्याकरण शिक्षण : पद्धति-प्रयुक्तियाँ

3.4 इकाई का सारांश

3.5 समझ जाँचनेवाले प्रश्न

3.6 संदर्भ साहित्य

3.7 प्रायोगिक कार्य

3.1 प्रस्तावना :

व्याकरण शिक्षण भाषिक अनुशासन और मानसिक अनुशासन का उत्तम साधन है। अतः भाषा प्रयोग से भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त कर सकते हैं। व्याकरण से भाषा शुद्धि, तर्क-वितर्क आदि क्षमताएँ विकसित होती हैं एवं शुद्ध भाषा प्रयोग की क्षमता भी अभिवृद्ध होती है। व्याकरण का ज्ञान शब्दों के प्रयोग को अनुशासित करता है। इसलिए उसे 'शब्दानुशासन' भी कहा जाता है। बिना व्याकरण के जो भाषा है वह अशुद्ध और अपभ्रंश हो सकती है। व्याकरण भाषा गठन की व्यवस्था है। विविध युक्ति-प्रयुक्तियों से छात्रों में व्याकरण शिक्षा में अभिरुचि बढ़ाना ही व्यावहारिक व्याकरण का प्रमुख लक्ष्य है।

3.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ :

☐ उद्देश्य (objectives) :

प्रशिक्षणार्थी...

- व्यावहारिक व्याकरण की संकल्पना और अर्थ समझेंगे।
- व्यावहारिक व्याकरण का महत्व समझेंगे।
- हिन्दी कक्षा - 5 से 8 में समाविष्ट व्याकरण के मुद्दों की समझ प्राप्त कर सकेंगे।
- व्याकरण शिक्षण की पद्धति - प्रयुक्तियों को समझेंगे।

□ अध्ययन निष्पत्तियाँ (Learning outcomes) :

प्रशिक्षणार्थी....

- व्यावहारिक व्याकरण की संकल्पना और अर्थ समझ सकेंगे।
- व्यावहारिक व्याकरण का महत्त्व समझ सकेंगे।
- हिन्दी कक्षा- 5 से 8 - में समाविष्ट व्याकरण के मुद्दों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और उसके काल, वचन, लिंग, अव्यय, उपसर्ग, प्रत्यय, विरामचिह्नों, शब्दकोश, मुहावरे, कहावतें) को समझ सकेंगे।
- व्याकरण शिक्षण की पद्धति-प्रयुक्तियों को समझ सकेंगे।

3.3 विषयवस्तु :

3.3-1 व्यावहारिक व्याकरण की संकल्पना और अर्थ :

बोलचाल -व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त होनेवाले भाषिक उपादानों की पहचान ही व्यावहारिक व्याकरण है। इसमें सिद्धांत या नियम के स्थान पर भाषिक तत्त्वों के प्रयोग - विधि पर बल दिया जाता है।

व्यावहारिक व्याकरण में विविध उदाहरणों के द्वारा सिद्धांत तक जाने की प्रक्रिया है। अध्ययता के स्वानुभावों को शिक्षा के साथ जोड़कर विविध उदाहरणों के द्वारा भाषा के प्रमुख कौशलों को सघन बना सकते हैं। व्याकरण शिक्षण को अध्यापन कार्य के समय अलग भाग या विषय न बनाकर शिक्षण प्रक्रिया के साथ प्रसंगानुसार व्यावहारिक ढंग से उदाहरण के साथ अध्यापन होना चाहिए।

3.3.2 व्याकरण शिक्षण का महत्त्व :

- भाषा पर प्रभुत्व पाने के लिए व्याकरण शिक्षण अनिवार्य है।
- भाषा में शुद्ध तथा अशुद्ध प्रयोगों की परख करने में व्याकरण उपयोगी है।
- व्याकरण द्वारा तर्क-वितर्क की सटीक अभिव्यक्ति का कौशल विकसित हो सकता है।
- व्याकरण भाषा का सच्चा मित्र है। व्याकरण शिक्षण से भाषा संरचना शुद्ध होती है।
- व्याकरण के माध्यम से भाषा के विविध रहस्यों का सरलता से परिचय हो सकता है।
- अभिव्यक्ति में स्पष्टता लाने तथा शैली निर्माण में व्याकरण शिक्षण उपयोगी है।
- व्याकरण शिक्षण में विविध उदाहरणों के द्वारा अध्ययन अनुभव प्रदान करने से विषयवस्तु का बोधन सरलता से हो सकता है।
- भाषागठन को चुस्त करने का कार्य व्याकरण करता है। वह भाषा के सर्वमान्य रूप का विश्लेषण करता है और उसका संवर्धन करता है।
- करुणापति त्रिपाठी के मतानुसार भाषा शिक्षण का कार्य व्याकरण की शिक्षा के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। व्याकरण की उपेक्षा करने से भाषाकीय संस्कृति में अव्यवस्था फैलती है, भाषा का कोई प्रभाव नहीं रहता; उसमें संशोधन या संवर्धन का अवकाश नहीं रहता है। फिर भी हमें यह जान लेना आवश्यक है कि व्याकरण साध्य नहीं है। वह भाषा को सही रूप में पाने का और समझने का एक अनिवार्य साधन है। अतः व्याकरण भाषा का सेवक है, स्वामी नहीं। वह भाषा के विचारों को दूर करके विचारों में स्पष्टता लाता है।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

1. 'व्यावहारिक व्याकरण' किसे कहते हैं ?
2. 'भाषा शिक्षण का कार्य व्याकरण की शिक्षा के बिना पूर्ण नहीं हो सकता' - विधान का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

3.3.3 हिन्दी कक्षा 5 से 8 में समाविष्ट व्याकरण के मुद्दों की समझ :

(क) संज्ञा : किसी व्यक्ति, पशु, पक्षी, पदार्थ, स्थान, गुण, भाव या अवस्था के नाम का बोध करानेवाले शब्द को 'संज्ञा' कहते हैं।

- **संज्ञा के प्रकार :** संज्ञा के पाँच प्रकार हैं -

(1) **व्यक्तिवाचक संज्ञा :** जिस संज्ञा शब्द से किसी एक विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध होता है, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं।

जैसे :- माधव, ऐरावत, गंगा, हिमालय, रामायण, आदि व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं।

(2) **जातिवाचक संज्ञा :** जो शब्द एक ही प्रकार के या एक जैसे व्यक्तियों, वस्तुओं, प्राणियों या स्थानों के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं तथा जाति के सभी व्यक्तियों, वस्तुओं, प्राणियों तथा स्थानों का बोध कराते हैं, उन्हें 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं।

जैसे :- लड़का, नदी, पर्वत, देश, पेड़, सैनिक आदि जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

(3) **द्रव्यवाचक संज्ञा :** जिन संज्ञा शब्दों से द्रव्य या पदार्थों का बोध हो, उसे 'द्रव्यवाचक संज्ञा' कहते हैं।

जैसे :- सोना, लोहा, पानी, दूध, पेट्रोल, कागज़ आदि द्रव्यवाचक संज्ञाएँ हैं।

(4) **समूहवाचक संज्ञा :** जिन संज्ञा शब्दों से किसी समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे 'समूहवाचक संज्ञा' कहते हैं।

जैसे :- भीड़, सेना, दल, गुच्छ, झुंड, टीम आदि समूहवाचक संज्ञाएँ हैं।

(5) **भाववाचक संज्ञा :** जिन संज्ञा शब्दों का प्रयोग किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ के गुण, दोष, दशा, स्वभाव, भाव, अवस्था आदि का बोध कराने के लिए किया जाता है, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं। इन संज्ञाओं का केवल अनुभव किया जा सकता है।

जैसे :- मिठास, क्षमा, सत्य, घृणा, गरीबी, क्रोध, भय, हँसी, प्यार, सुंदरता, गर्मी आदि भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

- निम्नांकित वाक्यों में से संज्ञा ढूँढकर उसका भेद बताइए।

1. थोड़ी देर बाद उसे राम और श्याम मिले।
2. गाय पालतु प्राणी है।
3. हिमालय की चढ़ाई बहुत कठिन थी।
4. आज बिल्ली सारा दूध पी गई।
5. सोना कीमती धातु है।

(ख) सर्वनाम : संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जानेवाले शब्दों को 'सर्वनाम' कहा जाता है।

• सर्वनाम के भेद :

सर्वनाम के छः भेद हैं -

- (1) **पुरुषवाचक सर्वनाम** : जो सर्वनाम वक्ता (बोलनेवाले), श्रोता (सुननेवाले) या अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग किए जाते हैं, वे 'पुरुषवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं -

(क) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम (बोलनेवाला) जैसे-मैं, हम, मेरा, हमारा, मुझे, हमें।

(ख) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम (सुननेवाला) जैसे - तू, तुम, तुम्हारा, आप, आपका।

(ग) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य व्यक्ति) जैसे-वह, वे, उसे, उनका, उन्हें।

- (2) **निश्चयवाचक सर्वनाम** : जिस सर्वनाम के द्वारा पास या दूर की वस्तु या व्यक्ति का निश्चित रूप से बोध करवाया जाए, उसे 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं।

जैसे : यह, वह।

- यह गीता की पुस्तक है।

- जिसने स्पर्धा में भाग लिया था, वह आया है।

- (3) **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** : जब किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु का निश्चय न हो, तो उनके लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहा जाता है।

जैसे : कोई, कुछ।

- कोई आ रहा है।

- कुछ ले आइए।

- (4) **प्रश्नवाचक सर्वनाम** : जो सर्वनाम किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या घटना आदि के बारे में प्रश्न का बोध कराते हैं, उन्हें 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहे जाते हैं।

जैसे : कौन, क्या, किसे, किसने, कौन-सी, कौन-सा।

- वह कौन जा रहा है ?

- तुम्हें क्या चाहिए ?

- (5) **संबंधवाचक सर्वनाम** : वाक्य में संबंध दर्शानेवाले सर्वनाम को 'संबंधवाचक सर्वनाम' कहते हैं।

जैसे : जैसा-वैसा, जो-वह, जिसकी-उसकी, जो-सो

- जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

- जो मन लगाकर पढ़ेगा, वह अवश्य उत्तीर्ण होगा।

- (6) **निजवाचक सर्वनाम** : जिस सर्वनाम शब्दों का प्रयोग 'स्वयं' के लिए किया जाता है तथा जिनसे 'अपनेपन' का बोध होता है, उन्हें 'निजवाचक सर्वनाम' कहा जाता है।

जैसे : स्वयं, खुद, अपने आप

- अपना काम स्वयं ही करना चाहिए।

- मैं अपने आप पढ़ लूँगा।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

- निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम ढूँढ़कर उसका भेद बताइए।

1. हम मैच जीत गए।
2. कोई तुम्हें बुला रहा है।
3. यह तो मेरा मित्र मनोज है।
4. जो चलता रहेगा, वह मंज़िल तक पहुँचेगा।
5. आप कब आए ?

(ग) विशेषण : जो शब्द संज्ञा की विशेषता बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं।

- विशेषण के भेद :

(1) **गुणवाचक विशेषण** : जिस शब्द से संज्ञा का गुण-दोष, आकार, रंग-रूप, स्पर्श, दशा-अवस्था, स्थान, देश-काल, स्वाद-गंध और दिशा का बोध होता हो उसे 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं।

जैसे : इमानदार,, गोल, सफेद, कोमल, स्वस्थ, ग्रामीण, मीठा, दक्षिणी

उदाहरण :

- वरदराज चतुर बालक था।
- मिर्च का स्वाद तीखा होता है।

(२) **संख्यावाचक विशेषण** : जो विशेषण संज्ञा की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें 'संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं।
संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं -

(i) **निश्चित संख्यावाचक विशेषण** : जिन विशेषणों से संज्ञा की निश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें 'निश्चित संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं।

ये शब्द निश्चित संख्यावाचक विशेषण के अंतर्गत आते हैं :

- पूर्णांक बोधक : एक, चार, सौ, हजार आदि।
- अपूर्णांक बोधक : पौना, डेढ़, पाव, आधा आदि।
- क्रमवाचक : पहला, चौथा, बारहवा, सातवीं आदि।
- आवृत्तिवाचक : दुगुना, चौगुना, तिहरा, इकहरा आदि।
- समूहवाचक : दोनों, तीनों, चारों आदि।

उदाहरण :

- प्रयाग तीन नदियों का संगमस्थान है।
- हमारे देश की चारों दिशाएँ रक्षित हैं।

(ii) **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण** : जिन विशेषणों से संज्ञा की निश्चित संख्या का बोध न होता हो, उसे 'अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं।

उदाहरण : जैसे-कई, कुछ, कम

- कई लोग नर्मदा की परिक्रमा करते हैं।

- कुछ लड़कों ने पर्यावरण बचाने का बीड़ा उठाया है।

(3) **परिमाणवाचक विशेषण :** जो विशेषण संज्ञा शब्दों के परिमाण (मात्रा) अर्थात् नाप-तौल की जानकारी देते हैं, उन्हें 'परिमाणवाचक विशेषण' कहा जाता है।

परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं -

(i) **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण :** जो विशेषण संज्ञा शब्दों के निश्चित परिमाण (मात्रा) की जानकारी देते हैं, उन्हें 'निश्चित परिमाणवाचक विशेषण' कहा जाता है।

उदाहरण :

- एक किलो नमकीन दीजिए।

- उसने पाँच मीटर कपड़ा खरीदा।

(ii) **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण :** जो विशेषण संज्ञा शब्दों के निश्चित परिमाण (मात्रा) की जानकारी नहीं देते हैं, उन्हें 'अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण' कहा जाता है।

उदाहरण :

- दिनेश ने बहुत मिठाई खाई।

- राधा ने चाय में थोड़ा दूध डाला।

(4) **सार्वनामिक विशेषण :** जब सर्वनाम किसी संज्ञा की विशेषता बताता है, तब उसे 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं।

जैसे : - वे लड़के खेल रहे हैं।

- यह पेन्सिल दिलीप की है।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

● निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छांटकर उनके भेद लिखिए :

1. दिल्ली ऐतिहासिक नगर है।
2. अब्दुल बीस किलो आटा लाया।
3. पच्चीस छात्रों ने सही उत्तर दिए।
4. कुछ लड़के बगीचे में खेल रहे हैं।
5. माँ ने चाय में थोड़ा दूध डाला।

(घ) क्रिया और क्रिया के काल :

• क्रिया :

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और रेखांकित पदबंधों पर ध्यान दीजिए।

(1) मनोज खाना खाता है।

(2) बारिश हो रही है।

(3) दिव्या सुंदर है।

(4) पुस्तक मेज़ पर है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित पदों को 'क्रियाएँ' कही जाती हैं। प्रथम वाक्य में मनोज द्वारा खाना खाए जाने का बोध, दूसरे वाक्य में बारिश के होने का बोध, तीसरे वाक्य में दिव्या की अवस्था का बोध और चौथे वाक्य में पुस्तक की स्थिति का बोध होता है।

अतः ऐसे शब्द (पद) जिनसे किसी कार्य के होने या किए जाने का या किसी वस्तु या व्यक्ति की स्थिति का बोध होता है, 'क्रिया' कहलाते हैं।

• **क्रिया के काल :**

क्रिया के काल तीन हैं : (१) वर्तमानकाल (२) भूतकाल और (३) भविष्यकाल।

(1) **वर्तमानकाल** : क्रिया के जिस रूप से क्रिया हो रही हो ऐसा बोध होता हो, उसे 'वर्तमानकाल' कहते हैं।

जैसे : - बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

- वह विद्यालय जा रहा है।

(2) **भूतकाल** : क्रिया के जिस रूप से क्रिया हो गई हो, ऐसा बोध होता हो, उसे 'भूतकाल' कहते हैं।

जैसे : - मैंने उसे फल दिये।

- वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ।

(3) **भविष्यकाल** : क्रिया के जिस रूप से क्रिया होनेवाली हो, ऐसा बोध होता हो, उसे 'भविष्यकाल' कहते हैं।

जैसे : - माली बाग में से फूल चुनेगा।

- मैं शिक्षक बनूँगा।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

● निम्नलिखित वाक्यों से जिस काल का पता चलता हो, उसका नाम लिखिए।

1. रोशनी ने कहानी सुनाई।

2. हम परसों घूमने जाएँगे।

3. सविता सातवीं कक्षा में पढ़ती है।

(च) वचन :

• शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा एक से अधिक (अनेक) होने का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं।

• हिंदी में दो वचन हैं - (1) एकवचन और (2) बहुवचन

(1) **एकवचन** : शब्द के जिस रूप से उसके एक (संख्या में) होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे : लड़का, चिड़िया, कुत्ता, नदी, बच्चा, दीवार

(2) **बहुवचन** : शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक (संख्या में) होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे : लड़के, चिड़ियाँ, कुत्ते, नदियाँ, बच्चे, दीवारें।

• **वचन संबंधित निर्देश :**

- आदर या सम्मान का भाव प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है;

जैसे : लाला लजपतराय महान देशभक्त थे।

- कुछ संज्ञा शब्द हमेशा बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

जैसे : प्राण, हस्ताक्षर, दर्शन, होश, लोग, समाचार आदि।

- कुछ संज्ञा शब्द सदा एकवचन में प्रयुक्त किए जाते हैं।

जैसे : वर्षा, पानी, आकाश, सहायता, जनता, सत्य, व्यथा, छाया, दूध, हवा...आदि।

- धातुओं का बोध करानेवाली संज्ञाएँ हमेशा एकवचन में प्रयुक्त होती हैं।

जैसे : सोना, चाँदी, पीतल

- समुदायवाचक संज्ञाएँ एकवचन में ही प्रयुक्त की जाती हैं।

जैसे : समिति, संसद, सभा, दल

- व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ भी एकवचन में प्रयुक्त की जाती हैं।

जैसे : - महेश कल लौटा।

- सारे सैनिक वीरता से लड़े।

- अगणनीय संज्ञाएँ सदा एकवचन में प्रयुक्त की जाती हैं।

जैसे : सारा आटा समाप्त हो गया।

• **वचन परिवर्तन के नियम :**

(1) आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों का बहुवचन अंतिम 'आ' के स्थान पर 'ए' का प्रयोग करने से बनता है।

उदाहरण : लड़का-लड़के, खिलौना-खिलौने, कौआ-कौए, कुत्ता-कुत्ते, पंखा-पंखे, रास्ता-रास्ते,

- उपर्युक्त नियम निम्नलिखित तीन प्रकार के शब्दों पर लागू नहीं होता। उनके एकवचन और बहुवचन रूप एक से रहते हैं।

(क) संबंधसूचक शब्द जैसे-मामा, चाचा, नाना, बाबा आदि।

(ख) कुछ पदसूचक शब्द जैसे-दरोगा, ओझा, दादा आदि।

(ग) संस्कृत के कुछ पुल्लिङ्ग शब्द जैसे - राजा, युवा, देवता आदि।

(2) आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों को छोड़कर शेष सभी अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, और ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के दोनों वचनों में रूप समान रहते हैं।

जैसे : - अकारान्त : घर-घर, बालक-बालक, छात्र-छात्र

- इकारान्त : मुनि-मुनि, कवि-कवि, पति-पति

- ईकारान्त : आदमी - आदमी, योगी-योगी, माली-माली

- उकारान्त : गुरु-गुरु, साधु-साधु, पशु-पशु

- ऊकारान्त : हिंदू-हिंदू, बाबू-बाबू, चाकू-चाकू

(3) अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'अ' के स्थान पर 'एँ' जोड़ने से बहुवचन संज्ञाएँ बनती हैं।

जैसे : रात-रातें, औरत-औरतें, पुस्तक-पुस्तकें, बहन-बहनें, किताब-किताबें, भैंस, भैंसें

(4) आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'ए' जोड़ने से बहुवचन संज्ञाएँ बनती हैं।

जैसे : कन्या-कन्याएँ, लता-लताएँ, शिक्षिका-शिक्षिकाएँ, भाषा-भाषाएँ, महिला-महिलाएँ, सेना-सेनाएँ

(5) इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'याँ' जोड़ने से बहुवचन संज्ञाएँ बनती हैं।

जैसे : स्मृति-स्मृतियाँ, विधि-विधियाँ, तिथि-तिथियाँ, राशि-राशियाँ, नीति-नितियाँ, लिपि-लिपियाँ

(6) ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के अंत में 'ई' को 'इ' कर दिया जाता है और 'याँ' जोड़ दिया जाता है।

जैसे : स्त्री-स्त्रियाँ, रोटी-रोटियाँ, रानी-रानियाँ, लड़की-लड़कियाँ, तितली-तितलियाँ, चाबी-चाबियाँ

(7) 'या' से अंत होनेवाले स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के अंत में अनुनासिक (ँ) जोड़कर बहुवचन बनता है।

जैसे : बुढ़िया-बुढ़ियाँ, चिड़िया-चिड़ियाँ, लुटिया-लुटियाँ, गुड़िया-गुड़ियाँ, कुतिया-कुतियाँ, पुडिया-पुडियाँ

(8) उकारान्त, औकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में एँ जोड़ने से बहुवचन बनता है।

जैसे : धातु-धातुएँ, धेनु-धेनुएँ, गौ-गौएँ

(9) उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'ऊ' को 'उ' करके 'एँ' जोड़ने से बहुवचन बनता है।

जैसे : वधू-वधुएँ, बहू-बहुएँ

(10) अरबी शब्दों के बहुवचन -

जैसे : कागज़-कागज़ात, साहब-साहबान, ख्याल-ख्यालात, मकान-मकानात

: आपकी प्रगति जाँचिए :

- निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों का वचन बदलकर वाक्यों को दुबारा लिखिए।

- मेरी किताब कहाँ है ?
- पुस्तक के पृष्ठ पर मत लिखो।
- मेरी सहेली ने तस्वीर खरीदी।
- वृक्ष की डाल पर चिड़िया बैठी है।

- निम्नलिखित शब्दों का वचन परिवर्तन करके उन्हें वाक्य में प्रयोग कीजिए।

गमला, माला, कहानी, तिथि, डिबिया, चूड़ी, सेना, वस्तु, गौ, कौआ, नेता, राजा, कला, आँख, कुत्ता

(छ) लिंग :

- शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में 'लिंग' कहते हैं।
- हिन्दी में लिंग के दो भेद हैं : (1) पुल्लिंग और (2) स्त्रीलिंग। शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष-जाति के होने का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं और शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

जैसे :

- **पुल्लिंग** : नर, लड़का, शिक्षक, पिता, भाई, शेर, कुत्ता आदि।
- **स्त्रीलिंग** : नारी, लड़की, शिक्षिका, माता, भाभी, शेरनी, कुतिया आदि।
- गुजराती भाषा में पुल्लिंग या नपुंसकलिंग शब्द हिन्दी भाषा में स्त्रीलिंग :

• બરફ	- बर्फ	• નાક	- नाक	• પાટલૂન	- पतलून
• ખમીશ	- कमीज़	• રિપોર્ટ	- रिपोर्ट	• ચોરો	- चौपाल
• આત્મા	- आत्मा	• ફાનસ	- लालटेन	• પોલીસ	- पुलिस
• અવાજ	- आवाज़	• દેહ	- देह	• પિયેક	- तमीज़
• રજવાડું	- रियासत	• વરસાદ	- बरसात	• આંતરડું	- आँत
• જ્ઞાન	- ज्ञान	• અગ્નિ	- अग्नि	• મરચું	- मिर्च
• પાથો	- नींव	• ખડિયો	- दवात	• ખોરાક	- खुराक
• શ્વાસ	- साँस	• ગભરાટ	- धबराहट	• દડો	- गेंद
• વિજય	- विजय	• મહિમા	- महिमा	• બખ્તર	-ज़िरह

- गुजराती भाषा में स्त्रीलिंग शब्द हिन्दी भाषा में पुल्लिंग :

• જાળ	- जाल	• સુડી	- सरौती	• મોસમ	- मौसम
• કોલેજ	- कॉलेज़	• ફેણ	- फन	• સફર	- सफ़र
• નવલકથા	- उपन्यास	• હોસ્પિટલ	- अस्पताल	• ફર્જ	- फ़र्ज
• દ્રાક્ષ	- अंगूर	• ભૂલ	- कसूर	• મજા	- मज़ा
• મકાઈ	- मक्का	• પરીક્ષા	- इम्तहान	• ટિકિટ	- टिकट

- लिंग परिवर्तन के नियम :

(1) अकारान्त पुल्लिंग शब्दों को 'आ' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बनते हैं।

तनय-तनया, प्रियतम-प्रियतमा, भवदीय-भवदीया, छात्र-छात्रा, बाल-बाला, आत्मज-आत्मजा, आचार्य-आचार्या

(2) अकारान्त पुल्लिंग शब्दों को 'ई' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बनते हैं।

देव-देवी, तरुण-तरुणी, मेढ़क-मेढ़की, कुमार-कुमारी, हिरन-हिरनी, दास-दासी, पुत्र-पुत्री

(3) अकारान्त पुल्लिंग शब्दों में 'इन' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बनते हैं।

लुहार-लुहारिन, थानेदार-थानेदारिन, नाग-नागिन, बाघ-बाघिन, साँप-साँपिन, कुम्हार-कुम्हारिन, मालिक-मालकिन

(4) कुछ अकारान्त पुल्लिंग शब्दों में 'नी' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बनते हैं।

जादूगर-जादूगरनी, मोर-मोरनी, शेर-शेरनी, ऊँट-ऊँटनी, मास्टर-मास्टरनी, मजदूर-मजदूरनी

(5) कुछ अकारान्त पुल्लिंग शब्दों में 'आनी', 'आणी' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बनते हैं।

देवर-देवरानी, सेठ-सेठानी, इंद्र-इंद्राणी, जेठ-जेठानी, मेहतर-मेहतरानी, क्षत्रिय-क्षत्रियाणी

(6) कुछ अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में 'इका' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिङ्ग बनते हैं ।

लेखक-लेखिका, पाठक-पाठिका, गायक-गायिका, दर्शक-दर्शिका, शिक्षक-शिक्षिका, अध्यापक-अध्यापिका

(7) आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों को ईकारान्त करने पर स्त्रीलिङ्ग बनते हैं ।

बच्चा-बच्ची, घोड़ा-घोड़ी, भतीजा-भतीजी, लड़का-लड़की, नाना-नानी, मामा-मामी

(8) कुछ आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अंत के 'ता' को 'त्री' करने से स्त्रीलिङ्ग बनते हैं ।

कर्ता-कर्त्री, नेता-नेत्री, विधाता-विधात्री, वक्ता-वक्त्री, अभिनेता-अभिनेत्री, दाता-दात्री

(9) कुछ आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त के 'आ' को हटाकर 'इया' प्रत्यय जोड़ने से वे स्त्रीलिङ्ग बनते हैं ।

बूढ़ा-बुढ़िया, कुत्ता-कुतिया, बेटा-बिटिया, लोटा-लुटिया, डिब्बा-डिबिया, मुन्ना-मुनिया

(10) कुछ ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में अन्त के 'ई' को हटाकर 'इन' प्रत्यय लगाने से वे स्त्रीलिङ्ग बनते हैं ।

धोबी-धोबिन, दर्जी-दर्जिन, तेली-तेलिन, तम्बोली-तम्बोलिन, भिखारी-भिखारिन, माली-मालिन

(11) 'आन' प्रत्ययवाले पुल्लिङ्ग शब्दों की जगह 'ती' प्रत्यय लगाने से वे स्त्रीलिङ्ग बनते हैं ।

भगवान-भगवती, बलवान-बलवती, भाग्यवान-भाग्यवती, श्रीमान्-श्रीमती, चरित्रवान-चरित्रवती

(12) कुछ पुल्लिङ्ग शब्दों में 'आइन' प्रत्यय जोड़ने से वे स्त्रीलिङ्ग बनते हैं ।

ठाकुर-ठाकुराइन, गुरु-गुरुआइन, चौधरी-चौधराइन, बाबू-बाबुआइन, पंडित-पंडिताइन, बनिया-बनियाइन

(13) कई 'ईकारान्त शब्दों में' 'इणी' या 'इनी' जोड़ने से वे स्त्रीलिङ्ग बनते हैं ।

विधार्थी-विधार्थिनी, अभिमानी-अभिमानिनी, अधिकारी-अधिकारिणी, हाथी-हाथिनी, तपस्वी-तपस्विनी, आज्ञाकारी-आज्ञाकारिणी, स्वामी-स्वामिनी, हितकारी-हितकारिणी

(14) कुछ पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप अनियमित रूप से बनते हैं,

जैसे : साधु-साध्वी, भाई-भाभी, सम्राट-सम्राज्ञी, साला-सलहज, विधुर-विधवा, कवि-कवयित्री, विद्वान-विदुषी, ससुर-सास, वीर-वीरांगना, बुआ-फूफा, मियाँ-बीबी, ताऊ-ताई

: आपकी प्रगति जाँचिए :

- रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्यों को दुबारा लिखिए ।

1. काला कुत्ता चूहे पर झपटा ।
2. सम्राट ने विद्वान कवि को सम्मानित किया ।
3. वृद्ध धोबी साँप से डर गया ।
4. वनवासी तपस्वी बहुत बुद्धिमान है ।
5. युवक बहुत अच्छा गायक है ।

- निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन करके उन्हें वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

दास, स्वामी, विद्वान, बाबू, बूढ़ा, शेर, पंडित, भैंस, लेखक

(ज) अव्यय :

- ‘अव्यय’ का अर्थ है-अ+व्यय। अर्थात् जो व्यय न हो, अर्थात् जिसका स्वस्व सदा एक सा रहे।
- निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और समझिए।

- (1) भार्गव धीरे-धीरे चलता है।
- (2) लड़के धीरे-धीरे चलते हैं।
- (3) लड़की धीरे-धीरे चलती है।
- (4) लड़कियाँ धीरे-धीरे चलती हैं।
- (5) वह धीरे-धीरे चला।

उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ने से पता चलता है कि लिंग, वचन, और काल बदलने पर भी ‘धीरे-धीरे’ शब्द में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अतः ऐसे शब्द जो किसी लिंग, वचन काल आदि से प्रभावित न होकर, एक जैसे बने रहते हैं, उन्हें ‘अव्यय’ कहा जाता है।

- ‘अव्यय’ शब्द चार प्रकार के होते हैं : (1) क्रियाविशेषण अव्यय (2) संबंधबोधक अव्यय (3) समुच्चयबोधक अव्यय और (4) विस्मयादिबोधक अव्यय। अब इन चार प्रकार के बारे में समझेंगे।

(1) क्रियाविशेषण अव्यय : जो शब्द क्रिया की विशेषता है, उसे ‘क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।’

- जैसे :
- कालवाचक क्रियाविशेषण : प्रातः, सायं, अब, लगातार, हमेशा आदि।
 - स्थानवाचक क्रियाविशेषण : यहाँ, बाहर, आगे, पीछे, इधर, उधर, भीतर, नीचे, पास, बाएँ आदि।
 - परिमाणवाचक क्रियाविशेषण : थोड़ा, बहुत, अधिक, पर्याप्त आदि।
 - रीतिवाचक क्रियाविशेषण : अचानक, तेजी-से, सहसा, शांतिपूर्वक आदि।

- **उदाहरण :**

- सानिया हमेशा कार्यालय जाती है।
- वंदना भीतर बैठी है।

(2) संबंधबोधक अव्यय : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त किए जाते हैं तथा वाक्य के अन्य संज्ञा, सर्वनाम या अन्य शब्दों के साथ संबंध का बोध कराते हैं, वे ‘संबंधबोधक अव्यय’ हैं।

जैसे : के साथ, के बाद, के कारण, की अपेक्षा, की जगह, के लिए, के अनुसार आदि।

- **उदाहरण :**

- राम के साथ लक्ष्मण भी वन में गए।
- हमारे घर के आगे मस्जिद है।

(3) समुच्चयबोधक अव्यय : दो वाक्यों, वाक्यांशों अथवा शब्दों को परस्पर मिलानेवाले शब्द को ‘समुच्चयबोधक अव्यय’ कहा जाता है।

जैसे : और, तथा, किन्तु, अथवा, इसलिए आदि।

- **उदाहरण :**

- संजय और निलेश गांधीनगर गए।
- यद्यपि वह निर्धन है, तथापि उदार है।

(4) **विस्मयादिबोधक अव्यय** : जो शब्द विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, शोक, प्रशंसा, घृणा, शोक, भय आदि भावों को प्रकट करने के लिए हमारे मुख से स्वतः निकल पड़ते हैं, वे 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहे जाते हैं।

जैसे :

विस्मय - अरे ! क्या ! ओह ! आदि।

शोक - हाय, हे राम ! उफ् आदि

हर्ष - वाह ! शाबाश ! आदि

प्रशंसा - धन्य ! सुंदर ! शाबाश ! आदि !

घृणा - छिः ! छिः छिः ! आदि।

भय - बाप रे ! बाप रे बाप ! ओह ! आदि।

• **उदाहरण :**

- वाह ! कितना सुन्दर बालक।

- बाप रे ! इतना लम्बा साँप।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

• निम्नलिखित वाक्यों में से अव्यय छाँटकर उसका भेद बताइए।

1. अंजली, सोनल के आगे बैठी है।
2. मीनाक्षी और सालवी गाँव जा रही हैं।
3. अरे ! क्या बात कर रहे हो ?
4. आज मोहन की जगह राहुल खेलेगा।
5. आज मैंने बहुत कम खाया।

(झ) उपसर्ग :

- वे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन कर देते हैं वे 'उपसर्ग' कहलाते हैं। जैसे-

● दुर्+गुण = दुर्गुण ● स्व+देश = स्वदेश ● वि+योग = वियोग ● निर्+गुण = निर्गुण

उपर्युक्त उदाहरण में 'गुण' शब्द से पूर्व 'दुर्' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द 'दुर्गुण', 'स्व' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द 'स्वदेश', 'वि' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द 'वियोग' और 'निर्' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द 'निर्गुण' बना। अतः यहाँ 'दुर्', 'स्व', 'वि', 'निर्' - उपसर्ग हैं।

• हिन्दी के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अ	अभाव, निषेध, कभी नहीं	अज्ञान, अगम, अमर, अछूत, अचेत
अन	अभाव, निषेध	अनपढ़, अनमोल, अनजान, अनबन
अध	आधा	अधपका, अधखिला, अधमरा
औ	हीन, निषेध	औगुन, औघट, औढ़र
क/कु	बुरा, बुराई	कपूत, कुचाल, कुपात्र, कुकर्म
दु	कम, बुरा	दुबला, दुश्चरित्र, दुकाल, दुखद
नि	निषेध, अभाव	निडर, निकम्मा, निहत्था, निठल्ला
बिन	अभाव, निषेध	बिनदेखा, बिनब्याहा, बिनबोला, बिनबात
भर	पूरा	भरपूर, भरसक, भरपेट, भरमार
स	अच्छा, सहित	सपूत, सचेत, सहर्ष, सजातीय
सु	उत्तमता, साथ	सुडौल, सुजान
पर	अधिक, आगे	परपोता, परदादा
न	अभाव	नपूता, नपूती

(ट) प्रत्यय :

- ऐसे शब्दांश जो शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं और उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, वे 'प्रत्यय' कहलाते हैं। जैसे -

लड़+आई=लड़ाई; चाचा+ई=चाची; दया+आलु=दयालु

उपर्युक्त उदाहरणों में 'लड़' 'चाचा' और 'दया' शब्दों में क्रमशः 'आई', 'ई' तथा 'आलु' शब्दांशों का प्रयोग करके नए शब्द बनाए गए हैं। अतः यहाँ 'आई', 'ई' तथा 'आलु' - प्रत्यय हैं।

- प्रत्यय और उसके योग से बने शब्दों के उदाहरण :

प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
अकड़	पी, घूम, भूल	पियकड़, घुमकड़, भुलकड़
ऊ	खा, कमा, बिक	खाऊ, कमाऊ, बिकाऊ
औना	बिछ, खेल	बिछौना, खिलौना
आई	उतर, बुन, पढ़, लड़	उतराई, बुनाई, पढ़ाई, लड़ाई
आवट	लिख, दिख, मिल	लिखावट, दिखावट, मिलावट
आहट	चिल्ला, गड़गड़	चिल्लाहट, गड़गड़ाहट
कर	सुन, पढ़, लिख	सुनकर, पढ़कर, लिखकर
ई	चाचा, लड़का	चाची, लड़की
आ	शिष्य, बाल,	शिष्या, बाला
नी	शेर, मोर	शेरनी, मोरनी
कार	चित्र, पत्र	चित्रकार, पत्रकार
ई	क्रोध, कीमत	क्रोधी, कीमती
ईय	दर्शन, प्रार्थना	दर्शनीय, प्रार्थनीय
ल	दया, श्रद्धा	दयालु, श्रद्धालु
वती	गुण, बल	गुणवती, बलवती

: आपकी प्रगति जाँचिए :

1. किन्हीं चार उपसर्ग चुनकर उन उपसर्गों के योग से बने चार-चार शब्द बताइए।
2. किन्हीं चार प्रत्यय चुनकर उन प्रत्ययों के योग से बने चार-चार शब्द बताइए।

(ठ) विराम चिह्न :

- बातचीत करते समय हम सभी शब्दों या वाक्यों को समान बल देकर नहीं बोलते। बीच-बीच में साँस लेने या किसी कथन पर बल देने के लिए, किसी बात को अच्छी तरह से समझाने के लिए थोड़ा रुकना पड़ता है। रुकने की इसी प्रक्रिया का नाम 'विराम' है। वैसे ही जब हम अपनी बात लिखकर प्रकट करते हैं, तो भाषा के लिखित रूप में स्थान विशेष पर बल देने, रुकने, उतार-चढ़ाव आदि को दिखाने के लिए विभिन्न प्रकार के चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें 'विरामचिह्न' कहा जाता है।
- हिन्दी में प्रयोग किए जानेवाले प्रमुख विराम-चिह्न :

(1) पूर्ण विराम : [Full Stop (.)] :

इसका प्रयोग वाक्य पूर्ण होने पर होता है। हालाँकि विस्मयादिवाचक तथा प्रश्नवाचक के अंत में पूर्णविराम का प्रयोग नहीं किया जाता; जैसे-

- मोहन ने पत्र लिखा।
- सीता स्कूल नहीं गई।

(2) प्रश्नवाचक चिह्न : [Mark of Interrogation (?)]:

प्रश्नसूचक वाक्यों के अंत में यानि कोई जानकारी प्राप्त करने हेतु उपयोग में लिए जानेवाले वाक्य के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

- तुम क्या करते हो ?
- आप मुझे किसको दक्षिणा में दे रहे हैं ?

(3) विस्मयादिबोधक चिह्न [Mark of Exclamation (!)] :

आश्चर्य, घृणा, प्रसन्नता, क्रोध आदि मनोभावों को प्रकट करने के लिए विस्मयवाचक शब्दों के बाद, संबोधन में संबोधन शब्द के बाद एवं विस्मय का भाव दिखाने के लिए वाक्य के अंत में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

- वाह ! आप बहुत सुंदर हैं।
- अध्यक्ष महोदय ! अब हमारी बात भी सुनिए।
- तुम जाओगे जयपुर !

(4) अल्पविराम [Comma (,)] :

वाक्य में जहाँ थोड़ी देर के लिए रुकना पड़े, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है। अल्पविराम का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है; जैसे-

- किसी वाक्य में प्रयुक्त समान शब्दों को अलग करने के लिए-
- धवल, आनंद, हेमंत और भार्गव पढ़ रहे हैं।

- उपवाक्यों को अलग करने के लिए -
- जो परिश्रमी होते हैं, वही सफलता प्राप्त करते हैं।
- संबोधन को शेष वाक्य से अलग करने के लिए -
- मित्रो, आज मैं आपसे बिदा ले रहा हूँ।
- उद्धरण से पहले -
सुभाषचंद्र बोस ने कहा, “‘तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।’”
- वाक्य में प्रयुक्त शब्द-युग्मों को एक-दूसरे से अलग करने के लिए -
सुख-दुःख, हानि-लाभ, यश-अपयश सब भाग्य पर निर्भर हैं।
- हाँ या नहीं के पश्चात् -
- हाँ, मैं भी आपके साथ चलूँगा।
- नहीं, तुम्हें यह शोभा नहीं देता।

(5) अर्द्धविराम [Semi-colon (;)] :

जब अल्पविराम से थोड़ा अधिक और पूर्णविराम से थोड़ा कम रूकने की आवश्यकता हो, तो वहाँ अर्द्धविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

- कठिन परिश्रम करो; परीक्षा निकट है।
- आज वह विद्यालय नहीं आ सका; क्योंकि उसे बुखार है।

(6) अपूर्ण विराम या उपविराम [Colon (:)] :

अपूर्ण विराम का प्रयोग दो स्थितियों में होता है।

- शीर्षकों में; जैसे -
कम्प्यूटर : आज के युग की अनिवार्यता
होली : रंगों का त्योहार
- निर्देश देने के लिए, जैसे-
सभी ओर आवाज़ें सुनाई दे रही थीं : दे दान छूटे गिरान।

(7) योजक चिह्न [Hyphen (-)] :

योजक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है।

- सामासिक शब्दों में; जैसे-
सुख-दुःख, माता-पिता, देश-विदेश, किस्से-कहानियाँ
- तुलनावाचक 'सा/सी/से' पूर्व; जैसे -
- सबसे बड़ी आकांक्षा यह थी कि एकांत में रहकर एक बड़ा-सा उपन्यास लिख डालूँगा।

(8) निर्देशक चिह्न [Dash (–)] :

इस चिह्न को रेखिका भी कहते हैं। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है -

- संवादों में (नामों के तुरन्त बाद) जैसे -
ग्राहक – इस किताब का मूल्य क्या है ?
दुकानदार – यह बीस रुपए की है।
- किसी पद या वाक्यांश की व्याख्या करने के लिए, जैसे-
मोहन ने अपने मित्रों – राकेश, अविनाश, आकाश से रुपये माँगे।

(9) अवतरण चिह्न [Inverted comma (‘ ’ या “ ”)] :

अवतरण चिह्न को उद्धरण चिह्न भी कहा जाता है। यह चिह्न दो प्रकार का होता है।

- (1) **इकहरा अवतरण चिह्न (‘ ’) :** इस चिह्न का प्रयोग किसीके उपनाम, रचना या पुस्तक के शीर्षक आदि को उद्धृत करते समय किया जाता है; जैसे-
-सूर्यकान्त त्रिपाठी का उपनाम ‘निराला’ है।
- ‘समझदार नन्ही’ इकाई के लेखक हैं - शंकर सुलतानपुरी।
- (2) **दुहरा अवतरण चिह्न (“ ”) :** किसी व्यक्ति के कथन को मूल रूप में उद्धृत करने के लिए दुहरे अवतरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जैसे-
-महात्मा गांधीजी ने कहा है कि, “‘प्रार्थना ही आत्मा की खुराक है।’”

(10) कोष्ठक [Brackets ()] :

कोष्ठक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है -

- किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने के लिए, जैसे-
अध्ययन (पढ़ना) हर क्षेत्र में लाभ देता है।
- एकांकी अथवा नाटक में रंगमंचीय संकेतों को स्पष्ट करने के लिए; जैसे-
सैनिक (प्रणाम करते हुए) - महाराज की जय हो।
राजा (प्रसन्न होकर) तुम्हें अवश्य पुरस्कृत किया जाएगा।

(11) हंसपद या त्रुटिपूरक चिह्न [Sign of left word (^)] :

वाक्य में जब कोई शब्द छूट जाता तब इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे-

महाभारत के रचयिता वेदव्यास जी हैं।

(12) लाघव या संक्षेपसूचक चिह्न [Abbreviation (o)] :

शब्दों के संक्षिप्त रूप दर्शाने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जैसे-

- डॉक्टर यशपालजी - डॉ. यशपालजी

: आपकी प्रगति जाँचिए :

- उपर्युक्त उल्लिखित विरामचिह्नों का प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाइए।
- निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उपयुक्त विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए :
 1. माँ मैं उसकी गंदी आदत छूड़ाकर रहूँगी
 2. ओह मैं तो एकदम भुलकड़ हो गई हूँ पर माँ आपने मुझे तो कोई काम सौंपा ही नहीं
 3. गिलास में थोड़ा सा शरबत डाला है
 4. किसान बोला तो फिर तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ
 5. पू. बापु ने कहा है कि सत्य ही ईश्वर है

(ड) शब्दकोश :

- कोश अर्थात् खजाना। इसलिए शब्दकोश उन ग्रंथों को कहते हैं जिनमें शब्दों का संग्रह किया गया हो।
- भाषा के आधार पर कोश के तीन प्रकार माने जाते हैं -
 - (i) **एक भाषी कोश** : इनमें एक भाषा के शब्दों के अर्थ उसी भाषा में दिए जाते हैं। हिन्दी में 'हिन्दी शब्दसागर,' 'बृहद् हिन्दी कोश' तथा 'मानक हिन्दी कोश' आदि इसी प्रकार के हैं।
 - (ii) **द्विभाषी कोश** : इसके अंतर्गत एक भाषा के शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में दिए जाते हैं। इनमें हिन्दी के संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय है - संस्कृत-हिन्दी कोश, बृहद् अंग्रेजी-हिन्दी कोश, गुजराती-हिन्दी कोश, हिन्दी-तमिल कोश, उर्दू-हिन्दी कोश, उर्दू-गुजराती कोश आदि।
 - (iii) **बहुभाषी कोश** : यह कोश एक भाषा के शब्दों का एक से अधिक अन्य भाषाओं में अर्थ प्रस्तुत करते हैं। भारत सरकार का केन्द्रीय हिन्दी दिनेशालय, नई दिल्ली इस प्रकार के कोशों के लिए विशेषरूप से कार्यरत है। जिसके अंतर्गत मराठी-हिन्दी-अंग्रेजी, गुजराती-हिन्दी-अंग्रेजी आदि कई कोश प्रकाशित हैं।
- **हिन्दी कोश देखने की विधि :**
 - ❖ हिन्दी कोश में सबसे पहले स्वर फिर व्यंजन युक्त शब्द आते हैं।
 - ❖ हिन्दी कोशों में वर्णक्रम इस प्रकार है -
 - **स्वर** : अं, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
 - **व्यंजन** : क, क्ष, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त-त्र, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह
 - इस क्रम में पहले अक्षर के साथ मात्रा लगाने का क्रम इस प्रकार है - कं, क, कां, का, किं, कि, कीं, की, कुं, कु, कूं, कू, कृं, कृ, कैं, के, कै, कौं, को, कौ, कौ
 - मात्राओं के बाद संयुक्त अक्षर का क्रम इस प्रकार रहता है - क्ख, क्त, कथ, क्य, क्र, क्ल, क्व, क्श, क्ष,
 - शब्दकोश में शब्द के बाद कौंस में उन शब्दों के लिंग, वचन, विशेषण, क्रियाविशेषण, अव्यय, सर्वनाम, क्रियापद आदि के बारे में भी उल्लेख किया जाता है।
- जैसे - पुस्तक (स्त्री.), कागज़ (ए.व.), वफ़ादार (वि.), धीरे-धीरे (अ.) गाना (क्रि.) आदि...

: आपकी प्रगति जाँचिए :

• **शब्दकोश क्रम में लिखिए।**

1. कयामत, कंगन, क्यारी, क्रम, कृपा
2. अंगद, क्षमा, औरत, जमानत, ज्ञानी
3. अमानत, ज़माना, औषध, ऋग्वेद, श्रवण

(ढ) मुहावरे:

- जब कोई वाक्यांश अपने साधारण (शाब्दिक) अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को व्यक्त करे, तो उसे मुहावरे कहते हैं। जैसे नीचे दिए गए उदाहरणों पर ध्यान दीजिए -

मुहावरा	शाब्दिक अर्थ	विशेष अर्थ
- आग में घी डालना	अग्नि में घृत डालना	क्रोध को भड़काना
- नाक काटना	नाक का कट जाना	इज्जत चली जाना

❖ **मुहावरों की विशेषताएँ :**

- मुहावरा पूरा वाक्य नहीं बल्कि वाक्यांश होता है।
- मुहावरा अपने शाब्दिक अर्थ की जगह किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
- मुहावरे का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जाता बल्कि इसका प्रयोग वाक्य के मध्य में किया जाता है।
- मुहावरे का अर्थ प्रसंग के अनुसार होता है।
- मुहावरों के मूल रूप में कभी परिवर्तन नहीं होता। जैसे 'आँखें दिखाना' एक मुहावरा है। यदि इसके स्थान पर 'आँखें चुराना' प्रयोग किया जाए, तो यह अशुद्ध होगा।

❖ **पाठ्यपुस्तक में उल्लिखित मुहावरों के उदाहरण :**

- **अनसुनी करना** - ध्यान न देना।
- **थिरकने लगना** - खुशी से नाचने लगना।
- **आँखों का तारा होना** - बहुत प्यारा होना।
- **पीठ थपथपाना** - शाबाशी देना।
- **प्राण न्योछावर करना** - जीवन समर्पित करना।
- **नौ-दो ग्यारह होना** - भाग जाना।
- **हक्का-बक्का रह जाना** - चकित होना।
- **जबान काट लेना** - वचन भंग करना।
- **डाका डालना** - चोरी करना।
- **पानी-पानी हो जाना** - बहुत लज्जित हो जाना।

(ण) कहावतें :

- कहावत लोक से संबंधित है, इसलिए इसका नाम 'लोकोक्ति' भी है। लोकोक्ति शब्द दो शब्दों के मेल से बना है - लोक + उक्ति। जिसका अर्थ है - लोक में प्रचलित उक्ति या कथन। ऐसा कथन जो व्यापक लोक अनुभव पर आधारित हो, 'लोकोक्ति' या 'कहावत' कहलाता है।
- हम लोगों को चाहिए कि हम दूसरों के लिए जिँ। जो तन-मन-धन से परोपकार करते हैं, वे ही धन्य हैं, यदि अपने के लिए ज न म गँवा दिया जाय तो क्या किया ? अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।

उपर्युक्त अनुच्छेद में 'अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है' - कहावत है। जो अर्थ का पूर्ण रूप से स्पष्ट करनेवाला स्वतंत्र वाक्य है। जिसका उपयोग किसी कही हुई बात के समर्थन में प्रयुक्त होता है।

❖ पाठ्यपुस्तक में उल्लिखित कहावतों के उदाहरण :

- कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली - दो व्यक्तियों की स्थितियों में अंतर होना।
- एक तो करेला, ऊपर से नीम चढ़ा - एक दोष के साथ-साथ दूसरा दोष भी लग जाना।
- मन चंगा तो कठौती में गंगा - हृदय की पवित्रता हो तो घर में ही तीर्थयात्रा का लाभ मिल सकता है।
- आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास - अच्छा काम छोड़कर महत्वहीन काम में लग जाना।
- बोया पेड बबूल का आम कहाँ ते होय - बुरे कामों का अच्छा फल नहीं मिलता।
- होनहार बिरवान के होते चीकने पात - योग्य व्यक्ति के लक्षण बचपन से ही प्रकट होने लगते हैं।
- जैसी करनी वैसी भरनी - जो जैसा करता है उसे उसी के अनुसार फल भोगना पड़ता है।
- जिसकी लाठी उसकी भैंस - शक्तिशाली की ही जीत होती है।

3.3.4. व्याकरण शिक्षण : पद्धति - प्रयुक्तियाँ :

❖ व्याकरण शिक्षण की पद्धतियाँ :

(1) आगमन पद्धति :

इस पद्धति में शिक्षक व्याकरण के मुद्दों के विषयक उदाहरण छात्रों के सामने रखते हैं। छात्र दिये गए उदाहरणों का अभ्यास करके उनकी समानता का अंदाज़ लगाता है। उदाहरण से नियमीकरण करके स्वयं स्पष्टीकरण या प्रयोग करते हैं।

संक्षेप में, उदाहरण से नियम या संकल्पना स्पष्ट करना ही आगमन पद्धति है। इस पद्धति में शिक्षक छात्रों को स्थूल से सूक्ष्म की ओर तथा विशेष से सामान्य की ओर ले जाता है। अतः यह पद्धति तार्किक, मनोवैज्ञानिक और रसप्रद है।

(2) निगमन पद्धति :

इस पद्धति में छात्रों को पहले व्याकरण का कोई एक सूत्र या सिद्धांत दिया जाता है। बाद में उस सूत्र या सिद्धांत को समझाने के लिए कुछ उदाहरण दिये जाते हैं। अर्थात् इस पद्धति में शिक्षण कार्य सामान्य से विशेष की ओर सूत्र के उपयोग द्वारा होता है।

❖ व्याकरण शिक्षण की प्रयुक्तियाँ :

(1) निदर्शन प्रयुक्ति : इस प्रयुक्ति में शैक्षणिक साधन - सामग्री का असरदार उपयोग करके व्याकरण सिखाया जाता है।

उदाहरण :

- पर्ची द्वारा : मुहावरे, लिंग, वचन, समानार्थी, विरुद्धार्थी, कहावतें, शब्दसमूह के लिए एक शब्द आदि मुद्दे सीखा सकते हैं।

- तास के पत्ते द्वारा : समानार्थी, विरुद्धार्थी, मुहावरे, कहावतें आदि सिखा सकते हैं।
- चित्र, नमूने, फ्लैशकार्ड द्वारा : यह, ये, वह, वे, मैं, हम, आप जैसी भाषा रचना गठन तैयार करके सिखा सकते हैं।
- रोलवाला साधन : संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि सिखा सकते हैं।

(2) प्रश्नोत्तर प्रयुक्ति : शिक्षक-छात्र और छात्र-छात्र के बीच परस्पर प्रश्नोत्तर करके सिखाना प्रश्नोत्तर प्रयुक्ति है। इस प्रयुक्ति से शब्द चर्चा, शब्द निर्माण, संज्ञा, सर्वनाम, वचन, लिंग आदि सिखा सकते हैं।

3.4. इकाई का सारांश :

भाषा शिक्षा में व्याकरण का बहुत ही महत्त्व है। व्याकरणिक अनुभव से भाषा शैली ऊच्चारण, अभिव्यक्ति, लेखन कौशल का विकास होता है। अतः व्याकरण अलग रूप से पढ़ाने के बजाय विषयवस्तु के साथ आगमन पद्धति से पढ़ाना चाहिए। व्यावहारिक व्याकरण भाषा विकास का अविभाज्य अंग है।

3.5. समझ जाँचनेवाले प्रश्न :

प्रश्न-1 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. संज्ञा की व्याख्या देकर उसके भेद स्पष्ट कीजिए।
2. सर्वनाम किसे कहते हैं ? उसके भेद समझाइए।
3. विशेषण की व्याख्या देकर उसके भेद संक्षेप में समझाइए।
4. क्रिया किसे कहते हैं ? क्रिया के काल निर्देश करके उनके दो-दो उदाहरण लिखिए।
5. लिंग परिवर्तन के किन्हीं चार नियम उदाहरण के साथ समझाइए।
6. वचन परिवर्तन के किन्हीं चार नियम उदाहरण के साथ समझाइए।
7. अव्यय किसे कहते हैं ? अव्यय के भेद समझाइए।
8. उपसर्ग और प्रत्यय का भेद स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न - 2 सूचना अनुसार उत्तर दीजिए।

(अ) टिप्पणी लिखिए।

- (1) व्यावहारिक व्याकरण की संकल्पना और अर्थ
- (2) शब्दकोश का उपयोग
- (3) विरामचिह्नों का महत्त्व

(ब) विस्तृत उत्तर दीजिए।

- (1) व्याकरण शिक्षण का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
- (2) विरामचिह्न किसे कहते हैं ? हिन्दी में प्रयुक्त विरामचिह्नों को उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

3.6. संदर्भ साहित्य :

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना

3.7. प्रायोगिक कार्य :

1. कक्षा 5 से 8 में समाविष्ट व्याकरण के मुद्दों आधारित चार्ट्स बनाकर कक्षाकक्ष में लगाइए।
2. कक्षा 7 और 8 हिन्दी पाठ्यपुस्तक के व्याकरण के मुद्दों के सन्दर्भ में क्रियात्मक अनुसंधान कीजिए।



☐ इकाई का प्रारूप :

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ

4.3 विषयवस्तु

4.3.1 अर्थग्रहण (श्रवण, वाचन) सिखाने की विधियाँ

4.3.2 अभिव्यक्ति (कथन, लेखन) सिखाने की विधियाँ

4.3.3 सर्जनात्मकता का विकास करने की विधियाँ

4.3.4 व्यावहारिक उपयोजन सिखाने की विधियाँ

4.3.5 तार्किक चिंतन विकसित करने की विधियाँ

4.3.6 भाषा के प्रमुख उद्देश्यों का मूल्यांकन

4.4 इकाई का सारांश

4.5 समझ जाँचनेवाले प्रश्न

4.6 संदर्भ साहित्य

4.7 प्रायोगिक कार्य

4.1. प्रस्तावना :

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, भाषा विचार विनिमय का सशक्त उपकरण भी है। भाषा व्यक्तित्व का परिचायक है, अतएव प्रत्येक शिक्षा व्यवहारों में भाषा शिक्षा बुनियादी प्रक्रिया है। भाषा सभी विषयों की शिक्षा की रीढ़ की हड्डी है। अतएव भाषा शिक्षा समग्र शिक्षण का अविभाज्य अंग है।

4.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ :

☐ उद्देश्य :

प्रशिक्षणार्थी...

- भाषा के प्रमुख उद्देश्यों को समझें।
- भाषा के प्रमुख उद्देश्यों की क्षमता विकास की विधियाँ जाने।
- भाषा के उद्देश्यों की मूल्यांकन की विधियाँ जाने।

☐ अध्ययन निष्पत्तियाँ :

प्रशिक्षणार्थी...

- भाषा के प्रमुख उद्देश्यों की संकल्पना स्पष्ट कर सकेंगे।
- भाषा के प्रमुख कौशलों के विकास करने की विधियों का कक्षाध्यापन में प्रयोग कर सकेंगे।
- भाषा के कौशलों के मूल्यांकन की विधियों का प्रयोग कर सकेंगे।

4.3 विषय वस्तु :

4.3.1 अर्थग्रहण (श्रवण, वाचन) सिखाने की विधियाँ :

- ध्यानपूर्वक सुनकर सुनी हुई बात का बोध करना ही श्रवण अर्थग्रहण है। जबकि वाचन का अर्थ है- मुद्रित सामग्री को पढ़कर समझना। वाचन के दो प्रकार हैं - 1. मूक वाचन 2. मुख वाचन।
- श्रवण अर्थग्रहण सिखाने की विधियाँ :
 1. 'देखो और सुनो' विधि : इस विधि के अनुसार शिक्षक पुस्तक, चित्र आदि दिखाकर तत्विषयक बोलेगा। अध्येता सुनकर समझेंगे।
 2. 'सुनो और बताओ' विधि : शिक्षक अध्येता को कहानी, कविता, सूचनाएँ आदि सुनाएगा तत्पश्चात् इस विषय में प्रश्न करेगा, अध्येता उत्तर देगा।
 3. 'सुनिए और कीजिए' विधि : शिक्षक जो भी बोलेगा, तद्नुसार अध्येता को क्रिया करना होता है।
- वाचन अर्थग्रहण सिखाने की विधियाँ :
 1. ' देखो और कहो' विधि : हमारी पाठ्यपुस्तकों में चित्रवार्ता रखी जाती है। चित्र का वाचन कर तत्विषयक वर्णन करवाना ही ' देखो और कहो ' विधि है।
 2. 'पढ़ो और कहो' विधि : गद्यखण्ड, निबन्ध, कहानी, कविता आदि पढ़कर उसके सम्बन्ध में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देना।
 3. ' पढ़ो और करो' विधि : वाक्य, निर्देश, सूचना, आदेश आदि अध्येता के समक्ष मुद्रित स्वरूप में रखें तथा इन्हें पढ़कर तद्नुसार क्रिया करवाने की विधि-पढ़ो और करो विधि है।

4.3.2 अभिव्यक्ति (कथन और लेखन) सिखाने की विधियाँ :

- अभिव्यक्ति का सरल अर्थ है अपने मनोगत को व्यक्त करना। अपने मनोगत को दो प्रकार से व्यक्त किया जाता है। मौखिक अभिव्यक्ति (कथन) और (२) लिखित अभिव्यक्ति (लेखन)। इस प्रकार ये दोनों भाषाकीय कौशल हैं।
- कथन अभिव्यक्ति सिखाने की विधियाँ :
 - (1) आत्मप्रकाशन विधि : अध्येता को मुक्त रूप से अपने मनोगत को मौखिक रूपसे अभिव्यक्ति करने का अवसर प्रदान करना।
 - (2) चित्रवर्णन विधि : अध्येता को चित्र दिखाकर उसका मौखिक रूप से वर्णन करने के अवसर प्रदान करना।
 - (3) प्रश्नोत्तर विधि : शिक्षक तथा अध्येता के बीच संवाद-बातचीत का अवसर प्रदान करना। कभी अध्यापक प्रश्न करेगा तो कभी अध्येता प्रश्न करेगा।
 - (4) कहानी कथन विधि : अध्येता को कहानी कहने का अवसर देना।
 - (5) नाट्यीकरण विधि : विषयवस्तु का नाट्यीकरण करके अध्येता द्वारा इसे प्रस्तुत करना।
- लेखन अभिव्यक्ति विकास की विधियाँ :
 - (1) रेखांकन विधि : लिपि शिक्षा के प्रारंभ की यह विधि है। अध्येता के पास विविध आकारों की रेखाएँ खींचवाना और सिखाना।

- (2) **अनुकरण विधि** : अध्येता के सामने वर्णमाला, शब्द, वाक्य आदि के नमूने प्रस्तुत कर इसका अनुलेखन (अनुकरण) करवाना।
- (3) **श्रुतलेखन विधि** : अध्यापक अनुच्छेद, कहानी आदि सुनायेगा तथा सुनी हुई बात लिखाकर सीखाना।
- (4) **चित्रवर्णन विधि** : चित्र दिखाकर अध्येता को तत्विषयक वर्णन करवाना।

4.3.3 सर्जनात्मकता का विकास करने की विधियाँ :

सर्जनात्मकता का अर्थ है - कुछ नया सृजन करना, कुछ मौलिक सृजन करना, लीक से हटकर सोचना तथा अभिव्यक्ति करना। सर्जनात्मकता का विकास करने की विधियाँ प्रस्तुत हैं।

- (1) **अधूरा वाक्य पूर्ण करने की विधि** : इसमें अध्यापक अध्येता के समक्ष उद्दीपक स्वस्व एक अधूरा वाक्य रखेगा तथा इसे अपने मौलिक प्रयत्न से पूरा करने की सूचना देगा।
- (2) **शब्द संरचना** : अध्यापक कोई एक वर्ण देकर उस वर्ण के प्रयोग द्वारा अधिकतम शब्द संरचना करने के अवसर देगा।
- (3) **वाक्य संरचना** : अध्यापक उद्दीपक स्वस्व किसी चीज का नामोल्लेख करेगा तथा उस चीज के महत्तम उपयोग लिखने की सूचना देगा।
- (4) **चित्र पर से कहानी रचना** : चित्र दिखाकर उसके आधार पर कहानी लिखने का अवसर देगा।

4.3.4 व्यावहारिक उपयोजन सिखाने की विधियाँ :

भाषा का दैनंदिन व्यवहारों में उपयोग करना ही व्यावहारिक उपयोजन है। इसकी विधियाँ इस प्रकार हैं -

- (1) **नाट्य विधि** : दैनंदिन जीवन की किसी घटना को लेकर संवाद तैयार करवाना तथा इसके पश्चात् कक्षा में इसका निदर्शन देना।
- (2) **खबरो के प्रस्तुतकर्ता का रोल करना** : अध्येता के पास न्यूज़ रिडर की भूमिका करवाना। खबरो के पठन की स्क्रीप्ट लिखाना तथा पठन करवाना।
- (3) **बाज़ार में सोदासुल्क का अभिनय करवाना** : दुकानदार तथा खरीददार की भूमिका प्रदान कर अभिनय करवाना।
- (4) **उदाहरण के जरिए शिक्षा** : व्याकरण विषयक मुद्दों की समझ उदाहरणों के जरिए दी जाय।

4.3.5 तार्किक चिन्तन विकसित करने की विधियाँ :

विचार करना मनुष्य की सहज क्षमता है, किन्तु तार्किक चिन्तन क्षमता प्रयत्न साध्य है। तार्किक चिन्तन का अर्थ है - उद्दीपन विषयक समीक्षात्मक चिन्तन। क्यों, कैसे, कब, आदि प्रश्नों को लेकर उद्दीपन सम्बन्ध विचार करना तार्किक चिन्तन है। इसकी विधियाँ इस प्रकार हैं -

- (1) **समस्या समाधान विधि** : यह तार्किक चिन्तन क्षमता विकास की श्रेष्ठ विधि है। इसमें अध्येताओं के समक्ष समस्या रखी जाती है तथा इसमें सम्भवित समाधान खोजने के प्रयत्न में अध्येताओं को व्यस्त रखा जाता है। एक से अधिक समाधान ढूँढ़ने को प्रेरित किया जाता है।
- (2) **प्रश्नोत्तर विधि** : प्रश्न और उत्तर-प्रश्न और उत्तर की एक शृंखला तार्किक आधार पर तैयार करना होता है। प्रश्न तथा उत्तर के द्वारा अध्येता की तार्किकता का विकास करना है। इस प्रकार के प्रश्नों में विवेचनात्मक प्रश्नों का आधिक्य होता है।

(3) **रोल मोडल विधि** : भिन्न-भिन्न अध्येताओं को कोई न कोई भूमिका अदा करने को कहा जाता है। फिर एक परिस्थिति का निर्माण कर उस परिस्थिति में आप हैं तो अब क्या करेंगे ? प्रश्न रखकर अध्येता के मौलिक उत्तर लिये जाते हैं।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

- **भेद स्पष्ट कीजिए।**

1. अर्थग्रहण और अभिव्यक्ति
2. समस्या समाधान विधि और रोल मोडल विधि
3. आत्मप्रकाशन विधि और शब्द संरचना विधि

4.3.6 भाषा के प्रमुख उद्देश्यों का मूल्यांकन :

भाषा के प्रमुख उद्देश्यों में अर्थग्रहण, अभिव्यक्ति, सर्जनात्मकता, व्यावहारिक उपयोजन एवं तार्किक चिन्तन का समावेश होता है। इनके विकास का मूल्यांकन तीन स्वरूपों में किया जा सकता है : (१) लिखित मूल्यांकन (२) मौखिक मूल्यांकन एवं (३) क्रियात्मक मूल्यांकन। लिखित मूल्यांकन प्रमुखतया पेपर-पेन्सिल कसौटी द्वारा हो सकता है। उदाहरण के तौर पर लेखन कौशल विकास का परीक्षण करना है तो अनुच्छेद लेखन, कहानी लेखन, शब्द लेखन, वाक्य लेखन आदि संबंधित प्रश्नों के उत्तर लेखन द्वारा किया जा सकता है। जबकि मौखिक अभिव्यक्ति, सर्जनात्मक क्षमता अथवा तार्किक चिन्तन आदि के लिए मौखिक मूल्यांकन भी किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर कथन कौशल विकास के मूल्यांकन के लिए वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन किया जा सकता है, सर्जनात्मकता के मूल्यांकन के लिए शब्द संरचना, वाक्य संरचना आदि समय मर्यादा पद्धति कसौटी का प्रयोग भी किया जा सकता है। छात्रों के द्वारा क्रिया करवाकर उसके संदर्भ में जाँचना क्रियात्मक मूल्यांकन है। जैसे - शब्दकोश में से शब्द का अर्थ ढूँढ़वाना, किसी पात्र का रोल प्ले करवाना और छात्र की सिद्धि को जाँचना क्रियात्मक मूल्यांकन है।

वास्तव में मूल्यांकन आकलन के बाद होनेवाली प्रक्रिया है। अध्ययन - अध्यापन प्रक्रिया के दौरान आकलन प्रक्रिया अविरत रूप से जारी रहती है। शिक्षक निश्चित उद्देश्य या अध्ययन निष्पत्ति सिद्ध कराने के लिए विभिन्न प्रवृत्तियों का चयन करता है। इन प्रवृत्तियों के विभिन्न तरीकों के क्रियान्वयन के दौरान वह निरंतर आकलन करके सीखनेवाले एवं न सीखनेवाले बच्चों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। न सीखने के खतरे में पड़नेवाले छात्रों के लिए वह अतिरिक्त अवसर प्रदान करता है।

अतः मूल्यांकन का प्रधान उद्देश्य छात्रों की प्रगति को जाँचने के साथ-साथ छात्रों की प्रगति में आनेवाले अवरोधों का पता लगाकर उसे विभिन्न तरीकों से दूर करके उन्हें प्रगति की ओर अग्रसर करना है।

4.4 इकाई का सारांश :

प्रस्तुत इकाई में भाषा शिक्षा की विधियों का तथा मूल्यांकन विधि का विवरण दिया है। प्रथम प्रस्तुत इकाई के उद्देश तथा निष्पत्तियों की प्रस्तुती की गई है। विषयवस्तु के अन्तर्गत श्रवण- वाचन अर्थग्रहण विकास तथा कथन-लेखन कौशलों के विकास की प्रवृत्तियाँ एवं सर्जनात्मकता तथा तार्किक चिन्तन क्षमता के विकास की प्रवृत्तियाँ प्रस्तुत की गई हैं। चूँकि हिन्दी भाषा प्रयोजनमूलक हिन्दी के रूप में पढ़ाना है। अतएव हिन्दी के व्यावहारिक उपयोजन की विधियाँ भी निर्देशित की गयी हैं।

इसके अतिरिक्त अध्ययन निष्पत्ति के मूल्यांकन की विविध प्रयुक्तियों का विवरण भी दिया गया है। अपेक्षा यह है कि शिक्षक कक्षाध्यापन के लिए इसका प्रयोग करें।

4.5 समझ जाँचनेवाले प्रश्न :

प्रश्न : 1 निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

- (1) अर्थग्रहण विकसित करने की विधियाँ समझाइए ।
- (2) अभिव्यक्ति कौशल के विकास की प्रवृत्तियाँ समझाइए ।
- (3) तार्किक चिन्तन विकसित करने के लिए आप क्या - क्या करेंगे ?
- (4) छात्रों की सर्जनात्मकता का विकास के लिए आप कौन-सी विधियाँ प्रयुक्त करेंगे ?
- (5) व्यावहारिक उपयोजन कौशल विकसित करने की विधियाँ समझाइए ।

प्रश्न : 2 टिप्पणी लिखिए ।

- (1) भाषा के प्रमुख उद्देश्यों का मूल्यांकन ।

4.6 सन्दर्भ साहित्य :

- (1) हिन्दी अध्यापन विमर्श - दवे, अन्धारिया तथा अन्य, बी.एस शाह प्रकाशन, अहमदाबाद
- (2) भाषा शिक्षण सिद्धांत और प्रविधि, डॉ. मनोरमा गुप्त, केन्द्रिय हिन्दी संस्थान, आगरा
- (3) द्वितीय भाषा शिक्षण - डॉ. महोबतसिंह चौहान, बाहरी प्रकाशन प्रा.लि.
- (4) हिन्दी अध्यापन पद्धति - डॉ. हरेकृष्ण जोशी, अनडा बुक डिपो. आगरा, अहमदाबाद

4.7 प्रायोगिक कार्य :

- (1) अभिव्यक्ति कौशल विकास की किन्हीं दो प्रवृत्तियों का आयोजन कीजिए ।
- (2) वाचन अर्थग्रहण मूल्यांकन कसौटी की संरचना कीजिए ।
- (3) सर्जनात्मकता के विकास से लिए किन्हीं दो प्रवृत्तियों का आयोजन कीजिए ।



□ इकाई का प्रारूप :

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ

5.3 विषयवस्तु

5.3.1 हिन्दी साहित्य के स्वरूप

(क) कहानी

(ख) निबंध

(ग) जीवनी

(घ) एकांकी

(च) प्रगीत

5.3.2 हिन्दी साहित्यकारों के जीवन एवं कवन का परिचय

(छ) तुलसीदास

(ज) मैथिलीशरण गुप्त

(झ) प्रेमचंद

(ट) सुभद्राकुमारी चौहान

(ठ) सुमित्रानंदन पंत

5.4 इकाई का सारांश

5.5 समझ जाँचनेवाले प्रश्न

5.6 संदर्भ साहित्य

5.7 प्रायोगिक कार्य

5.1 प्रस्तावना :

साहित्य जीवन का दर्पण है तथा साहित्य ही जीवन की विभिन्न संवेदनाओं का शिक्षण दे सकता है। कोरा ज्ञान मनुष्य को मानव नहीं बना सकता है; अपितु साहित्य मनुष्य को भावात्मक शिक्षा देकर उसे मानव बना सकता है। इक्कीसवीं शताब्दी के मंगल प्रभात पर आन्तर राष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने Learning to live together कह कर जीवन के भावात्मक पक्ष की शिक्षा पर बल दिया है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार, “साहित्य ज्ञानराशि का संचित कोश है।” अर्थात् ज्ञान मनुष्यों के अनुभवों का विवेचन है। मनुष्य के अनुभव और ज्ञान का परिष्कृत रूप ही साहित्य है। इसलिए साहित्य समाज के रीति-नीति, हलचल, आदर्श, मूल्यों का संचय है। साहित्य का प्रेरणास्रोत समाज होता है। समाज की मिट्टी से ही साहित्य जन्म लेता है।

सात्विक साहित्य से मनुष्य के जीवन में परिवर्तन आता है। वह प्राणीमात्र का कल्याण करता है। साहित्य अनीति का खण्डन करनेवाला, आदर्शों और मूल्यों को समाज में प्रस्थापित करनेवाला हो तो वह समाज को प्रगति की ओर अभिमुख करता है और पथ प्रदर्शक बनता है। साहित्य की शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अनुभाग है।

चूँकि हमारे अध्येता के पास साहित्य का विशद् अध्ययन तथा गहरी समझ की आशा करना व्यर्थ है। इसलिए यहाँ साहित्य के स्वस्व और साहित्यकारों के जीवन एवं कवन का विशद् परिचय दिया गया है।

5.2 उद्देश्य एवं अध्ययन निष्पत्तियाँ :

☐ उद्देश्य :

प्रशिक्षणार्थी...

- हिन्दी साहित्य के स्वस्वों को समझ सकेगा।
- हिन्दी साहित्यकारों के जीवन का परिचय प्राप्त कर सकेगा।

☐ अध्ययन निष्पत्तियाँ :

प्रशिक्षणार्थी...

- हिन्दी कहानी के स्वस्व को समझ सकेंगे।
- हिन्दी निबंध स्वस्व से अवगत होंगे।
- हिन्दी जीवनी स्वस्व से परिचित होंगे।
- हिन्दी एकांकी स्वस्व को समझ सकेंगे।
- हिन्दी प्रगीत स्वस्व को समझ सकेंगे।
- तुलसीदास के जीवन और कवन का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- मैथिलीशरण गुप्त के जीवन और कवन का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- प्रेमचंद के जीवन और कवन का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- सुमित्रानंदन पंत के जीवन और कवन से अवगत होंगे।
- सुभद्राकुमारी चौहान के जीवन और कवन का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

5.3 विषय वस्तु :

5.3.1 हिन्दी साहित्य के स्वस्व :

भाषा में साहित्य के स्वस्वों को दो विभागों में बाँटे जाते हैं - (१) पद्य स्वस्व और (२) गद्य स्वस्व। पद्य स्वस्व में महाकाव्य, खण्डकाव्य और गीति काव्य समाविष्ट हैं, जबकि गद्य स्वस्व में कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटक, निबंध, आत्मकथा, जीवनी एवं आलोचना का समावेश होता है। इन स्वस्वों में से उद्देश्यों में उल्लेखित स्वस्वों की समझ प्राप्त करेंगे।

(क) कहानी :

• कहानी की परिभाषा :

‘कहानी’ का शाब्दिक अर्थ है - ‘कहना’। विशिष्ट अर्थ में हम किसी विशेष घटना के रोचक ढंग से किए हुए वर्णन को ‘कहानी’ कहते हैं।

आधुनिक कहानी के जनक ‘एडगर एलिन पो’ के शब्दों में, “‘कहानी रसोद्रेक करानेवाली, अपने आपमें पूर्ण, एक ऐसा असरदार आख्यान है जो एक ही बैठक में पढ़ा जा सके।”

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने कहानी की स्फुरेखा इन शब्दों में प्रकट की है - “‘कहानी एक ऐसी रचना है, जिसमें जीवन

के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथाविन्यास सब उसी एक भाव की पुष्टि करते हैं। वह एक गमला है, जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।”

इन व्याख्याओं से एक बात स्पष्ट है कि - कहानी जीवन का एक खण्ड दृश्य चित्र है, जो जीवन को उसकी समग्रता में न देख, केवल घनीभूत क्षण को बड़े नाटकीय ढंग से अनावृत कर बताता है। फिर भी कहानी की कोई परिभाषा संपूर्ण नहीं है, यह भी सच है। इसलिए पाश्चात्य विचारक फादलियन ने कहा कि, “अच्छी कहानी के गुण परिभाषा में नहीं बाँधे जा सकते।”

• कहानी की विशेषताएँ :

- कहानी एक छोटे आकार का आख्यान है।
- कहानी में जीवन के किसी एक पक्ष की मार्मिक झाँकी प्रकट होती है। यह झाँकी अपने में पूर्ण होती है।
- छोटी होते हुई भी कहानी एक जीवनतथ्य उदात्त भाव संवेदन को प्रकट करनेवाली होती है।
- वह प्रगति से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती है।
- कहानी में संकेतात्मकता और संक्षिप्तता होती है।
- कहानीकार का संदेश सांकेतिक रूप में आता है।
- पात्र कम होते हैं तथा उनके चरित्र के शुद्ध अंशों पर प्रकाश डाला गया हो।
- कहानी हमारी भावना मात्र का उभार है।
- प्रभावोत्पादकता, एक ध्येयता तथा अनुभव की तीव्रता बनी रहती है।
- कहानी की शैली सजीव, रोचक, संकेतात्मक और प्रभावोत्पादक होती है।
- भाषा अलंकारिक, मुहावरेदार और लोकोक्तियों के प्रयोगवाली होनी चाहिए।
- कहानी जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है।
- कहानी का अंत संकेतात्मक एवं प्रभावशाली होना चाहिए।

(ख) निबंध :

• निबंध की परिभाषा :

निबंध गद्य रचना का उत्कृष्ट रूप है। विषय का सम्यक प्रतिपादन, भाषा का प्रांजल रूप और लेखक के व्यक्तित्व की छाप ये तीनों विशेषताएँ अच्छे निबंध में पायी जाती हैं। निबंध में अनुभव की अभिव्यक्ति होती है, न कि अपने विचारों की।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबंध को गद्य साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा बताते हुए कहा है, “यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की कसौटी है।”

निबंध के संबंध में विभिन्न धारणाओं को अंगीकार करते हुए हम कह सकते हैं कि, “निबंध वह गद्य रचना है, जिसमें लेखक किसी भी विषय पर स्वच्छंदतापूर्वक परन्तु एक विशेष सौष्ठव, सजीवता और वैयक्तिकता के साथ अपने भावों, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करता है।”

• निबंध की विशेषताएँ :

- निबंध में विषयवस्तु का संगठन, बुद्धितत्त्व का प्राधान्य और प्रस्तुतकर्ता के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब रहता है।
- निबंध की भाषा विषय के अनुकूल, सरल और बोलचाल की होती है एवं शुद्ध मुहावरेदार तथा रोचक होती है।

- निबंध सीमित आकार में लघु गद्य रचना है। गद्य भाषा का चरम विकास भाषा में झलकता है।
- निबंध लेखक के निजी व्यक्तित्व की चरम अभिव्यक्ति निबंध का प्राणतत्त्व है। जिसमें वह अपने हृदय को खोलकर रख देता है।
- मौलिकता निबंध का विशिष्ट गुण है।
- कल्पना और अवलोकन जैसे तत्त्व अनिवार्य हैं।
- निबंध में विषय की सचोटी, मुद्दों का वर्गीकरण, विषय का विस्तृत विवरण, विषयानुसृत भाषाशैली और दृष्टांत इत्यादि होने चाहिए।
- निबंध के तत्त्वों में विषय या उद्देश्य, निजी दृष्टिकोण, विचार-तत्त्व, भाव-तत्त्व, निश्चित और सुनियोजित प्रारूप तथा भाषा-शैली की विशिष्टता समाविष्ट है।
- निबंध के निश्चित और सुनियोजित प्रारूप के तीन अंग हैं- (1) प्रस्तावना (2) विषय प्रतिपादन (3) उपसंहार।
- निबंध की प्रस्तावना विषय से सम्बन्धित, संक्षिप्त और लक्ष्यवेधी होनी चाहिए। जो पाठक को आरंभ में निबंध पढ़ने को आकर्षित और उत्सुक करती है।
- निबंध के विषय प्रतिपादन अंग में विषय संबंधित विचारों को अलग-अलग अनुच्छेदों में प्रकट करना चाहिए। विषय संबंधी सभी ज्ञातव्य बातें प्रकाशित करनी चाहिए। क्रमबद्धता का ध्यान रखना चाहिए। विषय संबंधी सभी ज्ञातव्य बातें प्रकाशित करनी चाहिए। क्रमबद्धता का ध्यान रखना चाहिए। विषयान्तर या अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए एवं पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।
- निबंध का समापन आकर्षक, विचारोत्तेजक और जिज्ञासाप्रेरक होना जरूरी है। इस संबंध में तीन बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है - (1) विषय संबंधी जिज्ञासा की पूर्ण शान्ति हो जानी चाहिए, ऐसा अनुभव न हो कि अभी कुछ अधूरा है। (2) विषय का आकर्षक शब्दों में यहाँ सारांश प्रकट होना चाहिए और (3) निष्कर्षात्मक होना चाहिए।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

1. 'कहानी' किसे कहते हैं ?
2. कहानी की किन्हीं चार विशेषताएँ लिखिए।
3. निबंध की कोई एक व्याख्या लिखिए।
4. निबंध की महत्वपूर्ण चार विशेषताएँ लिखिए।

(ग) जीवनी :

• **जीवनी की परिभाषा :**

'जीवनी' किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखी जाती है। किसी भी महापुरुष के बारे में कोई अन्य लेखक जब उस महापुरुष के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लिखता है तब वह 'जीवनी' कही जाती है। जीवनी को जीवनकथा भी कहा जाता है। जीवित या स्वर्गस्थ व्यक्ति को लक्ष्य बनाकर उसके सर्वांगीण जीवन का रसमय चित्रण जीवनी में होता है। जीवनी में किसी एक व्यक्ति के जीवन का जन्म से मृत्यु तक का समस्त जीवनवृत्त भी आ सकता है और वह उसके जीवन के किसी एक कालखंड या किसी विशिष्ट चारित्रिक पहलू पर भी केन्द्रित हो सकती है।

जीवनीकार जिसकी जीवनी लिखता है उसके गुण-दोष, दुर्बलता-महानता, आचार-विचार, वाणी-विवेक, तथा उसके संपर्क में आये हुए लोगों का प्रभाव और प्रेरणा आदि अनेकानेक पहलुओं का विवेकपूर्ण मूल्यांकन करता है। जीवनी

अर्थात् किसी व्यक्ति या व्यक्ति विशेष के अंतर और बाह्य व्यक्तित्व का एक ऐसा सुहृदयता और तटस्थपूर्ण कलायुक्त जीवन चित्रण है, जिसमें देशकाल की स्पष्ट झलक भी प्राप्त हो सके।

‘जीवनी’ की परिभाषा देते हुए रामनाथ सुमन ने कहा है कि, “जीवन की घटनाओं का विवरण ‘जीवनी’ नहीं है। लेखक जहाँ नायक के जीवन में छिपे उसके विकास को, उसके व्यक्तित्व को, रहस्य को, उसकी मुख्य जीवन-धारा को खोलकर पाठकों के सामने रख देता है, तब जीवनी लेखनकला सार्थक होती है। ऊपर से मनुष्य के दिखाई पड़नेवाले रूप को दिखाकर ही जीवनी लेखनकला संतुष्ट नहीं होती, वह उस आवरण को भेदकर अन्तः स्वस्व और आन्तरिक सत्य को प्रत्यक्ष करती है।”

- **जीवनी की विशेषताएँ :**

- जीवनी में प्रसंगों और घटनाओं का विस्तृत बयान होता है।
- जीवन की महत्ताओं और मर्यादाओं का बयान जीवनी में होता है।
- जीवनी में अति प्रशंसा या अति निंदा बाधक होते हैं।
- जीवनी में हकीकतों और तथ्यों का न्यायोचित और औचित्यपूर्ण आलेखन होता है।
- जीवनी में तटस्थता, पूर्वग्रह रहितता और अनात्मलक्षिता होने चाहिए।
- जीवनी में शैली रोचक और प्रवाही होनी चाहिए।
- जीवनी में व्यक्ति के अन्तर्बाह्य जीवन की घटनाओं का विवरण रहता है।
- जीवनी में व्यक्ति की प्रकृति (स्वभाव) की विशेषताओं का आलेखन होता है।
- जीवनी में कथानायक की पूर्ण अर्थात् जन्म से मृत्यु तक की कथा समाविष्ट होती है।

(घ) एकांकी :

- **एकांकी की परिभाषा :**

‘एकांकी’ शब्द अपना परिचय स्वयं देता है - एक अंक वाला। इसे अंग्रेजी में ‘वन एक्ट प्ले’ (one act play) कहा जाता है। आधुनिक एकांकी एक स्वतंत्र विधा है।

डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार, “एकांकी में एक घटना होती है। यह घटना नाटकीय कौशल से ही कौतुहल का संचय करती हुई चरमसीमा (Climax) तक पहुँचती है। इसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। विस्तार के अभाव में वह घटना कली की भाँति खिलकर, पुष्प की भाँति विकसित हो उठती है। उसमें लता के समान फैलने की उच्छृंखलता नहीं है।”

श्री उपेन्द्रनाथ ‘अश्व’ के विचार में एकांकी के लिए तीन बातें आवश्यक हैं (1) आकार तथा समय की लघुता (35 से 45 मिनट तक की अवधि) (2) अभिनयशीलता (3) रंग संकेतों की स्पष्टता। वे एकांकी में संकलन-त्रय को बहुत महत्त्व देते हैं।

एकांकी में एक अंक, एक घटना, एक कार्य, एक समस्या और एक ही लक्ष्य का सीधा संक्षिप्त और त्वरित संधान होता है। अपने सीमित आकार में भी एकांकी, अपनी लाघवता के कारण असीम शक्तिशाली कृति है।

- **एकांकी की विशेषताएँ :**

- एकांकी में मुख्यतः किसी एक ही घटना या जीवन की कोई एक प्रमुख संवेदना होनी चाहिए। एकांकी का विकास कौतुहलवर्द्धक नाटकीय शैली में होना चाहिए तथा चरम सीमा पर पहुँचकर एकांकी का अन्त होना चाहिए।
- एकांकी में अभिव्यंजित घटनाओं का चुनाव जीवन की दैनिक घटनाओं में से होना चाहिए, जिससे उसमें यथार्थता एवं मनोरंजन का समावेश हो सके।
- एकांकी जीवन की एक झाँकी मात्र दे देता है। उसमें मानवजीवन का एक पहलू चित्रित होता है।
- दो विरोधी पात्रों या वर्गों के विरोधी भावों में संघर्ष दिखाया जाना चाहिए। संघर्ष ही एकांकी का प्राण है।

- एकांकी के कथन में कौतूहल, जिज्ञासा, गति की तीव्रता एवं चरमसीमा में परिणति (पक्वता) होनी चाहिए।
- यथार्थवाद को स्थान देते हुए आदर्शवाद की ओर संकेत किया जा सकता है।
- एकांकी की शैली में संक्षिप्तता और गतिशीलता होती है।
- एकांकी का प्रायः संघर्ष स्थल से प्रारम्भ होता है और शीघ्र ही गति पकड़कर चरम सीमा की ओर अग्रसर होती है।
- एकांकी में स्वाभाविकता एवं जीवन से निकटता बनाए रखने के लिए संकलन त्रय का पालन कठोरता से होना चाहिए।
संकलन-त्रय का तात्पर्य है - समय की एकता, स्थान की एकता और कार्य की एकता।
- एकांकी का मूल उद्देश्य रंजन नहीं है अपितु उसमें जीवन की वास्तविकताओं का संवेदनात्मक संप्रेषण होना चाहिए।

(च) प्रगीत काव्य (गीति काव्य) :

• प्रगीत काव्य की परिभाषा :

प्रगीत काव्य को गीतिकाव्य भी कहते हैं। गुजराती भाषा में उसको उर्मिकाव्य और अंग्रेजी भाषा में लिरिक (Lyric) कहते हैं। प्रगीत (गीतिकाव्य) स्वानुभूति प्रधान होता है। अर्थात् इसके अंतर्गत कवि अपने आंतरिक भावों, इच्छाओं, उत्साह, प्रेरणा, विश्वास, संतोष, समर्पण आदि को सीधे ढंग से व्यक्त करता है। इसमें कवि की आत्मा, चेतना और संवेदना झँकती है।

जर्मनी के प्रसिद्ध विचारक हीगेल के मतानुसार, “काव्य का शुद्ध और प्राकृत रूप गीतिकाव्य है। कविता का यह सहज नैसर्गिक और मनोरम रूप है। गीति काव्य में कवि संगीतमयी मधुर रचना के सहारे अपनी निजी अनुभूतियों का प्रकाशन करता है।”

डॉ. छेदीलाल पाण्डेय गीतिकाव्य की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि, “जिस काव्य में एक लय या एक ही भाव के साथ एक ही निवेदन, एक ही रस एवं एक ही परिभाषा हो, वह गीतिकाव्य है।”

किसीने कहा है कि, जिस गीति कविता में शब्दों की सुन्दर ध्वनि, सुकुमार सत्यदर्शन, सरल, सुन्दर तथा मधुर शब्द कोमल कल्पना, संगीतात्मक छंद, अनुभूति की विभूति, भावात्मक और कलापूर्ण अभिव्यक्ति हो, वह गीतिकाव्य प्रशंसनीय है।

प्रगीत काव्य में व्यक्तिगत अनुभूतियों, भावनाओं और आदर्शों की प्रधानता होती है। यह तो कवि के मन में स्वतः स्फूर्ति होनेवाली भावनाओं की सुन्दर सजीव एवं प्रभावात्मक अभिव्यक्ति है जो कवि के अन्तः स्थल से निकलकर भावक में संक्रान्त होती है। कवि की अनुभूति जब सार्वजनिक और सर्वदेशीय बन जाती है तब प्रगीत काव्य प्रगट होता है।

• प्रगीत काव्य की विशेषताएँ :

- प्रगीत काव्य गाने योग्य (गेय) होना चाहिए।
- यह स्वानुभूति प्रधान और आनंददानुभूति प्रधान होता है।
- पूरी कविता में एक ही मर्मस्पर्शी भावना रहती है।
- प्रगीत की भाषा सरल, सुमधुर और कर्णप्रिय होती है।
- प्रगीत में भावना की तीव्रता के साथ संगीतमयता और रागात्मकता होती है।
- प्रगीत में निज स्वतः स्मृति और अन्तर्वृत्तियों की प्रधानता रहती है।
- प्रगीत का प्राणतत्त्व मार्मिकता है।
- प्रगीत में सौंदर्याभिव्यक्ति की प्रधानता रहती है।
- गीति काव्य को पढ़ने और गाने से नीजीपन की अनुभूति होती है।
- प्रगीत में विषय और भाव का सामंजस्य होना चाहिए।
- प्रगीत में कल्पनाजन्य सरल निवेदन होता है।

- प्रगीत में निरपेक्ष मौलिक उद्भावना तथा निबंधता रहती है।
- प्रगीत की शैली भाववाही, सरल और कोमल तथा मधुर होनी चाहिए।
- भाव सघनता, प्रभावोत्पादकता और संक्षिप्तता प्रगीत काव्य (प्रगीत) के प्रधान लक्षण हैं।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

5. 'जीवनी' किसे कहते हैं ?
6. एकांकी की महत्वपूर्ण चार विशेषताएँ लिखिए।
7. प्रगीत की परिभाषा स्पष्ट कीजिए।

5.3.2 हिन्दी साहित्यकारों के जीवन एवं कवन का परिचय :

(छ) तुलसीदास :

सर जार्ज ग्रियर्सन का यह कथन अक्षरशः सत्य है कि, “बुद्धदेव के अनन्तर भारत में सबसे बड़े लोकनायक तुलसीदास ही हैं।” उन्होंने राम के पावन चरित्र में अनन्त सौंदर्य, अनन्त गुण, अनन्त शक्ति की प्रतिष्ठा करके तथा उन्हें नारायण से नर बताकर और नर में नारायण का रूप दिया। अपनी जीवन साधना से एक ऐसी प्राणवान लोकक्रान्ति का सृजन किया, जिसने निराश और निष्पंद हिन्दू जाति की शिथिल ध्वनियों में उत्साह और आशा का संचार कर के जीने का नया संदेश दिया। इस प्रकार तुलसी आर्य संस्कृति और आर्य धर्म के पोषक, रक्षक और पुनर्स्थापक थे। ‘रामनाम’ का महामंत्र देकर उन्होंने हिन्दू जाति और सभ्यता को युग-युग तक अमर बना दिया। भक्त नाभादास ने उन्हें ‘कलिकाल का वाल्मीकि’ कहा है। इतिहासकार स्मिथ ने उन्हें ‘मुगल काल का सब - से बड़ा व्यक्ति’ माना है।



• जीवन - परिचय :

इस महान आत्मा के जीवन विषय में अभी तक विद्वानों में बड़ा मतभेद है। तुलसीदास का जन्म उनके शिष्य बाबा वेणी माधवदास कृत ‘मूल गुसाई चरित्’ के अनुसार सं. 1554 की श्रावण शुक्ला सप्तमी को हुआ था। किन्तु जनश्रुति के अनुसार तुलसी का जन्म सं. 1589 माना है। ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने तुलसी का जन्म स्थान राजापुर को ही माना है। तुलसी की माता का नाम हुलसी और पिता का नाम आत्माराम दुबे था। जनश्रुति है कि तुलसी अभुक्त मूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण माता-पिता ने उसका त्याग किया था। पेट पूर्ति के लिए उन्हें दर-दर ठोकें खानी पड़ी। बचपन में इनका नाम रामबोला था। अपने गुरुबाबा नरहरिदास से उन्होंने शूकर क्षेत्र या सोरों में रामकथा सुनाई थी। युवावस्था प्राप्त होने पर तुलसीदास ने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। दीनबन्धु पाठक की कन्या रत्नावली इनकी पत्नी थी। अपनी पत्नी के प्रति तुलसी अत्यधिक आसक्त थे। एक बार पत्नी इनकी अनुपस्थिति में अपने मायके चली गयी। तुलसी पत्नी वियोग के दारुण दुःख को न सह सके। काली अँधियारी रात में जल से भरी नदी पार कर पत्नी से मिलने के लिए जा पहुँचे। तुलसी के इस पत्नी मोह पर रत्नावली क्षुब्ध हो उठी। भरे स्वर में वह बोली -

लाज न आवत आपको दौरे आएहु साथ ।

धिक धिक ऐसे प्रेम कौ कहा कहौ मैं नाथ ॥

अस्थि चरम मय देह मम तातें ऐसी प्रीति ।

ऐसी जो कहूँ राम महँ होति न तो भवभीति ॥

स्त्री के इस व्यंग्य की चोट से तुलसीदास तिलमिला उठे। उन्होंने स्त्री, घर, धन, सभी कुछ त्याग दिया और उनका अनुराग सचमुच ही श्रीराम की ओर प्रवाहित हो चला। गृहत्याग के बाद तुलसी हिन्दू संस्कृति के केन्द्र काशी आए और बड़ी लगन के साथ धार्मिक ग्रंथ का अध्ययन करने लगे। बाद में गोस्वामी ने विभिन्न तीर्थों तथा विस्तृत भूभाग का विशाल पर्यटन किया। काशी से अयोध्या आकर तुलसी में तुलसीदास का सम्मान बढ़ता ही गया। राजा टोडरमल, अब्दुर्रहम, राजा मानसिंह तुलसीदास के अनन्य मित्र थे। उनके जीवनकाल में काशी में महामारी का भीषण प्रकोप बढ़ा। महामारी को शान्त करने के लिए तुलसीदास ने कवितावली के अनेक छन्दों में माता पार्वती की स्तुति की। महामारी के शान्त होने के बाद कुछ दिनों के बाद तुलसी की दाहिनी आँख में भयंकर शूल प्रारंभ हुआ। कुछ समय बीतने पर यह शूल समस्त शरीर में व्याप्त हो गया। इसकी शान्ति के लिए तुलसी ने हनुमान, शिव और राम से प्रार्थना की। इस पीड़ा के थोड़े ही दिनों बाद सं. 1680 में तुलसीदास का शरीरांत हो गया।

• कवन :

तुलसीदास के नाम अनेक ग्रंथ कहे जाते हैं, किन्तु पं. रामगुलाम द्विवेदी केवल 12 ग्रंथ ही प्रामाणिक मानते हैं, जिनमें 6 बड़े तथा 6 छोटे हैं। काशीनागरी प्रचारिणी सभा ने ये 12 ग्रंथ प्रामाणिक माने हैं - दोहावली, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, रामचरित मानस, रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल एवं रामाज्ञा प्रश्न।

तुलसी के आराध्य देव श्रीराम हैं। अतएव राम को केन्द्र में रख उन्होंने अधिकांश रचनाएँ की हैं। 'रामचरित मानस' ने श्रीराम को तो घर-घर पहुँचा दिया तथा साथ-साथ तुलसीदास को भी अमर कर दिया।

यहाँ तुलसीदास जी के दो ग्रंथों के बारे में संक्षिप्त में जानकारी प्राप्त करेंगे।

(i) रामचरित मानस :

'रामचरित मानस' रामकथा काव्य है। इसमें राम जन्म से लेकर राम के राज्यारोहण तथा सीता निर्वासन, लवकुश जन्म, अश्वमेध यज्ञ, सीता का पृथ्वी में लय होना आदि बातों का समावेश किया है। 'रामचरित मानस' एक प्रबन्ध काव्य है, महाकाव्य है। वह सात सर्गों में विभक्त है। इसमें रामजन्म से लेकर वनवास तक की घटनाएँ, कथा के आदि भाग से वनयात्रा से लेकर सीताहरण की घटनाएँ, कथा के मध्य भाग से तथा सीताहरण से लेकर रावण वध तथा राज्यारोहण आदि घटनाएँ कथा के अन्त भाग से सम्बन्धित हैं।

इस महाकाव्य के नायक श्रीराम हैं जो क्षत्रिय कुलभूषण हैं। तुलसी ने राम के रूप में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की आदर्शमयी ऐसी जीवंत प्रतिमा प्रतिष्ठित की है जो विश्वभर में अलौकिक है। तुलसीदास ने अपनी उर्वर कल्पना एवं उत्कृष्ट प्रतिभा द्वारा मानव में देवत्व की, नर में नारायण की अथवा व्यक्ति में ब्रह्म की स्थापना की है। इस काव्य में तुलसीदास कवि और उपदेशक दोनों रूपों में विद्यमान है। यह काव्य 'राम-राज्य के उन्नत आदर्शों की प्रेरणा देता हुआ विश्व में सुख और शान्ति के साथ लोकहित की प्रतिष्ठा कर रहा है।'

(ii) विनय पत्रिका :

तुलसीदास का 'रामचरित मानस' यदि श्रेष्ठ महाकाव्य है तो 'विनय पत्रिका' श्रेष्ठ गीतिकाव्य है। इस ग्रंथ में २७९ पद हैं, जिन में बिलावल, धनाश्री, रामकली, वसंत, मारू, भैरव, कान्हरा, केदार, मलार, टोढी और सोरठा आदि विविध राग-रागिनियों का प्रयोग हुआ है। भक्ति भावना की दृष्टि से यह अनूठा ग्रंथ है।

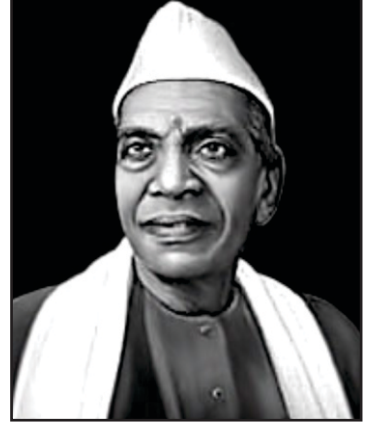
(ज) मैथिलीशरण गुप्त :

“अबला-जीवन, हाय ! तुम्हारी यही कहानी-

आँचल में है दूध और आँखों में पानी !”

भारतीय नारी जीवन का इतना संक्षिप्त फिर भी इतना सम्पूर्ण, इतना सटीक व यथार्थ वर्णन शायद ही किसी कवि ने किया हो। यथार्थ में मैथिलीशरण जी नारी जीवन के उद्गाता कवि थे।

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक अत्यन्त प्रसिद्ध कवि थे। जनता ने राष्ट्रकवि की पदवी देकर उन्हें सम्मानित किया था। उन्हें द्विवेदी युग के सर्वोत्तम कवि माना जाता है। वह समय के साथ बदलती हुई भावनाओं के चतुर चित्ते थे। इसीके परिणाम स्वरूप उनके काव्य विषय का क्षेत्र व्यापक है। उस समय कविता ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ी बोली अपना रही थी। इसलिए गुप्तजी ने खड़ी बोली में लिखना आरम्भ किया। इतना ही नहीं सरल और सुबोध भाषा प्रयोग कर के यह सिद्ध कर दिया कि कविता खड़ी बोली में भी लिखी जा सकती है एवं खड़ी बोली काव्यानुभूति वहन करने में सक्षम है। यह गुप्तजी का ऐतिहासिक प्रदान है।



• जीवन-परिचय :

चिरगाँव जिला के झाँसी में सं. 1943 श्रावण शुक्ला 3 सोमवार (13 अगस्त, 1886) को गुप्त जी का जन्म हुआ। पिता शेट रामचरण चिरगाँव के धनीमानी वैश्य थे। वे व्यापार करते थे और सीताराम की भक्ति में लीन थे। काव्य-रचना का भी उन्हें शौक था। यही कवित्व-प्रतिभा और रामभक्ति गुप्त जी को पैतृक देन में मिली। पिताजी की देखा-देखी गुप्त जी भी छन्द-रचना करते। पिताने उनके एक छन्द को पढ़कर आशीर्वचन कहे थे, “तू आगे चलकर हम से हजार गुनी अच्छी कविता करेगा।” पिता का यह आशीर्वाद अक्षरशः सत्य हुआ।

चिरगाँव में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त गुप्त जी झाँसी के मेकडानल हाईस्कूल में प्रविष्ट हुए। पर वे वहाँ पढ़ने की अपेक्षा खेले - कूदे अधिक। फलतः दो वर्ष पश्चात् ही गुप्त जी को चिरगाँव लौट आना पड़ा। घर पर ही एक पंडित जी संस्कृत पढ़ाते। साथ-साथ चकई फिराने और पतंग उड़ाने का भी उन्हें खूब शौक था। बुद्धि बहुत तीव्र थी, इसलिए पाठ याद करने में गुप्त जी को अधिक समय नहीं देना पड़ता था। आल्हा पढ़ने में गुप्त जी को बड़ा आनन्द आता था। आल्हा पढ़ते समय गुप्त जी को न खाने की सुध रहती न पीने की। इस बीच वे मुंशी अजमेरी के सम्पर्क में आए। वे गुप्त जी को कहानियाँ सुनाते और कविताएँ कंठाग्र कराते। अजमेरी जी स्वयं अच्छे कवि थे। उनके प्रभाव से गुप्त जी की काव्य-प्रतिभा को बल मिला। वे अब दोहे - छप्पयों में रचना करने लगे और कलकत्ते से निकलने वाले ‘वैश्योपकारक’ पत्र में उनकी ये रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

आचार्य द्विवेदी जी जब झाँसी के रेलवे दफ्तर में चीफ क्लर्क थे, गुप्त जी अपने बड़े भाई के साथ उनसे मिलने गए। गुप्त जी का परिचय कराते हुए द्विवेदी जी से कहा गया, “ये मेरे छोटे भाई भी कविता करते हैं।” आगे चलकर इन्हीं द्विवेदी जी की छत्रछाया में मैथिलीशरण जी की काव्य-प्रतिभा पल्लवित और पुष्पित हुई। जब द्विवेदी जी सरस्वती के सम्पादक बने, तब गुप्त जी ने ‘हेमन्त’ शीर्षक कविता सरस्वती में प्रकाशनार्थ भेजी। उस अंक में इस कविता को स्थान न मिल सका। आपने उसे ‘मोहिनी’ नामक एक अन्य पत्रिका में प्रकाशित कराया। कुछ समय पश्चात् कविता काफी संशोधन और काट-छाँट के बाद सरस्वती में प्रकाशित हुई। द्विवेदी जी ने एक पत्र भी गुप्त जी को लिखा, “हमने जो संशोधन किये हैं, उन पर विचार करो। आगे से जिस कविता को हम न छापें, उसे किसी दूसरे पत्र में न छपाओ।” बस गुप्त जी उसी दिन से द्विवेदी जी के पक्के शिष्य बन गये। उन्हीं के बताये मार्ग पर चलने लगे।

साहित्य-साधना के साथ-साथ गुप्त जी ने राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया। उन्हें जेल-यात्रा भी करनी पड़ी। विश्व वंद्य गांधीबापू गुप्त जी का अत्यंत आदर-सम्मान करते थे। सन् 1936 में उन्होंने गुप्त जी को काशी में 'काव्य-मान ग्रंथ' भेंट किया था।

पिछले 50 वर्षों से, राष्ट्र के मानस को अधिक प्रबुद्ध और ऊर्जस्वित रूप देने की साधना में रत यह महान् तपस्वी 12 दिसम्बर, सन् 1964 को अर्धरात्रि के पश्चात् 78 वर्ष की आयु में स्वर्गधाम के वासी बन गये।

गुप्त जी ने अपने जीवन-काल में ही समुचित लोकप्रियता अर्जित की। राष्ट्र ने उनकी साधना के अनुसूप ही उनका सम्मान किया, आदर-मान दिया। हिन्दी संसार ने उन्हें 'साहित्य-वाचस्पति' की उपाधि से विभूषित किया। राष्ट्रपति द्वारा सन् 1954 में 'पद्म - विभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया। सन् 1952 एवं सन् 1954 में 'राज्य सभा' के सदस्य मनोनीत किये गए। प्रयाग, आगरा एवं वाराणसी विश्वविद्यालयों ने उन्हें 'डॉक्टर ऑफ लिटरेचर' की मानद उपाधि दी।

• कवन :

गुप्तजी का साहित्य बड़ा विशद, विभिन्न है। भारती के भण्डार को अपनी रचनाओं की अतुल भाव-सम्पदा से वैभव - सम्पन्न बनाने में उनका योगदान आधुनिक कवियों में सर्वोपरी है। उन्होंने साधारण गद्यमय पद्य से लेकर उत्कृष्ट कलात्मक काव्य तक अनेक प्रबन्ध कृतियाँ, गीत मुक्तक, अतुकांत, तुकांत, मौलिक, अनुदित सभी क्षेत्रों में लिखा है।

उनके काव्य की अनेक कोटियाँ हैं, अनेक भेद हैं; और इसमें सन्देह नहीं कि उनकी रचनाओं में युग और साहित्य की विगत 50 वर्षों की चेतना का इतिहास सुरक्षित है।

❖ काव्य :

(1) रंग में भंग (2) जयद्रथ वध (3) पद्य-प्रबंध (4) भारत-भारती (5) शकुन्तला (6) पत्रावली (7) वैतालिक (8) किसान (9) पंचवटी (10) स्वदेशी-संगीत (11) हिन्दू (12) शक्ति (13) त्रिपथगा (14) विकट-भट (15) गुरुकुल (16) झंकार (17) साकेत (18) यशोधरा (19) द्वापर (20) सिद्धराज (21) मंगल-घट (22) नहुष (23) कुणाल-गीत (24) अर्जन और विसर्जन (25) काबा और कर्बला (26) विश्व-वेदना (27) अजित (28) प्रदक्षिणा (29) पृथ्वी-पुत्र (30) हिडिम्बा (31) अंजलि और अर्घ्य (32) जय भारत (33) युद्ध (34) राजा-प्रेम (35) विष्णु-प्रिया

❖ गीति-नाट्य : चन्द्रहास, तिलोत्तमा तथा अनद्य।

❖ अनुदित : मेघनाथ वध, प्लासी का युद्ध, वीरांगना, विरहिणी ब्रजांगना, स्वप्न वासवदत्ता।

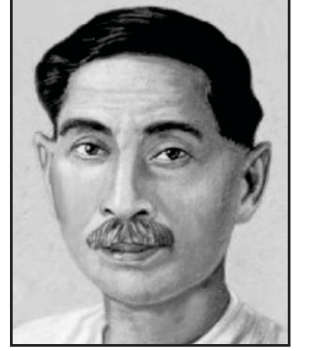
मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि हैं। उनके काव्यों में युग चेतना (गांधी विचार) का व्यापक चित्रण है। उनकी वाणी का परिधान पहनकर भारत की सांस्कृतिक साधना साहित्य की भूमि पर दृढ़ता से प्रतिष्ठित हुई है। सचमुच उनके निधन से एक युग समाप्त हो गया।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

8. तुलसी का अनुराग श्रीराम की ओर कब प्रवाहित हो चला ?
9. 'तुलसी का साहित्यिक योगदान उत्कृष्ट है।' विधान स्पष्ट कीजिए।
10. 'मैथिलीशरण गुप्त' को आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि क्यों कहते हैं ?

(अ) प्रेमचन्द :

हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द को युग प्रवर्तक कथाकार एवं उपन्यास सम्राट माना जाता है। प्रेमचन्द ही वह प्रथम कथाकार है जिसने कथा साहित्य को जन-जीवन के यथार्थ धरातल पर ला खड़ा किया। प्रेमचन्द ने अपने देश में एक महान साहित्यिक परम्परा को जन्म दिया। महाकवि तुलसीदास के बाद वे हमारे सबसे अधिक सचेतन, सब से अधिक प्राणवान, सब से अधिक सशक्त और सबसे अधिक लोकप्रिय कथाकार हैं।



• जीवन - परिचय:

प्रेमचन्द का जन्म काशी के निकट एक छोटे से लमही गाँव में सं. 1937 (1880 इ.स.) श्रावण वदी दशम को हुआ था। जन्म के बाद वे धनपतराय कहलाये। आर्थिक दृष्टि से निम्न कायस्थ परिवार में उनका जन्म हुआ था। पिता अजायबराय डाकखाने में क्लर्क थे। माता आरम्भ से ही बीमार थी। प्रेमचन्द जब सात वर्ष की आयु के थे तब ही माता का ममता भरा आँचल उनके सिर से हट गया। घर में दूसरी माँ आई। किन्तु उसका व्यवहार अच्छा नहीं था। 15 वर्ष की आयु में ही उनकी शादी कर दी गयी। इसके एक वर्ष पश्चात् ही पिताजी का देहान्त हो गया। घर में जो कुछ था वह सब पिता की बीमारी में स्वाहा हो गया। यह आयु बालकों के खेलने-खाने की होती है, पर प्रेमचन्द जी को गृहस्थी की चिन्ता करनी पड़ी।

प्रेमचन्द गाँव में रहते थे। द्यूशन कर घर खर्च चलाते थे। काशी उनके गाँव से पाँच मील दूर था। वहाँ प्रतिदिन पढ़ने जाते। बड़ी कठिनाइयों के साथ उन्होंने अध्ययन जारी रखा। शहर में रहकर पाँच रुपये का द्यूशन करते। जहाँ पढ़ाते वहीं अस्तबल के ऊपर कच्ची कोठरी में रहते। स्वयं ही भोजन बनाते, बर्तन धोते, कमरा साफ करते और अपना अध्ययन करते। पाठ्यपुस्तकों के साथ उपन्यास, कहानी पढ़ने का उन्हें बहुत शौक था। 13 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने उर्दू का 'तिलिस्म-ए-होशरूबा' पूरा पढ़ लिया था। पढ़ने की लालसा उनके मन में बहुत थी किन्तु साधन न होने से विवश थे। अन्त में 18 रुपये मासिक पर एक स्कूल में अध्यापक हो गये थे। अपने अध्यापक काल में वे छात्रों के प्रिय अध्यापक बने रहे। मनमौजी आदमी थे। इस बीच उन्होंने बी.ए. कर लिया।

इसी बीच देश में असहयोग आंदोलन की आँधी उठी। चेतनशील प्रेमचन्द कैसे दूर रह सकते थे ? सरकारी नौकरी को ठुकरा कर वे भी स्वाधीनता संग्राम के सेनानी बन गये। इस बीच आपने 'सोजे वतन' शीर्षक आपका प्रथम कहानी संकलन निकला किन्तु अंग्रेज-शासन की आँखों में इतना खटका कि इसकी 500 प्रतियाँ अग्निदेव को समर्पित कर दी गयीं। प्रेमचन्द तब 'नवाबराय' के नाम से उर्दू में लिखते थे। दयानारायण निगम नामक एक उर्दू लेखक ने और 'जमाना' के सम्पादक ने उन्हें 'प्रेमचन्द' नाम दिया। बाद में वही वास्तविक नाम बन गया।

नौकरी छोड़ उन्होंने साहित्य सेवा तथा देश - सेवा का मार्ग अपनाया। किन्तु आर्थिक संकटों ने उन्हें फिर नौकरी करने को मजबूर किया। कानपुर के मारवाडी विद्यालय में प्रधानाध्यापक रहे। किन्तु इन दोनों पदों पर उनकी पहरी नहीं बैठी। उन्होंने 'मर्यादा' तथा 'माधुरी' पत्रिका का सम्पादन किया, बाद में बनारस में अपना प्रेस खोला तथा 'हंस' और 'जागरण' पत्रिकाएँ निकाली। बम्बई में फिल्म उद्योग ने उन्हें निमंत्रित किया, किन्तु स्वास्थ्य ने साथ न दिया और वापस बनारस चले गए। यहीं आठ (8) अक्तूबर 1936 इ.स. को प्रातः काल की बेला में अपने युग का महान साहित्यकार हमारे बीच से उठ गया।

प्रेमचन्द का जीवन आदि से अन्त तक अभावों, कठिनाइयों और संघर्षों की लम्बी दास्तान है। आर्थिक विषमता से पीड़ित मध्यवर्गीय समाज के करुणा भरे चित्र निरन्तर उनकी आँखों में तैरते रहे। मानव जीवन के बाहरी और भीतरी रूप को उन्होंने बहुत निकट से देखा, परखा और अपने समस्त साहित्य में सच्चाई और ईमानदारी के साथ उसे उतारा। उनके जीवन का हलाहल उनके साहित्य का अमृत बन गया। आत्म सम्मान की तेजस्विता ने जिसके व्यक्तित्व, जिसके विचारों से बड़ा उर्जस्वित बना दिया। जैनेन्द्र कुमार जब प्रेमचन्द जी से प्रथम बार मिलने गए, तब उन्होंने जिस प्रेमचन्द को देखा - "उनकी

बड़ी घनी मूछें थीं, पाँच रुपयेवाली लाल इमली चादर ओढ़े थे, जो काफी पुरानी और चिकनी थी, बालों ने आगे आकर माथे को कुछ ढ़क सा लिया था और माथा छोटा मालूम होता था, सिर जख़्त से ज्यादा छोटा प्रतीत हुआ, मामूली धोती पहने हुए थे। आँखों में खुमारी भरी थी।” जान लिया कि प्रेमचन्द यही है। प्रेमचन्द विनय और सादगी की मूर्ति भीतर और बाहर मन और वचन, कर्म और सिद्धान्त-सबसे अभिन्न, कहीं आड़म्बर नहीं, कहीं कोई बड़प्पन की बू नहीं। जिससे मिलते बिलकुल सगे की तरह, चाहे बड़ा हो या छोटा। सरल होते हुए भी वे अपने और अपने समाज के जीवन की जटिलताओं से परिचित थे। निर्धनता को वे वरदान समझते थे।

• कवन :

अपनी आवाज़ जनता तक पहुँचाने के लिए उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ और नाटक लिखे। उन्होंने अन्य भाषाओं से अनुवाद किए, निबन्ध लिखे तथा बालोपयोगी साहित्य की रचना भी की।

प्रेमा, वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण), प्रेमचन्द के उपन्यास हैं। ‘मानसरोवर’ आठ भागों में उनकी लगभग तीन सौ कहानियाँ संग्रहित हैं। प्रेम की वेदी, कर्बला, संग्राम - प्रेमचन्द जी के नाटक हैं। सुखदास, सृष्टि का आरम्भ, किसाने आज़ाद, अहंकार, हडताल, चाँदी की डिबिया, न्याय-अनुवाद कृतियाँ हैं। कुछ विचार, कलम, तलवार और त्याग, - प्रेमचन्द जी के निबन्ध हैं। मनमोदक, कुत्ते की कहानी, जंगल की कहानियाँ, टालस्टाय की कहानियाँ, दुर्गादास, रामचर्चा, बालोपयोगी साहित्य हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि प्रेमचन्द एक समर्थ कथाकार थे। प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कथाकार थे। उन्होंने भारतीय जीवन का यथातथ्य चित्रण किया है। भारतीय ग्राम्य जीवन के आरोह-अवरोह मुहावरेदार भाषा में अभिव्यक्त करने में वे अद्वितीय थे। हमारे देश से बाहर विदेशों में प्रेमचन्द की रचनाएँ बड़े आदर व सम्मान के साथ पढ़ी जाती हैं। रूस, हंगेरी और ब्रिटन में भी उनकी रचनाएँ उतनी ही लोकप्रिय हैं, जितनी भारत में। इस प्रकार प्रेमचन्द ने आन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्थान बनाकर भारतीय साहित्य का गौरव बढ़ाया है। ऐसे महान साहित्यकार को शत शत वन्दन !

(ट) सुभद्राकुमारी चौहान :

“बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।”

सुभद्राकुमारी ने यदि एक मात्र ‘झाँसीवाली रानी’ काव्य लिखकर अन्य कुछ भी न लिखा हो तो भी वह साहित्यकारों में देदीप्यमान नक्षत्र की भाँति चकाचौंध करती होती।

“बार बार आती है मुझको

मधुर याद बचपन तेरी

गया तो गया तू मेरे जीवन की

सब से खुशी मेरी।”

‘बचपन’ शीर्षक उनकी यह कविता यद्यपि सरल किन्तु भावव्यंजक होने के कारण अमर बन गई।

सुभद्राकुमारी चौहान मूलतः स्वातंत्र्य संग्राम के दिनों में काव्य लेखन में प्रवृत्त हुईं। उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में खुलकर भाग लिया था तथा कई बार जेल गई थीं। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय भाव उनकी कविता का प्रमुख स्वर बन गया था। प्रसिद्ध कविता ‘झाँसी की रानी’ जनता के गले का कंठहार बनी हुई थी। उनकी राष्ट्रीय भावना के कारण अंग्रेज सरकार ने



उनकी पुस्तक जब्त कर ली थी। लेकिन सुभद्रा जी नारी नहीं थी, चिनगारी थीं। वह तो रुकनेवाली कहाँ? दुगुने वेग से काव्य लेखन करने लगीं। गेय काव्यों के कारण वह काफी लोकप्रिय भी हुई थीं। उन्होंने कहानियाँ भी लिखी थीं। तब भी उनका मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना और देश के गौरव का प्रसार करना था। उस युग में माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' के उपनाम से राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत काव्य लेखन कर रहे थे। सुभद्रा जी ने हिन्दी में राष्ट्रीय भावना का प्रचार-प्रसार करनेवाले साहित्य को विशिष्ट स्थान पर पहुँचा दिया। उनका साहित्य इस बात का प्रमाण है कि सरल रूप में कही गई बात कितना गहरा प्रभाव डालती है? ऐसी समर्थ कवयित्री के जीवन-कवन का परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

• जीवन - परिचय :

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 में नागपंचमी के दिन प्रयाग में हुआ था। उनकी तीन बहनें और दो भाई थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा प्रयाग में अपने पिता ठाकुर रामनाथसिंह की देख-रेख में हुई थी। ठाकुर साहब बड़े शिक्षा प्रेमी व सुशिक्षित थे। सुभद्राकुमारी का विवाह खंडवा निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह (बी.ए.एल.बी.) के साथ हुआ था। उस समय वे प्रयाग के क्रास्थ वेस्ट गर्ल्स स्कूल की छात्रा थीं। एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ठाकुर लक्ष्मणसिंह जबलपुर चले गये और माखनलाल चतुर्वेदी के साथ 'कर्मवीर' पत्रिका का सम्पादन और असहयोग आंदोलन में योग देने लगे। श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान भी पति के साथ जबलपुर आ गईं और अपने पति के काम में हाथ बँटाने लगीं। वह भी असहयोग आन्दोलन में भाग लेने लगी। इसका प्रभाव उनकी काव्य चेतना पर पड़ा। वह कई बार जेल गईं। वह राष्ट्र समर्पिता नारी थी। आगे चलकर मध्यप्रदेश विधान परिषद की सदस्या भी नियुक्त हुई थीं। परन्तु दुर्भाग्यवश वसंत पंचमी के दिन 12, फरवरी सन् 1948 ई. को एक मोटर दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गयी। उनके परिवार में दो पुत्र और एक पुत्री थी।

बचपन से ही सुभद्रा जी को कविता का शौक था। अपने पिता को भजन गाते सुनकर स्वयं भी गुनगुनाने लगती थी। क्रास्थ वेस्ट कॉलेज में पढ़ते समय वार्षिक उत्सवों में स्वयं अपनी लिखी हुई कविताएँ सुनाया करती थीं। उन दिनों तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कविताएँ प्रकाशित भी होती थीं। माखनलाल चतुर्वेदी के सम्पर्क में आने से उनकी कविताओं में निखार सा आ गया। इस प्रकार उनकी काव्य प्रतिभा को प्रोत्साहन मिला। वे अच्छी रचनाएँ करने लगीं। राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने पर उनके ऊपर देशभक्ति का गहरा रंग चढ़ गया। इस प्रकार देश सेवा व साहित्य सेवा ही उनके जीवन का उद्देश्य बन गया।

सुभद्रा जी एक ऐसी महिला कवयित्री हैं जो दकियानुसी समाज में क्रान्ति की ज्योत बनकर आईं। ज्योत के उजाले में समाज ने करवट बदली तथा अनेक महिला के राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुई। इस प्रकार सुभद्रा जी एक मिसाल बनकर रह गयीं।

• कवन :

इसमें कोई बेमत नहीं है कि वे प्रकृतितः कवयित्री थीं। साथ ही कहानियाँ भी लिखीं। हालाँकि कहानियों में भी उनका कवयित्रीपन ही उभरता है। बेशक उन्होंने विपुल मात्रा में साहित्य सृजन नहीं किया है किन्तु जितना भी सृजन किया है वे उनकी प्रतिभा का परिचायक है। अपनी कम रचनाओं के द्वारा भी वे साहित्य की अमर विभूति बन गई हैं। उनकी रचनाओं में प्रमुख हैं - 'मुकुल', 'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी', 'त्रिधारा', 'सभा के खेल' तथा 'सीधे सादे चित्र'। 'मुकुल' के लिए उन्हें सेक्सरिया पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। इसमें 39 कविताएँ संकलित हैं। 'सभा के खेल' उनकी बालोपयोगी कविताओं का संग्रह है। 'सीधे-सादे चित्र' उनकी कहानियों का संकलन है।

उनकी रचनाओं का मुख्य विषय शृंगार, प्रेम, दीनता तथा देशप्रेम रहे हैं। नारी जीवन की नैसर्गिक अभिव्यक्ति, पारिवारिक जीवन की अनुभूति, राष्ट्रीय भावना की संलग्नता ही इनकी कविता की मुख्य विशेषताएँ हैं। इनकी रचनाओं को तीन विषयों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

- **देश भक्ति की रचना :**

चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी
बुन्देले हर बोली के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

- **वात्सल्य रस की कविता (पारिवारिक अनुभूति) :**

“मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी
नन्दनवन सी फूल उठी वह छोटी सी कुटिया मेरी।”

- **नारी जीवन की नैसर्गिक अभिव्यक्ति :**

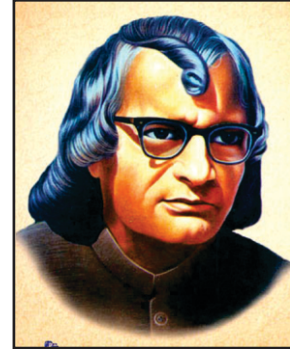
“चरणों पर अर्पित है इसको चाहो तो स्वीकार करो
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है, ठुकरा दो या प्यार करो।”

सुभद्रा जी खड़ी बोली में ही कविता लिखती थीं। इसमें सरल संस्कृत शब्दों के साथ विदेशी भाषा के शब्दों का बड़ी सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। भावों के अनुरूप सरल भाषा उनकी विशेषता रही है।

सुभद्रा जी बीसवीं सदी की झाँसी की रानी है ऐसा कहना भी अनुचित नहीं है। उनका समस्त जीवन राष्ट्र को समर्पित था। वह राष्ट्रीय भावना की चिनगारी बनकर अवतीर्ण हुईं तथा राष्ट्रभाषा में विलीन हो गईं।

- (ठ) **सुमित्रानन्दन पन्त :**

छायावादी कवि चतुष्टय में (पन्त, प्रसाद, निराला तथा महादेवी) सुमित्रानन्दन पन्त का स्थान विशिष्ट है। अंग्रेजी कवि बायरन का यह कथन - “मैं मनुष्य से कम प्यार नहीं करता हूँ पर प्रकृति को मनुष्य से अधिक प्यार करता हूँ।” यह हिन्दी कवि पन्त के लिए अक्षरशः उपयुक्त है। पन्त हिन्दी के विकासमान कवि रहे हैं। आरंभ में इन्होंने अनुपम प्रकृति काव्य दिए किन्तु जैसे-जैसे जीवन का साक्षात्कार होता गया वैसे-वैसे प्रकृति के मायालोक को छोड़ ठोस धरती पर कदम रखने लगे। तब यथार्थ जीवन के गाने गाने लगे, किन्तु कवि यथार्थवादी चिंतन में भी तृप्ति नहीं मिली, तो वे अध्यात्म की ओर मूड़ गए। अब वे प्रभु की परम सत्ता के गुण-गान गाने लगे। ऐसे निरन्तर विकासशील कवि पन्त का जीवन-कवन का परिचय यहाँ दिया जा रहा है।



- **जीवन - परिचय :**

प्राकृतिक सौंदर्य की सुरम्यस्थली अलमोड़ा जिले के पर्वतीय गाँव कौशानी में पन्त का जन्म 21 मई सन् 1900 को हुआ था। माता सरस्वती देवी पुत्र को जन्म देकर छः घंटे पश्चात् स्वर्गवासिनी हो गईं। पिता पंडित गंगादत्त अंग्रेज के चाय के बगीचे के मुनिम और लकड़ी के ठेकेदार थे। तीन बड़े भाइयों के पश्चात् वे सबसे छोटे थे। फूफी की गोद में उनका लालन-पालन हुआ था। बचपन से बड़े शान्त और सीधी प्रकृति के बालक थे। न खेलने का या न कूदने का शौक था। अपने मकान के पास खड़े देवदार के वृक्षों की ओर निहारना तथा उनसे गिरते पीले पत्तों को गिरते देखना उन्हें बहुत पसंद था।

चार - पाँच साल की अवस्था में बालक पन्त की शिक्षा-दीक्षा शुरू हुई। ग्यारह वर्ष की अवस्था में पन्त को अलमोड़े के गवर्नमेंट हाईस्कूल में भर्ती कराया गया। यहीं उनकी रुचि हिन्दी की ओर पैदा हुई। सन् 1916 में उनकी प्रथम काव्य रचना अलमोड़ा अखबार में छपी। अपनी काव्य प्रतिभा को ज्यादा समृद्ध करने के लिए पन्त जी ने छन्द-प्रभाकर तथा काव्य प्रभाकर का अध्ययन किया। दिन प्रतिदिन कविता के प्रति प्रेम बढ़ता गया।

अलमोड़ा से वे वाराणसी आए। यहाँ उन्होंने हाईस्कूल पास किया तथा बंगला साहित्य का अध्ययन किया। सरोजिनी नायडू की कविताएँ और प्रसाद का 'झरना' पढ़ा। काव्य लेखन की रुचि बलवत्तर होती गई। प्रयाग के कवि संमेलन में 'स्वप्न' कविता पढ़ी। श्रोताओं द्वारा वह बहुत पसंद की गई। अब पन्त नवसीखिए कवि न रहकर ख्याति प्राप्त कवि बन गए। पन्त ने अंग्रेजी काव्यों का भी अध्ययन किया। सन् 1921 के असहयोग आन्दोलन में उन्होंने कॉलेज छोड़ा। इसका एक लाभ यह हुआ कि पन्त शिक्षा को छोड़ सरस्वती की एकांत साधना में लीन हो गए। कवि रूप में पन्त ने बहुत ही यश प्राप्त किया।

पन्त जी का व्यक्तित्व बाहर-भीतर सभी ओर से बड़ा सुकुमार कोमल और कमनीय था। उनका चंपा जैसा गौर वर्ण, बड़े-बड़े भावपूर्ण नेत्र, पतले अधर, नुकीली नाशिका और इन सब से ऊपर लम्बे बल खाते रेशम से सुनहले केश से पन्त जी सौंदर्य की साक्षात्मूर्ति से लगते थे। अपनी प्रकृति, व्यवहार, वेशभूषा, बातचीत सभी में पन्त जी बड़े सरल, बड़े सौम्य, बड़े शांत, बड़े मीतभाषी, शिष्ट और सुसंस्कृत थे।

• कवन :

पन्त जी के अब तक अनेक काव्य-संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं -

- काव्य - वीणा, पल्लव, ग्रंथी, गुंजन, युगांत, युग-वाणी, ग्राम्या, स्वर्ण-धूलि, स्वर्ण-किरण, उत्तरा, कला और बूढ़ा चाँद, वाणी, अभिषेकता, लोकायतन (महाकाव्य), मुक्तियज्ञ (खण्डकाव्य)।
- गीति - नाट्य - ज्योत्सना, रजत शिखर, शिल्पी, अतिमा, युग-पुरुष, सौवर्ण।
- उपन्यास - हार।
- कहानी संग्रह - पाँच कहानियाँ।
- निबन्ध संग्रह - गद्य-पद्य, छायावाद: पुनर्मूल्यांकन।
- अनुवाद - 'मधुज्वाल' नाम से उमर खैयाम की रूबाइयों का हिन्दी स्थान्तर।

उनके काव्य-संग्रहों एवं गीति-नाट्यों से चुनी हुई कविताओं के संकलन - 'पल्लविनी', 'आधुनिक कवि', 'चिदम्बरा', 'कवि श्री', 'रश्मिबंध' एवं 'सुमित्रानन्दन पन्त' आदि नामों से प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी साहित्य सेवा को लक्ष्य में रखकर उन्हें साहित्य का सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया था।

साहित्य सदा परिवर्तनशील होता है, क्योंकि साहित्यकार स्वयं परिवर्तनशील होता है। पन्त जी मूलतः प्रेम, सौन्दर्य तथा जीवन की कोमलतम भावनाओं के सुकुमार कवि हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य और सुषमा से काव्यारम्भ करनेवाला कवि 'युगान्त', 'युगवाणी' और 'ग्राम्य' में जीवन के कटु सत्यों का चित्रण करने लगा था। जीवन की कटुता से थक कर वह अध्यात्म मार्ग पर अग्रसर हुए।

पन्त का प्रकृति वर्णन, प्रतीक विधान, प्रकृति का मानवीकरण आदि हिन्दी काव्य साहित्य का योगदान है। काव्य शिल्प की दृष्टि से महाकाव्य 'लोकायतन' निश्चय ही उल्लेख्य है।

: आपकी प्रगति जाँचिए :

11. प्रेमचन्द को हम महान साहित्यकार के रूप में क्यों याद करते हैं?
12. 'सुभद्रा जी एक मिसाल बनकर रह गयी।' विधान स्पष्ट कीजिए।
13. 'सुमित्रानन्दन पन्त हिन्दी के विकासमान कवि रहे हैं।' विधान स्पष्ट कीजिए।

5.4 इकाई का सारांश :

साहित्य मनुष्य को भावात्मक शिक्षा देकर उसे मानव बना सकता है। वह प्राणीमात्र का कल्याण करता है। साहित्य की शिक्षा संपूर्ण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अनुभव है। इसलिए प्रस्तुत इकाई में चुने हुए साहित्य के स्वरूप और साहित्यकारों के जीवन एवं कवन का परिचय प्राप्त किया।

5.5 समझ जाँचनेवाले प्रश्न :

1. उचित जोड़ मिलाइए।

अ	ब
(1) तुलसी	- युगांत
(2) मैथिलीशरण गुप्त	- बिखरे मोती
(3) प्रेमचंद	- रामचरित मानस
(4) सुभद्राकुमारी चौहान	- साकेत
(5) सुमित्रानंदन पंत	- रंगभूमि
	- सुर सागर

2. एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

- (1) प्रेमचंद जी का प्रमुख उपन्यास कौन - सा माना जाता है ?
- (2) तुलसीदास का श्रेष्ठ महाकाव्य कौन-सा है ?
- (3) सुभद्राकुमारी चौहान की कौन-सी कविता जनता को प्रिय है ?
- (4) निबंध किसे कहते हैं ?

3. सूचना अनुसार उत्तर दीजिए।

1. आत्मकथा और जीवनी में क्या अन्तर है ?
2. एकांकी की विशेषताएँ लिखिए।
3. नाटक की परिभाषा स्पष्ट कीजिए।
4. कहानी की विशेषताएँ लिखिए।
5. टिप्पणी लिखिए : सुमित्रानन्दन पन्त जी का साहित्य में योगदान।

4. विधान स्पष्ट कीजिए।

1. भारत में सब-से बड़े लोकनायक तुलसीदास ही है।
2. सुभद्राकुमारी चौहान एक मिसाल बनकर रह गयीं।
3. प्रेमचन्द जी को उपन्यास सम्राट के रूप में हम याद करते हैं।

7. निम्नलिखित साहित्यकारों के जीवन एवं कवन का परिचय दीजिए।

1. तुलसीदास
2. सुभद्राकुमारी चौहान
3. मैथिलीशरण गुप्त
4. प्रेमचंद
5. सुमित्रानंदन पंत

5.6 संदर्भ साहित्य :

1. 'साहित्य के स्वस्व', गुप्ता और अन्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. 'काव्यशास्त्र', डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. 'भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत', डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. 'भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत', डॉ. कृष्णदेव झारी, नालन्दा प्रकाशन, नई दिल्ली
5. 'हिन्दी का आत्मकथा साहित्य', डॉ. विश्वबंधु शास्त्री, राधाप्रकाशन, दिल्ली
6. 'श्रेष्ठ भारतीय एकांकी - खण्ड एक', प्रभाकर क्षत्रिय (सम्पादक), भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. 'श्रेष्ठ हिन्दी एकांकी', सुलेमान टोक (सम्पादक) ग्रन्थविकास प्रकाशन, जयपुर
8. 'हिन्दी का गद्य साहित्य', डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
9. 'साहित्यिक निबन्ध', डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

5.7 प्रायोगिक कार्य :

- **प्रशिक्षणार्थी की प्रवृत्तियाँ :**

1. निर्धारित साहित्यकारों के जीवन एवं कवन आधारित पुस्तकों का अध्ययन कीजिए।
2. निर्धारित साहित्यकारों की कृतियों का अध्ययन कीजिए।
3. हिन्दी साहित्यकार एवं उसकी कृतियों की सूची बनाइए।
4. कहानी, निबंध, जीवनी, एकांकी, नाटक, आत्मकथा आदि साहित्य स्वरूपों का अध्ययन कीजिए।

- **अध्यापक की प्रवृत्तियाँ :**

1. निर्धारित साहित्यकारों के जीवन एवं कवन माहिती हेतु व्याख्यान का आयोजन कीजिए।
2. हिन्दी साहित्य स्वरूपों के संदर्भ में व्याख्यान कार्य का आयोजन कीजिए।
3. हिन्दी साहित्य स्वरूपों के प्रकल्प कार्य (Project work) करवाइए।
4. निर्धारित साहित्यकारों के संदर्भ में प्रकल्प कार्य (Project work) करवाइए।



પદ્ધતિશાસ્ત્ર અને વિષયવસ્તુ
સંસ્કૃત (ધોરણ: 6 થી 8)

1. સંસ્કૃત ભાષા : વેદકાળથી વર્તમાન સુધી

- 1.1 પ્રસ્તાવના
 - 1.2 ઉદ્દેશ્ય
 - 1.3 વૈદિક સાહિત્ય
 - 1.4 લૌકિક સાહિત્ય
 - 1.5 સંસ્કૃત ભાષાનો ઉદભવ
 - 1.6 આર્યભટ્ટ, વરાહમિહિર, ભાસ્કરાચાર્ય વગેરેનો પરિચય
 - 1.7 સમગ્ર એકમનો સારાંશ
 - 1.8 અસાઈનમેન્ટ
-

1.1 પ્રસ્તાવના

ભારતીય સંવિધાનની આઠમી યાદીમાં આધુનિક ભારતીય ભાષાઓમાં સ્થાન મેળવનાર સંસ્કૃતભાષા વિશ્વની પ્રાચીનતમ ભાષા હોવાથી તેમાં લખાયેલ સાહિત્યવિશ્વનું પ્રાચીનતમ સાહિત્ય છે. સંસ્કૃત સાહિત્ય જ્ઞાન-વિજ્ઞાનના તમામ ક્ષેત્રોને આવરી લેતું હોવાથી સ્મૃદ્ધ છે.

સંસ્કૃત સાહિત્યને મુખ્યત્વે બે વિભાગોમાં વિભાજિત કરવામાં આવ્યું છે. વૈદિક સાહિત્ય અને લૌકિક સાહિત્ય.

1.2 ઉદ્દેશ્ય

પ્રશિક્ષણી

- વૈદિક સાહિત્ય, અને લૌકિક સાહિત્યથી પરિચિત થાય.
- સંસ્કૃતભાષાના ઉદભવ અંગે માહિતગાર થાય
- વેદ સાહિત્યથી વર્તમાન સાહિત્યની પ્રક્રિયા અંગે ની સમજ મેળવે.
- આર્યભટ્ટ , વરાહ મિહિર, ભાસ્કરાચાર્ય વગેરેના પ્રદાન અંગે જાણે.

1.3 વૈદિક સાહિત્ય

વૈદિક સાહિત્યમાં ચાર વેદો-ઋગ્વેદ , યજુર્વેદ, સામવેદ અને અથર્વવેદનો સમાવેશ થાય છે. વેદો “અપૌરુષેય” કહેવાય છે. અર્થાત્ કોઈ વ્યક્તિ વિશેષ દ્વારા આ ગ્રંથોની રચના કરવામાં આવેલ નથી પરંતુ ઋષિમુનિઓને તેમની ધ્યાનસ્થ અવસ્થામાં પરમાત્માની આંતરિક પ્રેરણાથી દિવ્ય ચક્ષુ વડે દર્શન થયેલ છે. વેદ એ મૂળ સંહિતાઓ છે વેદના મંત્રોને ઋચા કહે છે. ઋગ્વેદ એ સમગ્ર વિશ્વનો પ્રાચીનમાં

પ્રાચીન સાહિત્ય ગ્રંથ છે કૃષ્ણ યજુર્વેદ અને શુક્લ યજુર્વેદ એ યજુર્વેદના બે ભાગ છે. સામવેદનો સંબંધ સંગીતવિદ્યા સાથે છે. વેદત્રયી કહેવાય છે. અર્થાત્ મુખ્ય ત્રણ વેદો છે. અથર્વવેદની રચના પાછળથી કરવામાં આવેલ છે એવું માનવામાં આવે છે. અથર્વવેદને બ્રહ્મવેદ પણ કહે છે. તમામ વેદોને તેમના બ્રાહ્મણગ્રંથો, આરણ્યકો, અને ઉપનિષદો છે. વિવિધ યજ્ઞોની વિધિઓની વાત બ્રાહ્મણગ્રંથોમાં કરવામાં આવેલ છે. યજુર્વેદનો શતપથ બ્રાહ્મણગ્રંથ જગપ્રસિદ્ધ છે આરણ્યકોમાં કર્મકાંડ અને બ્રહ્મવિદ્યાનું ખૂબજ વિસ્તારથી વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. ભારતીય ચિંતનની આધારશિલા જેવા ઉપનિષદોમાં જીવ, જગત અને બ્રહ્મ સંબંધી ચિંતન રજૂ કરવામાં આવ્યું છે. ઉપનિષદો 108 થી પણ વધુ છે. તે પૈકી અગિયાર ઉપનિષદો મુખ્ય માનવામાં આવે છે.

इश केन कठ प्रश्न मुंडमांडूक्यतिथिरी

ऐतरेय्य ब्राह्मण बृहदान्यक दशः

વૈદિક સાહિત્ય વૈદિક સંસ્કૃતમાં લખાયેલ છે અને તેની રચના શ્રુતિકાળમાં થઈ છે

1.4 લૌકિક સાહિત્ય

વૈદિક સાહિત્ય સંસ્કૃતભાષાનો પાયો છે. વૈદિક સાહિત્ય પછી પણ સંસ્કૃત સાહિત્યક્ષેત્રે ઊંડું ખેડાણ થતું રહ્યું છે સાહિત્ય નિર્માણના સ્મૃતિ કાળમાં વેદાંગ પુરાણ, રામાયણ અને મહાભારતની રચના થઈ. શિક્ષા, કલ્પ, વ્યાકરણ, નિરુક્ત, છંદ અને જયોતિષ - આ છને વેદાંગ કહે છે. પૃથ્વીની ઉત્પત્તિથી લઈને પ્રલય સુધીનું ક્ષિત્ર વર્ણન અને વિવિધ ઇતિહાસ પ્રસ્તુત કરનાર પુરાણોની રચના સંસ્કૃતભાષામાં કરવામાં આવેલ છે. પુરાણો 18 છે. જેમાં ભાગવતપુરાણ ખૂબજ પ્રસિદ્ધ છે.

વેદો બાદ રામાયણ અને મહાભારત જેવાં આર્ષ મહાકાવ્યોથી સમગ્ર વિશ્વ પરિચિત છે.

“ રામાયણ ” સંસ્કૃત સાહિત્ય અને ભારતીય સંસ્કૃતિનું ગૌરવ છે આદિકવિ મહર્ષિ વાલ્મીકિ દ્વારા રચિત રામાયણ ગ્રંથ ભારતીય સંસ્કૃતિમાં “ધર્મગ્રંથ”નો આદર પામ્યો છે. આ મહાકાવ્યમાંથી પ્રેરણા લઈને માત્ર ભારતમાં જ નહિ પણ સમગ્ર વિશ્વમાં અનેક કૃતિઓ રચાઈ છે. સંસ્કૃત સાહિત્યના આદરણીય કવિઓ કાલિદાસ, ભાસ, ભવભૂતિ વગેરેએ રામાયણમાંથી પ્રેરણા મેળવીને અન્યસાહિત્યની રચના કરી છે. આજે રામાયણ ભારતની તેમજ વિશ્વની અનેક ભાષાઓમાં પ્રાપ્ત થાય છે.

જ્ઞાનના વિશ્વકોષ તરીકે જાણીતા મહાકાવ્ય “મહાભારત”ની રચના મહર્ષિ કૃષ્ણદ્વૈપાયન વ્યાસ દ્વારા કરવામાં આવેલ છે. મહાભારતનાં ઉપાખ્યાનોનો ઉપયોગ કરી કાલાન્તરે આપણા કવિઓએ કાવ્ય, નાટક, ગદ્ય, પદ્ય, ચંપૂ કથા, આખ્યાયિકા વગેરે વિવિધ પ્રકારના સાહિત્યનું સર્જન કર્યું છે

ભારતીય સંસ્કૃતિના આધારભૂત ગ્રંથ “શ્રીમદ્ ભગવદ્ગીતા” મહાભારતનો જ એક ભાગ છે. “ગીતા”ને ઉપનિષદોનો સાર કહેવાય છે. “શ્રીમદ્ ભગવદ્ગીતા”નું ભાષાન્તર વિશ્વની પ્રમુખ ભાષાઓમાં એકાધિક રીતે મળી આવે છે.

મહર્ષિ પાણિનીના નિયમો વડે સંસ્કૃતભાષા લોકભોગ્ય બની પરિણામે આપણે અનેક પ્રશિષ્ટ કૃતિઓ મેળવી શક્યા છીએ. વિશ્વમાં આજે સંસ્કૃતની અનેક કૃતિઓ મહત્વનું સ્થાન ધરાવે છે. મહાકાવ્યો, ગીતિકાવ્યો, અન્યોક્તિઓ, પ્રહેલિકાઓ તથા નાટકો સંસ્કૃત સાહિત્યમાં “કાવ્ય” ના નામથી

ઓળખાય છે. કાવ્ય શબ્દ સંસ્કૃત ભાષામાં વિશાળ અર્થમાં પ્રયોજાય છે સંસ્કૃત સાહિત્ય રત્નાકર જેવું છે. સંસ્કૃતમાં મહાકાવ્ય, નાટક, ગદ્યકાવ્ય, પદ્યકાવ્ય, ગીતિકાવ્ય, ઐતિહાસિક મહાકાવ્ય, આખ્યાન સાહિત્ય, ચંપૂ કાવ્યવગેરે લૌકિક સાહિત્યના નિર્માણે સંસ્કૃત સાહિત્યને સમૃદ્ધ બનાવ્યું.

ભાસ પ્રમુખ સાહિત્યકાર ગણાય છે. ઇ.સ.1912 માં ભાસ રચિત 13 નાટકો કે જે “ભાસનાટ્યચક્ર” તરીકે ઓળખાય છે તે ટી. ગણપતિશાસ્ત્રીએ પ્રકાશમાં આણ્યા છે. જેમાંની “સ્વપ્નવાસવદત્તમ્” જેવી નાટ્યકૃતિને અગ્નિ પણ બાળી ન શક્યો” તેવા વાક્યથી સન્માનિત કરવામાં આવી છે. ભાસ દ્વારા રચિત અન્ય કૃતિઓમાં દૂતવજ્ર, કર્ણભાર, પંચરાત્ર, પ્રતિમા નાટક, પ્રતિજ્ઞાચૌગન્ધરાયણ, અવિમારક વગેરેનો સમાવેશ થાય છે.

“કાવ્યેષુ નાટકં રમ્યં તત્ર રમ્યા શકુન્તલા” કહીને વિદ્વાનોએ કવિ કાલિદાસની શ્રેષ્ઠ કૃતિ તરીકે “અભિજ્ઞાનશાકુંતલ”ને બિરદાવી છે. મહાકવિ કાલિદાસરચિત “અભિજ્ઞાનશાકુંતલ” નો અંગ્રેજી અનુવાદ વાંચી જર્મન વિદ્વાન ગેટે એટલા આનંદિત થયા કે તેને માથે મૂકીને નાચ્યાહતા એમ કહેવાય છે. કાલિદાસ રચિત અન્ય કૃતિઓમાં માલવિકાગ્નિમિત્રમ, વિક્રમોર્વશિયમ, મેઘદૂત, ઋતુસંહાર કુમારસંભવ, રઘુવંશનો સમાવેશ થાય છે બાણરચિત-કાદંબરી, માધરચિત-શિશુપાલવધ, શુદ્રકરચિત-મૃચ્છકટિકમ, ભારવિરચિત-મૃદ્ધારાક્ષસ, ભવભૂતિરચિત-ઉત્તરરામચરિત, શ્રીહર્ષરચિત-રત્નાવલી, પ્રિયદર્શિકા વગેરે સાહિત્ય સામાજિક અને સાંસ્કૃતિક દૃષ્ટિએ બહુમૂલ્યધરાવે છે.

કથા અને આખ્યાયિકાનો સમાવેશ ગદ્યસાહિત્યમાં થાય છે. ગદ્યસાહિત્યમાં દશકુમારચરિત, વાસવદત્તા અને કાદમ્બરી મુખ્ય છે. ભતૃહરિરચિત નીતિશતક, શૃંગારશતક અને વૈરાગ્યશતક મહત્વના ગીતિકાવ્યો છે. જયદેવરચિત “ગીતગોવિંદ” અને પંડિત જગન્નાથરચિત “ગંગાલહરી” ગીતિકાવ્યોની યશકલગી સમાન છે.

અશ્વઘોષની રચનાઓ બુદ્ધચરિત અને સૌન્દર્યાનંદ, બાણભટ્ટનું હર્ષચરિત, પદ્મગુપ્તની કૃતિ નવસારઆંક અને કલ્હણની રાજતરંગિણી મુખ્ય ઐતિહાસિક મહાકાવ્યો છે. આખ્યાનસાહિત્યને વિદ્વાનો બે ભાગમાં વહેંચે છે નીતિકથા અને લોકકથા. પંચતંત્ર અને હિતોપદેશ નીતિકથાના મુખ્યગ્રંથો છે. સંસ્કૃત કથાસાહિત્યમાં બૃહતકથામંજરી, વૈતાલપંચવિંશતિકા, સિંહાસનદ્વાત્રિંશિકા, શુકસપ્તતિ, પુરુષપરીક્ષા, કથાર્ણવ અને ભોજપ્રબંધ શિરમોર રચનાઓ છે.

ઉપર્યુક્ત સાહિત્ય સિવાય સંસ્કૃત સાહિત્યમાં ગણિત, વિજ્ઞાન, જ્યોતિષ, ખગોળશાસ્ત્ર, વૈદક, સ્થાપત્ય, સંગીત, શલ્યક્રિયા, પશુપક્ષી સમ્બન્ધી વિષયોને લગતા ગ્રંથોની રચના પણ પ્રચૂર માત્રામાં થઈ છે. આમ, સંસ્કૃત સાહિત્યની અવિચ્છિન્ન પરંપરા આઠ હજાર વર્ષોથી ચાલી આવે છે. સંસ્કૃત સાહિત્યની વૈદિક સમયથી શરૂ થયેલ ધારા ગંગાનદીની જેમ વર્તમાન સમયમાં પણ અવિરત ગતિથી ચાલી રહી છે. ડૉ.રામજી ઉપાધ્યાયે તેમની આધુનિક સંસ્કૃત નાટક કૃતિમાં જણાવ્યું છે કે 19મી અને 20મી સદીમાં 400 થી પણ વધુ નાટકો સંસ્કૃતમાં લખાયાં અને પ્રકાશિત થયાં છે. 1961-1970 સુધીના દસ વર્ષના ગાળામાં 52 થી પણ વધુ મહાકાવ્યો સંસ્કૃત ભાષામાં લખાયાં છે એમ વિદ્વાનો કહે છે. પ્રજાપતિ(2005), “સ્વતંત્ર ભારતમાં સંસ્કૃત સાહિત્યએક કિટીકલ સંશોધન” માં જણાવ્યું છે કે સ્વતંત્ર ભારતમાં 1947 પછી સંસ્કૃત સાહિત્યમાં 3000 કરતા પણ વધુ કૃતિઓ નિર્માણ પામી છે. આજે પણ

સંસ્કૃતમાં કાવ્યો નાટકો, મહાકાવ્યો લખાય છે. આજે પણ સંસ્કૃતમાં પત્રપત્રિકાઓ, સામયિકો, સમાચારપત્રો પ્રકાશિત થાય છે. સંસ્કૃતમાં લખાયેલ સાહિત્યનું ભાષાંતર અને ટીકા ભારતની અન્ય ભાષાઓમાં થાય છે. સંસ્કૃત સાહિત્યકૃતિઓમાંથી પ્રેરણા લઈને વર્તમાન ભાષાઓમાં અનેક કૃતિઓ સર્જાતી રહી છે. હાલમાં સંસ્કૃત ભાષામાં ખ્યાસથી વધારે સામયિકો પ્રકાશિત થાય છે. જેમાં દૈનિક, સાપ્તાહિક, માસિક, ત્રિમાસિક અને અન્ય પ્રકાશનોનો સમાવેશ થાય છે. ઉપરાંત સંસ્કૃતમાં કાવ્યો નાટકો, વાર્તાઓ ઇત્યાદિ સ્વરૂપે સાહિત્યનું સર્જન તો થતું જ રહે છે

સ્વ-અધ્યયન

1. વૈદિક સંસ્કૃત અને લૌકિક સંસ્કૃત વચ્ચેસરખામણી કરી તફાવત શોધો.
2. ચારેય વેદોની મૂળકૃતિઓ મેળવી તેના બંધારણ અને વિષયવસ્તુનો અભ્યાસ કરો.
3. “રામાયણ” ના વિષયવસ્તુ પર આધારિત હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષામાં રચાયેલ અને તમે અભ્યાસ કરેલ સાહિત્ય કૃતિઓનાં નામ લેખક સહિત લખો.
4. “મહાભારત”ના વિષયવસ્તુ પર આધારિત હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષામાં રચાયેલ અને તમે અભ્યાસ કરેલ સાહિત્ય કૃતિઓનાં નામ લેખક સહિત લખો.
5. “શ્રીમદ્ ભગવદ્ગીતા” ગ્રંથ મેળવી તેના વિષયવસ્તુ અને બંધારણનો અભ્યાસ કરો.
6. લૌકિક સંસ્કૃત સાહિત્યની નીચેની કૃતિઓના વિષયવસ્તુનો ખ્યાલ આપો :
 1. સ્વપ્નવાસવદત્તમ્
 2. અભિજ્ઞાનશાકુન્તલમ્
 3. મૃચ્છકટિકમ્
 4. ઉત્તરરામચરિતમ્
7. વૈદિક સાહિત્ય અને લૌકિક સાહિત્ય પર ટૂંક નોંધ લખો.
8. મહાકવિ કાલિદાસ રચિત કૃતિઓનાં નામ આપો.
9. મહાકવિ ભાસ રચિત કૃતિઓનાં નામ આપો.
10. ભવભૂતિરચિત ઉત્તરરામચરિતની કથા વાલ્મીકિ રચિત રામાયણની કથાથી કેવી રીતે જુદી પડે છે, સમજાવો.
11. મહાભારતમાં આવતાં ઉપાખ્યાનોનો સંગ્રહ કરો.
12. અગિયાર મુખ્ય ઉપનિષદોનાં નામ જણાવો.
13. અઢાર પુરાણોનાં નામ જણાવો.
14. છ વેદાંગોના નામ જણાવો.
15. સંસ્કૃતમાં રચાયેલ પાંચ મહાકાવ્યોનાં નામ જણાવો.
16. ભારતીય તહેવારોને અનુરૂપ દેવદેવીઓની સ્તુતિનો સંગ્રહ કરી ગાન કરો.
17. દૈનિકક્રિયા માટે વપરાતા શ્લોકોનો સંગ્રહ કરી ગાન કરો.
18. સુભાષિતરત્ન ભાંડાગાર માંથી વિવિધ વિષય આધારિત શ્લોકોનો સંગ્રહ કરી કંઠસ્થ કરો.
19. દૈનિક પ્રાર્થનાસભામાં પંચતંત્ર અને હિતોપદેશની કથાનું કથન કરો.
20. સંસ્કૃત ભાષાની સાહિત્ય સમૃદ્ધિ પર ટૂંક નોંધ લખો.
21. વેદ અને ઉપનિષદના પ્રચલિત મંત્રોનું સંકલન કરી તેનું ગાન કરો.

22. મુખ્ય ઉપનિષદો પૈકી કોઈપણ બે ઉપનિષદો અંગે ટૂંક નોંધ લખો
23. રામાયણ અને મહાભારત પર ટૂંક નોંધ લખો.

1.5 સંસ્કૃત ભાષાનો ઉદભવ

ભારતીય આર્યભાષા સંસ્કૃત ભાષાનું પ્રાચીનતમ રૂપ આપણને ઋગ્વેદમાં જોવા મળે છે. ઋગ્વેદને સૌથી પ્રાચીન ગ્રંથ માનવામાં આવે છે જેની રચના આશરે 4000 વર્ષ પહેલા થયેલી મનાય છે. સંસ્કૃત ભાષાની ઉત્પત્તિ વેદ-બ્રાહ્મણ-આરણ્યક-ઉપનિષદોની ભાષા તરીકે થઈ હશે. બાદમાં રામાયણ-મહાભારત સૂત્રગ્રંથો અને સાહિત્યતરીકે આગળ વધતાં વધતાં એ ભાષા ભૂમિકા પાણિનિએ વ્યક્ષરણથી બાંધી લીધી. પાણિનિએ પોતાના અષ્ટાધ્યાયી વ્યાકરણ સૂત્રોમાં સાહિત્યિક સંસ્કૃત ભાષાને લોકભાષા કહી છે. સંસ્કૃતભાષાનો ઉલ્લેખ વાલ્મીકિ રામાયણ સુન્દરકાંડમાં “વાયં યોદાહરિષ્યામિ માનુષીમિહ સંસ્કૃતામ” તથા ભરતનાં નાટ્યશાસ્ત્રમાં “સંસ્કૃતં પ્રાકૃતં ચૈવ પાઠ્યં પ્રયુજ્યત્સેવરૂપે જોવા મળે છે. આથી સંસ્કૃત ભાષા સૌથી પ્રાચીનતમ ભાષા છે એમ કહી શકાય.

પ્રશ્ન-1 નીચે આપેલ પ્રશ્નોનાં સવિસ્તાર જવાબ આપો.

1. સંસ્કૃતભાષાના ઉદભવ વિશે વિસ્તૃત ચર્ચા કરો.
2. સંસ્કૃત સૌથી પ્રાચીનભાષા છે.-ચર્ચા કરો.

પ્રશ્ન-2 નીચે આપેલ પ્રશ્નોનાં એક-એક વાક્યમાં જવાબ લખો

1. વિશ્વનો સૌથી પ્રાચીનગ્રંથ કયો છે?
2. પાણિનિએ અષ્ટાધ્યાયીમાં સંસ્કૃતભાષાને કેવી કહી છે
3. પાણિનિના વ્યાકરણગ્રંથનું નામ આપો
4. સંસ્કૃતભાષાનો ઉલ્લેખ રામાયણના કયા કાંડમાં થયેલો છે
5. નાટ્યશાસ્ત્રના લેખક કોણ છે?

1.6 આર્યભટ્ટ, વરાહમિહિર, ભાસ્કરાચાર્ય વગેરેનો પરિચય

તત્કાલીન સાહિત્યના આધારે કોઈ પણ રાષ્ટ્રની સંસ્કૃતિનો પરિચય મેળવવાની પ્રથા છે. ભારતીય સાહિત્યનું શ્રેષ્ઠ પણ આવા સાહિત્ય-ભાવકોના કારણે છે. સંસ્કૃત સાહિત્યની ગરિમા અદ્વિતીય છે. આજે પણ ભારતે વિશ્વને પ્રદાન કરવા જેવી કોઈ બાબત હોય તો તે છે આપણી સંસ્કૃતિ અને તેની મૂલ્યવાન નીપજ એટલે આપણું સાહિત્ય ગીર્વાણવાણીના સાહિત્યે સમગ્ર વિશ્વને જ્ઞાનના અનુપમ ભંડારો ખોલી આપ્યા છે. વિવિધ વિષયોમાં ગ્રંથસ્થ થયેલ જ્ઞાન સમકાલીન સમયમાં પણ એટલું જ ઉપયોગી છે.

વિશ્વને “શૂન્ય”ની ભેટ આપનાર ભારત છે. સિંધુ સભ્યતાના સમયનાં પ્રાપ્ત થયેલ રેખાચિત્રો ઉપરથી રેખાગણિતનો પરિચય આપણને મળે છે. આયત, વર્ગ, વૃત્ત, સમબાહુ, ત્રિભુજ વગેરે જેવા

શબ્દોનો ઉલ્લેખ વૈદિક સાહિત્યમાં જોવા મળે છે. શૂન્ય, દશાંશ પદ્ધતિ, અંકગણિત, બીજગણિત, વર્ગમૂળ અને ઘનમૂળ જન્મદાતા ભારત છે. લેબનિઝ અને ન્યૂટન કરતાં ત્રણ સદી પહેલાં આ તમામની સમજ આપી હતી. શૂન્યને સંકેત “0” આપનાર પણ ભારત છે. આમ તો ગણિત અને ખગોળનાં મૂળ વેદોમાં રહેલ છે

આર્યભટ્ટ

ઈ.સ.પૂર્વે 476 માં જન્મેલા આર્યભટ્ટ ભારતના પ્રથમ ગણિત શકાય તેવા ગણિતશાસ્ત્રી અને જ્યોતિષશાસ્ત્રી હતા. “પૃથ્વી ગોળ છે, તે પોતાની ધરી પર ફરે છે, અને તે સૂર્યની આસપાસ ફરે છે” તેવું “આર્યસિદ્ધાંત” અને “આર્યભટ્ટીય” ગ્રંથોમાં દર્શાવવામાં આવ્યું છે. આર્યભટ્ટ દ્વારા રચિત “આર્યભટ્ટીય” નામક ગ્રંથમાં ચાર ખંડો છે તે પૈકી પ્રથમ ખંડમાં સંજ્ઞાઓને અક્ષરો દ્વારા વ્યક્ત કરવાની સંકેતલિપિ. બીજા ખંડમાં વર્ગમૂળ ઘનમૂળ ક્ષેત્રફળ વગેરે શોધવાનાં સૂત્રો/નિયમો. ત્રીજા ખંડમાં સૌરવર્ષ, ચાંદ્રમાસ, નક્ષત્રમાસ, અધિમાસ તથા ગ્રહોનાં સ્થાનને લગતી બાબતો તથા ચોથા ખંડમાં ધ્રુવવૃત્ત અને ક્ષિતિજ વગેરેને લગતી વિગતો છે. આમ કુલ ચાર ખંડો અને કુલ 121 શ્લોકોમાં ગણિતના વિવિધ નિયમોને સ્પષ્ટ રીતે સમજાવ્યા છે. આર્યભટ્ટે વર્તુળની રચના જીવા, ત્રિભુજનું ક્ષેત્રફળ, વ્યાસ, ત્રિજ્યા વગેરેની વિશદ સમજ આપી છે. આર્યભટ્ટે 0 ની શોધ કરી 1 થી 10 સુધીની સંખ્યા આપી. તેમણે આપેલ સૂત્રોથી પૃથ્વી અને સૂર્ય વચ્ચેનું ચોક્કસ અંતર જાણી શકાય છે. આર્યભટ્ટે પોતાના સમયમાં “સૂર્યમાં કાળા ડાઘ છે અન્ય ગ્રહોને પોતાનો પ્રકાશ નથી અને તે સૂર્યના પ્રકાશથી જ પ્રકાશિત થાય છે.” તેવું પ્રતિપાદિત કર્યું શનિના સાત ઉપગ્રહ છે. એવી સૌ પ્રથમ શોધ તેમણે કરી. દિવસ-રાતનો ચોક્કસ સમયગાળો, ઋતુઓનો સમયાવધિ, સપ્તાહના સાત દિન, તેમના નામ સૌ પ્રથમ આ વિશ્વને તેમણે આપ્યા. જે આજ દિન સુધી સમગ્ર વિશ્વની તમામ સંસ્કૃતિઓ અને ધર્મોએ કોઈ પણ પ્રકારના ફેરફાર વિના સ્વીકાર્યા. જેનો પ્રભાવ હિન્દુ ધર્મના પંચાંગ પર જોવા મળે છે. ચંદ્ર અને સૂર્યગ્રહણ ક્યારે થશે અને હવે કેટલા વર્ષો પછી થશે તેનો ચોક્કસ સમય બતાવતાં સૂત્રો તેમણે શોધ્યાં. ગણિતમાં ત્રિકોણમિતિ એ આર્યભટ્ટની જ બહુમૂલ્ય શોધ છે. જેના આધારે તમામ પ્રકારના નિર્માણકાર્યો થાય છે. આ મહાન ગણિતશાસ્ત્રીના સન્માનમાં રતે તેના પ્રથમ ઉપગ્રહનું નામ આર્યભટ્ટ રાખ્યું હતું.

બ્રહ્મગુપ્ત

નવમી સદીના મહાન ગણિતશાસ્ત્રી ગુપ્તે તેમના “ ટ” ગ્રંથમાં દશાંશ સંખ્યાપદ્ધતિ આપી. બ્રહ્મગુપ્ત દ્વારા રચાયેલ “બ્રાહ્મ ટ સિદ્ધાંત”માં ત્રિકોણમિતિની સમજ આપવામાં આવી છે.

વરાહમિહિર:-

વરામિહિર (ઈ.સ.499) પ્રસિદ્ધ જ્યોતિષશાસ્ત્રી હતા. તેમના પ્રયત્નો એ જ જ્યોતિષને એક વિજ્ઞાનનું સ્વરૂપ આપ્યું. જ્યોતિષશાસ્ત્રમાં ગાણિતિય ગણનાનું સંકલન કર્યું અને ગાણિતિકજ્યોતિષ નામની શાખાની સ્થાપના કરી હતી. તેમણે પ્રતિપાદિત કર્યું કે પૃથ્વી ગોળ છે અને પૃથ્વીની વસ્તુઓને

કોઈ આકર્ષણ શક્તિ પોતાની તરફ ખેંચી રાખે છે. જેને બાદમાં ગુરુત્વકર્ષણબળનું નામ આપવામાં આવ્યું. તેમણે ભૂસ્ત્રશાસ્ત્રના આધારે પ્રતિપાદિત કર્યું કે છોડ અને ઊંચા જમીન નીચે પાણી હોવાના સૂચકાંકો છે પૃથ્વી સૂર્યની આસપાસ 365.2563 દિવસમાં એક ચક્ર પૂરું કરે છે એવું બતાવનાર વરાહમિહિર હતા. વરાહમિહિરે પોતાના ગ્રંથ “પંચસિક્ષાંતિકા”માં પૃથ્વી અને સૂર્યની સ્થિતિ વિશે સ્પષ્ટતા કરતાં લખ્યું છે:

પંચમહાભૂતમયસ્મારાગન પંજરે મહી ગોલ:

ખેયસકાન્તાન્તઃ સ્થો લોહ ઇવાવસ્થિતો વત્તઃ

અર્થાત્ પંચમહાભૂતોમાંથી બનેલ પૃથ્વીનો ગોળો તારા સમૂહના પિંજરામાં એવી રીતે ઘેરાઈને રહેલો છે કે જાણે આકાશમાં ચુંબકોની વચ્ચેલોખંડ પડ્યું હોય.

ઉપરની ચર્ચા પરથી ખગોળ અને ભૂગોળ વિષયક ભારતીય ચિંતનનું ઊંડાણ જણાઈ આવે છે પૃથ્વી ગોળ છે તેવું કહેનાર કોપરનિકસ(ઇ.સ.1473) અને ગેલિલિયો(ઇ.સ.1564) ના જન્મ પહેલાં ભારતીય ખગોળશાસ્ત્ર વિકસી ચૂક્યું હતું. તારાઓ અને ગ્રહો વિશેની સૂક્ષ્મ માહિતી સંસ્કૃતના ગ્રંથોમાં મળી રહે છે. આજે પણ ખગોળવૈજ્ઞાનિકો માટે સંસ્કૃતના ગ્રંથો પથદર્શક બની રહ્યા છે

ભાસ્કરાચાર્ય :-

ભાસ્કરાચાર્ય દ્વારા રચિત “લીલાવતી” ગણિતશાસ્ત્ર માટે ઉપયોગી ગ્રંથ છે ભાસ્કરાચાર્યના મહાનગ્રંથ “સિક્ષાંત શિરોમણિ”ની રચના ઇ.સ. 1150માં થઈ હતી આ ગ્રંથોમાં પૃથ્વી સૂર્યની આસપાસ ફરે છે અને તેને કારણે રાત-દિવસ થાય છે એવું દર્શાવાયું છે “સિક્ષાંત શિરોમણિ”માં બીજગણિતનો અલગ વિભાગ છે. “શૂન્ય”ની સંકલ્પનાને આચાર્ય ભાસ્કર ખૂબ જ સરળ રીતે સમજાવતાં લખે છે:

“ખયોગે વિયોગે ધનર્ન તથૈવ તિષ્ઠતે

ચ્યૂતમ્ શૂન્યસ્તદ્વિપર્યાસમેતિ ”

અર્થાત્ શૂન્યમાં કંઈ ઉમેરો કે શૂન્યે કોઈ સંખ્યામાંથી બાદ કરો તો પરિણામ શૂન્યજ રહેશે. શૂન્યમાંથી ધનરાશિ બાદ કરવાથી ઋણરાશિ મળશે 12મી સદીના મહાન ગણિતશાસ્ત્રી ભાસ્કરાચાર્યે પાઇનું મૂલ્ય 22/7 અને 3.14 બતાવ્યું. ભાસ્કરાચાર્યે તેમના “સૂર્ય સિક્ષાંત નામના ગ્રંથમાં ગુરુત્વકર્ષણ બળ વિશે વાત કરી. ગણિતમાં અનંતનો ખ્યાલ આપ્યો.

વિશ્વના અન્ય દેશો પાસે ગણિતક્ષેત્રે આટલો ભવ્ય વારસો જોવા મળતો નથી. આ સમગ્ર વારસો સંસ્કૃત ભાષાના ગ્રંથોમાં સચવાયેલો છે આ વારસાનું મહત્વ વિશેષ એટલા માટે છે કે જ્યારે અન્ય દેશો ગણિતશાસ્ત્રમાં પગરવ માંડતા હતા ત્યારે ભારતવર્ષ બીજગણિત અને ભૂમિતિના કોયડાઓ ઉકેલવામાં નિષ્ણાત બની ચૂક્યું હતું.

પાણિનિ :-

વ્યાકરણને વેદરૂપી પુરૂષનું મુખ કહેવાયું છે સંસ્કૃત ભાષાનું વ્યકરણ આજે પણ કમ્પ્યુટર નિષ્ણાતોમાં આદરનું સ્થાન ધરાવે છે. વિશ્વની શ્રેષ્ઠ ભાષા બનવાનું સામર્થ્ય સંસ્કૃત ભાષામાં છે અને તેનો આધાર ભાષાના વ્યાકરણને કારણે છે. કારણ સંસ્કૃત ભાષાનું વ્યકરણ વૈજ્ઞાનિક ઢબે વિકસેલ છે.

આ શ્રેષ્ઠતાનું શ્રેય જાય છે મહર્ષિ પાણિનિના ફાળે મહર્ષિ પાણિનિએ સૂક્ષ્મતાપૂર્વક ચિંતન કરીને નિયમો તારવ્યા છે. મહર્ષિ પાણિનિકૃત “અષ્ટાધ્યાયી” નામના વ્યાકરણગ્રંથ ઉપર કાત્યયને વાર્તિકો લખ્યાં, પતંજલીએ ભાષ્ય રચ્યું. ભદ્રેજી દીક્ષિતરચિત ગ્રંથ “સિક્ષાંત કૌમુદી દ્વારા આજે પણ શિક્ષણકાર્ય થઈ રહ્યું છે. સંસ્કૃત વ્યાકરણના દ્વિવચનોની વિશેષતા તેને અદ્વિતીય બનાવે છે. સંસ્કૃતભાષાનાં ક્રિયાપદો સંપૂર્ણ વાક્યોની ગરજ સારે છે. સંધિના તાર્કિક નિયમો અને સમાસનાં યુગ્મોધ્યાનાકર્ષક છે. ઉપસર્ગ દ્વારા થતો શબ્દ અને અર્થમાં વધારો અનુપમ છે

નાગાર્જુનઃ

પ્રાચીન ભારતમાં રસાયણો અને ધાતુઓ સંબંધી પ્રાયોગિક કાર્ય પુષ્કળ પ્રમાણમાં થયું છે સંસ્કૃત ભાષાના ગ્રંથો “રસરત્નાકર”, “રસેન્દ્રમંગલ” તથા “યોગરત્નમાલા”માં આચાર્ય નાગાર્જુને વિવિધ રસાયણોના પ્રયોગોનું વર્ણન કર્યું છે સોમદેવરચિત “રસેન્દુ ચૂડામણી”માં પણ રસાયણોનો પ્રયોગ અને તેના ઉપયોગ સંબંધી વિગતો આપી છે ઔષધ તરીકે પારાનો ઉપયોગ કઈ રીતે કરવો તેની વિગતો આયુર્વેદમાં મળી આવે છે

વર્તમાન સમયમાં વિશ્વમાં આયુર્વેદની વધતી જતી લોકપ્રિયતાએ સમગ્ર વિશ્વનું ધ્વજ ભારત પ્રતિ કેન્દ્રિત કર્યું છે. તે આયુર્વેદના મૂળગ્રંથો સંસ્કૃત ભાષામાં છે. આરોગ્યશાસ્ત્રમાં નિદાન અને ઉપચારની સંકલ્પના સ્પષ્ટ હતી. શલ્યચિકિત્સાના નિષ્ણાત ચરક, વાઙ્મદ્, સુશ્રુત જીવક, ભાવમિશ્ર વગેરે સંસ્કૃત ભાષા અને આરોગ્યશાસ્ત્ર સાથે જોડાયેલા છે. સુશ્રુતરચિત “સુશ્રુત સંહિતા” શલ્યચિકિત્સાનો આધારભૂત ગ્રંથ છે એ જ રીતે ચરક દ્વારા રચાયેલ “ચરક સંહિતા” કાયાચિકિત્સાનો આધારભૂત ગ્રંથ છે આરોગ્યવિષયક ગ્રંથો એ ભારતીય સાહિત્યનો અમૂલ્ય વારસો છે.

કૌટિલ્યનું “અર્થશાસ્ત્ર” રાજનીતિ અને અર્થશાસ્ત્ર માટે, વાત્સ્યાયનમુનિ રચિત “કામસૂત્ર” ગૃહસ્થ જીવન માટે, પતંજલી રચિત “યોગસૂત્ર” સ્વસ્થ શરીર માટે, ભરતમુનિ રચિત “નાટ્યશાસ્ત્ર” નાટક અને સંગીત માટે, આજે પણ સમગ્ર વિશ્વને દિશા સૂચન કરે છે

સ્વ-અધ્યયન

1. ઇન્ટરનેટનો ઉપયોગ કરી સિન્ધુ સભ્યતા સમયનાં રેખાચિત્રોનો સંગ્રહ કરી નોંધ લખો.
2. અંકગણિત અને બીજગણિતના નિયમોનો અભ્યાસ કરો.
3. વર્ગમૂળ ધનમૂળ અને ક્ષેત્રફળ શોધવાનાં સૂત્રો મેળવી અભ્યાસ કરો.
4. પ્રાચીન સમયમાં વપરાતી સંકેતલિપિ મેળવી અભ્યાસ કરો.
5. હિન્દુ ધર્મનું પંચાંગ મેળવી તેમાં રહેલ ગાણિતિક જ્યોતિષનો અભ્યાસ કરો.
6. મુસ્લીમ ધર્મનું પંચાંગ મેળવી તેમાં રહેલ ગાણિતિક જ્યોતિષનો અભ્યાસ કરો.
7. નિર્માણકાર્યમાં ત્રિકોણમિતિના ઉપયોગ પર ટૂંકનોંધ લખો
8. પ્રાચીન સ્મારકોના ફોટા મેળવી તેમના બાંધકામમાં રહેલ ગાણિતિક આકારોનો અભ્યાસ કરો.
9. અવકાશીય તત્ત્વો - સૂર્ય ચંદ્ર, તારા, ગ્રહો, નક્ષત્રો સાથે જોડાયેલ ગાણિતિક બાબતોનો અભ્યાસ કરો.
10. આર્યભટ્ટ કરેલ શોધ પર ટૂંકનોંધ લખો.

11. ભાસ્કરાચાર્યે કરેલ શોધ પર ટૂંકનોંધ લખો.

13. નીચે જણાવેલ વિષયોમાં સંસ્કૃત ભાષાનું અને ભારતનું પ્રદાન દર્શાવો

1. ગણિતશાસ્ત્ર 2. વ્યાકરણશાસ્ત્ર 3. આરોગ્યશાસ્ત્ર

1.7 સમગ્ર એકમનો સારાંશ

- વેદકાલીન સાહિત્યમાં ચાર વેદો, બ્રાહ્મણો, આરણ્યકો તેમજ ઉપનિષદો નો સમાવેશ થાય છે
- વૈદિક સાહિત્ય ની ભાષા પ્રશિષ્ટ સંસ્કૃત કરતાં ભિન્નતા ધરાવે છે
- રામાયણ અને મહાભારત આર્ષ ગ્રંથો છે
- સંસ્કૃતનું લૌકિક સાહિત્ય અપાર સમૃદ્ધિની સાથે પુષ્કળ સમૃદ્ધિ ધરાવે છે
- ભારતીય સાહિત્યમાં અનેક વિદ્યાશાખાના વિષયો આવરી લેવાયા છે

1.8 અસાઈનમેન્ટ

1. વૈદિક મંત્રોના ઉચ્ચારણ વિશે માહિતી મેળવો અને તેની વિશેષતાઓ નોંધો

2. સંસ્કૃત ભાષાના વ્યાકરણની વિશેષતાઓ નોંધો

2. સંસ્કૃતનો સાહિત્યિક વારસો

- 2.1 પ્રસ્તાવના
- 2.2 ઉદ્દેશ્ય
- 2.3 સંસ્કૃતની પ્રચલિત સાહિત્યિક કૃતિઓ અને તેમાં સમાવિષ્ટ મૂલ્યોનો પરિચય
- 2.4 લૌકિક સાહિત્ય
- 2.5 સંસ્કૃત ભાષાનો ઉદભવ
- 2.6 આર્યભટ્ટ, વરાહમિહિર, ભાસ્કરાચાર્ય વગેરેનો પરિચય
- 2.7 સમગ્ર એકમનો સારાંશ
- 2.8 અસાઈનમેન્ટ

2.1 પ્રસ્તાવના

સંસ્કૃતએ વિશ્વની પ્રાચીનતમ ભાષા છે. તેની ઉત્કૃષ્ટતા સમયની કસોટીમાંથી પાર ઉતરી છે. દુનિયાના દેશો જ્યારે આદિમ અવસ્થામાં હતા ત્યારે સંસ્કૃતમાં સાહિત્ય ધર્મ, અધ્યાત્મ, વિજ્ઞાન ઇત્યાદિ ક્ષેત્રે નવસર્જન થવાની શરૂઆત થઈ ગઈ હતી. જેથી આ ભાષા ભારતીય સંસ્કૃતિની આગવી ઓળખ બની. આમ ભારતીય સંસ્કૃતિને સાચી રીતે જાણવા અને ઓળખવા માટે સંસ્કૃત ભાષાનો અભ્યાસ અનિવાર્ય છે.

2.2 ઉદ્દેશ્યો

- વિદ્યાર્થીઓ સંસ્કૃત સાહિત્યની પ્રચલિત કૃતિઓ તેમજ મૂલ્યોથી પરિચિત થાય.
- વિદ્યાર્થીઓ સંસ્કૃત વિષયનો અન્ય વિષયો સાથે અનુબંધ કેળવે
- વિદ્યાર્થીઓ વૈશ્વિક પરિપ્રેક્ષ્યમાં સંસ્કૃત ભાષાનું મહત્વ સમજે.

2.3 સંસ્કૃતની પ્રચલિત સાહિત્યિક કૃતિઓ અને તેમાં સમાવિષ્ટ મૂલ્યોનો પરિચય

સંસ્કૃત સાહિત્યમાં અપરંપાર સાહિત્યની સમૃદ્ધિ ભરેલી છે. આ ભાષામાં વૈદિક સાહિત્ય પ્રાચીનતમ છે. જેમાં વેદ, બ્રાહ્મણગ્રંથો, આરણ્યકો, ઉપનિષદ અને વેદાંગોનો સમાવેશ થાય છે. આ સાહિત્ય ભારતીય સંસ્કૃતિના આદર્શો અને મૂલ્યોપસ્થાપિત કરી લોકજીવનને હજી પણ પ્રેરણાનાં પીયૂષ પાઇ રહ્યું છે.

2.3.1 સાહિત્યકૃતિઓનો ટૂંકમાં પરિચય

ભાસ

ઈ.સ.1912 પહેલા ભાસની કૃતિઓ ઉપલબ્ધ ન હતી. ત્યારબાદ ટી.ગણપતિશાસ્ત્રીના સંશોધનને પરિણામે, ભાસનાં 13 નાટકોની પ્રતો મળી. આ નાટકો “ભાસનાટ્યચક્ર” તરીકે પ્રસિદ્ધ થયાં. જેમની કૃતિઓમાં “સ્વપ્નવાસદત્તમ” કૃતિની માહિતી મેળવીશું.

સ્વપ્નવાસવદત્તમ :- પ્રસ્તુત નાટક ઉદયન કથા પર આધારિત છે. કુલ-6 અંકોમાં વિભાજીત થયેલ છે. સમગ્ર નાટકમાં ભાસની મનોવૈજ્ઞાનિક વિચારસરણી જોવા મળેલ છે. આ કથાનાં મૂળ બૃહત્કથા અને લોકકથામાં જોવા મળે છે. ભાસે જરૂરી પરિવર્તનો કરી નાટકને જીવંત બનાવ્યું છે. ભાસનાં અન્ય નાટકો જેમાં દૂતવાક્ય, દૂતઘટોત્કચ, કર્ણભાર, મધ્યમવ્યાયોગ, પંચતંત્ર ઉરૂભંગ, અભિષેકનાટક, પ્રતિમાનાટક, બાલચરિતમ્, પ્રતિજ્ઞા યૌગન્ધરાયણ, દરિ ચારૂદત્ત તેમજ અવિમારક મુખ્ય છે.

કાલિદાસ

મહાકવિ કાલિદાસનો સમય ઇ.સ.પૂ.વે પહેલી સદીનો હશે તેવું ભારતીયપરંપરા સ્વીકારે છે. જીવનકાળ દરમ્યાન તેઓએ રચેલ કૃતિઓ રઘુવંશમ્ કુમારસંભવમ્, મેઘદૂતમ્, ઋતુસંહારમ્, માલવિકાગ્નિમિત્રમ્, વિક્રમોર્વશિયમ્, અને અભિજ્ઞાનશાકુંતલમ્, જેમાં આપણે અભિજ્ઞાનશાકુંતલમ્, વિશે જોઈશું.

અભિજ્ઞાનશાકુંતલમ્ :-

રાજા દુષ્યંત અને શકુંતલાના પ્રેમનું નિરૂપણ કરતું આ નાટક નાટકોમાં વિશેષ સ્થાન ભોગવે છે. પ્રસ્તુત નાટક સાત અંકોમાં વિભાજીત છે. પરંપરા કહે છે કે “કાલિદાસસ્ય સર્વસ્વ અભિજ્ઞાનશાકુંતલમ્” એ મુજબ સમગ્ર નાટક નાટ્યાત્મકતાથી ઘબકે છે. અહીં પ્રકૃતિ પણ જીવંત પાત્ર તરીકે સ્પષ્ટ થઈ છે. આંસુ સારતી લતા વાચકને ભીંજવી દે છે. અંક 1, 3, 5, 7 નાટ્યાત્મક તેમજ 4 અને 6 કાવ્યાત્મક છે. ટૂંકમાં પુનર્મિલનના નાટક તરીકે પ્રસ્તુત નાટક વિશ્વભરમાં પ્રખ્યાત બન્યું છે.

ભવભૂતિ

ભવભૂતિએ પોતાની માલતીમાધવ નામની કૃતિમાં પોતેજ પોતાનો જન્મતેમજ સ્થળ દર્શાવેલ છે. ઘણા વિદ્વાનો મતમતાંતરના અંતે માને છે કે ભવભૂતિનો સમય 7મી સદીના અંત અને 8મી સદીનો આરંભ હશે. જેઓ એ તેમના સમયકાળ દરમ્યાન 3 કૃતિઓની રચના કરી જેમાં મહાવીરચરિતમ્, માલતીમાધવમ્ તેમજ ઉત્તરરામચરિતમ્ છે. જેમાંથી આપણે ઉત્તરરામચરિતમ્ વિશે ટૂંકમાં માહિતી મેળવીશું.

ઉત્તરરામચરિતમ્ :-

પ્રસ્તુત નાટક રામાયણના ઉત્તરકાંડમાંથી કથાવસ્તુ લઈને નિર્માણ પામેલું નાટક છે સંસ્કારિતા અને માનસશાસ્ત્રીય દૃષ્ટિકોણથી રચાયેલ એક અપૂર્વ રચના છે જેમાં દાંપત્યપ્રેમનું

પ્રભાવશાળી ચિત્રણ રજૂ કર્યું છે. જેમાં કુલ 7 અંકોમાં આ નાટક વહેંચાયેલું છે “કારુણ્યે ભવભૂતિરેવ તનુતે” મુજબ નાટકમાં કરુણરસનું પ્રાધાન્યજોવા મળે છે. સાથે ધર્મ શ્રંગાર પણ જોવા મળે છે. દાંપત્યમંગલ એ આ નાટકનો કેન્દ્રવર્તી વિચાર રહ્યો છે.

2.4 સંસ્કૃત નો અન્ય વિષયો સાથે નો અનુબંધ

સંસ્કૃતભાષા ભારતીય ભાષાઓના વિકાસમાં અગ્રીમ યોગદાન આપનાર રહી છે. ધીમે ધીમે ક્રમશઃ પ્રાદેશિક ભાષાઓ વિકાસ પામી અને સમૃદ્ધ બની આ ભાષાઓમાં ગુજરાતી હિન્દી, મરાઠી, પંજાબી, બંગાળી, આસામી, ઉડિયા વગેરેમાં સંસ્કૃત ભાષાનું મહત્ત્વનું યોગદાન છે

2.4.1 યોગ:

જ્યારે માનવીનું મન અશાંત બની જાય છે ત્યારે સંસ્કૃતમાં રચાયેલું દર્શનશસ્ત્ર શાંતિ બક્ષે છે. યુનેસ્કોએ જણાવ્યું છે કે યુદ્ધ માનવીના મનમાં જન્મે છે. તેથી પહેલાં મનને બદલવું જોઈએ અને યોગ દ્વારા જ મન સંતુલિત બની શકે છે.

2.4.2 આયુર્વેદ:

ઋષિવરોએ ચાર વેદોની રચના કરી છે. તેમાંથી આવિષ્કાર પામેલ આયુર્વેદ રોગચિકિત્સા, નિદાન અને તેને લગતા ઔષધોની જાણકારી આપે છે. વિદેશી જિજ્ઞાસુઓ પણ આયુર્વેદની મહત્તા જાણી તેના વિશે વધુ જાણકારી મેળવવા ભારત ભણી આવે છે.

2.4.3 કળા અને સાહિત્ય:

કલા અને સાહિત્ય ભારતીય સંસ્કૃતિના પ્રાણ તત્વો છે. સંસ્કૃતની સાહિત્ય કૃતિઓમાં ભારતીય સાહિત્યમાં અનેક લલિત કલાઓનો ઉલ્લેખ થયેલો જોવા મળે છે. અપભ્રંશ સ્થાપત્ય અને શિલ્પો જગ મશહુર છે. શાસ્ત્રીય સંગીત અને નૃત્યની પ્રતિષ્ઠા અદ્વિતીય છે આ ઉપરાંત અનેકવિધ કલાઓનો વિકાસ સંસ્કૃતને આભારી છે

2.4.4 વનસ્પતિ વિજ્ઞાન:

આ અધ્યયનની પરંપરા ઋગવેદના સમયથી ચાલી રહી છે. તેમજ મહાભારતમાં પણ તેને ઠેકઠેકાણે ઉલ્લેખો છે.

સાંપ્રત સમયમાં સંસ્કૃત્વું પોતાનું રાષ્ટ્રીય મહત્ત્વ છે. પ્રાચીન સમયમાં ભારતની રાષ્ટ્રભાષા છે. ધર્મભાષા સંસ્કૃત હતી આજે તે માત્ર ધર્મ ભાષા તરીકે જ રહી છે. સમગ્ર રાષ્ટ્રને ભાવનાત્મક સ્તરે એક સૂત્રે બાંધી રાખવાનું કાર્ય સંસ્કૃત ભાષા સિવાય બીજી કોઈ ભાષા કરી શકે તેમ નથી

1..ભારતીય સંસ્કૃતિમાં સંસ્કૃતભાષાનું મહત્ત્વ

2.સંસ્કૃત ભાષા ભાષાઓની જનની છે. સમજાવો.

3.સંસ્કૃતભાષાને લોકપ્રિય બનાવવાના ઉપાયો જણાવો

4. સંસ્કૃત ભાષાનો ગણિત, વિજ્ઞાન, સામાજિક વિજ્ઞાન ઉપરનો પ્રભાવ જણાવો..

2.5 વૈશ્વિક પરિપ્રેક્ષ્યમાં સંસ્કૃત:

આદિકાળથી સંસ્કારોનું સિંચન કરનારી ભાષા સંસ્કૃત રહી છે. સાહિત્યના વારસાને અખંડ રાખી જગતની પ્રત્યેક પેઢીના માટે ઉત્તમોત્તમ મૂલ્યોઆપવાનું પુણ્યકાર્ય તેના ભાગે આવ્યું છે. વિશ્વની પ્રાયઃ તમામ ભાષાઓનું પ્રથમ ચરણ જેમાં છે તેવી સંપૂર્ણ દ્વિઝાકરણીય અને વૈજ્ઞાનિક ભાષા છે. આધુનિક વૈજ્ઞાનિક યુગમાં પોતલા વારસાથી મહત્ત્વ પ્રદાન કરનારી તેમજ વિવિધ જ્ઞાન ક્ષેત્રે વિશ્વને માર્ગદર્શન આપનાર ભાષા તરીકેનું બહુમાન મેળવનાર બની છે. આજે પણ વિશ્વસ્તર પર પોતાના નામની ચર્ચા જગાવનારી સંસ્કૃત ભાષા ખરેખર પોતાનું ચિરતત્વનિખારે છે.

2.5.1 સંસ્કાર સંસ્કૃતિનું રક્ષણ:

ભાષા સંસ્કારની વાહિની છે. સંસ્કૃત માત્ર કોમ્યુનિકેશનનું માધ્યમ જ ન રહેતાં તે સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિનું સંરક્ષણસંવર્ધન કરનાર અવિરત ઝરણું બન્યું છે. ગુજરાતના સાહિત્યકાર ગુણવંત શાહ નોંધે છે કે જ્યારે એક ભાષા લુપ્ત થાય છે. ત્યારે એક સંસ્કૃતિ પણ અસ્ત પામે છે. અફસોસ એ છે કે આપણી દેવભાષા સંસ્કૃત પણ લુપ્તથવાના આરે છે અને તે કારણ ન બનવા દેવા માટે આપણે સંસ્કૃત ભાષાનું મૂલ્યસમજવું રહ્યું અને વર્તમાન પરિપ્રેક્ષ્યમાં દેવભાષાના સ્થાનની ચર્ચા અવશ્ય કરવી જ રહી.

2.5.2 સમૃદ્ધ સાહિત્ય વારસાની ભાષા:

શરૂઆત કરીએ સંસ્કૃત ભાષાના સમૃદ્ધ સાહિત્ય વારસાની. ત્યારે વંદનીય અવિસ્મરણીય આચાર્યોને કેમ વિસરીએ? મહર્ષિ વેદવ્યાસ, કાલિદાસ, ભાસ, ભવભૂતિ ચાણક્ય, મમ્મટ, શ્રી હર્ષ, દંડી, બાણભટ્ટ, માઘ, ભારવિ વગેરેની કૃતિઓ મનોરંજન અને સંસ્કારની દૃષ્ટિએ અજોડ છે. તો પાણિની, રાજશેખર, આચાર્ય મમ્મટ વગેરે દ્વારા સંસ્કૃતના વ્યકરણ તેમજ અલંકારશાસ્ત્રની વિગતે છણાવટ થઈ

છે. પાણિનીનું 'અષ્ટાધ્યાયી' વ્યાકરણનો બેનમૂન નમૂનો છે જ્યારે દેવી સરસ્વતીના સાક્ષાતરૂપ કવિ કાલિદાસના 'અભિજ્ઞાનશકુંતલમ્' ના અનુવાદને જર્મન કવિ 'ગેટે' નું માથા પર મૂકી નાચવું તે કૃતિની વૈશ્વિકતા સિદ્ધ કરે છે. માનવોના આદિ પૂર્વજ ભગવાન મનુષ્યે નિર્દેશિત કરેલ 'માનવધર્મસંહિતા' તેમજ મહર્ષિ વેદવ્યાસ વર્ણિત શ્રીમદ્ ભાગવદગીતામાં ઉલ્લેખિત "ચાતુર્વર્ણ્ય મયાસૃષ્ટમ્ સમાજ વ્યવસ્થા ભારતીય સમાજની કરોડરજ્જુ સમાન બની રહી. આમ, સંસ્કૃત સાહિત્ય માત્ર તે ભાષા ન બની રહેતાં તે ભાવાભિવ્યક્તિનું માધ્યમ છે. તે વિપુલતા અને અલંકારોથી તેમજ રસ વૈવિધ્યથી ભરપૂર છે

સંસ્કૃત એક સમૃદ્ધ વારસો છે તેનું શબ્દસંદોહ અગાધ અને વિશાળ છે. જેમ કે સંસ્કૃત ભાષામાં 'હાથી' માટે સૌથી વધારે શબ્દોનો પ્રયોગ આશ્ચર્યકારક છે. જે વિશ્વની અન્ય કોઈ ભાષામાં જોવા મળતા નથી. સંસ્કૃતમાં વ્યક્ષરણની જે માવજત થઈ છે તે અન્ય કોઈ ભાષામાં થઈ નથી તેથી જ તેનું વ્યક્ષરણ પૂર્ણ મનાય છે. આજે પણ મહર્ષિ ચરક અને સુશ્રૂતના ગ્રંથો ચિકિત્સાક્ષેત્રે પોતાનું આગવું સ્થાન ધરાવે છે.

2.5.3 વિશ્વની પ્રથમ ભાષા:

સંસ્કૃત વિશ્વની પ્રથમ અને સૌથી પ્રાચીન ભાષા છે. કેટલાક લોકોના મત અનુસાર આ ભાષા દિન-પ્રતિદિન લુપ્ત થઈ રહી છે. જોકે ઇ. સ. 2001 ની જનગણના મુજબ આ ભાષા બોલનારાઓની સંખ્યા 14,135ની હતી. આ ઉપરાંત આજે વિશ્વમાં આ ભાષાનું મૂલ્યબદલાને સમજાઈ રહ્યું છે. વિશ્વના 17થી વધારે દેશોની મહાવિદ્યાલયોમાં સંસ્કૃત વિષય ભણાવવામાં આવી રહ્યો છે લંડન તેમજ આર્ચલેન્ડની ઘણી પાઠશાળાઓમાં સંસ્કૃત વિષયને ફરજિયાત બનાવવામાં આવ્યો છે. કેમ કે વૈજ્ઞાનિકોએ એવું સ્પષ્ટ તારણ કાઢ્યું છે કે સંસ્કૃત ભણવાથી યાદશક્તિ વધે છે. એટલા જ કારણથી આપણા પૂર્વજોને વેદજ્ઞાન અને ઉપનિષદ સાહિત્યકંઠસ્થ રહેતું હતું

2.5.4 પૂર્ણ વ્યક્ષરણની વાહક:

સંસ્કૃત ભાષા એક માત્ર વ્યક્ષરણની દૃષ્ટિએ પૂર્ણ ભાષા છે વિશ્વની કોઈ પણ ભાષામાં સચોટ કે ચોક્કસ ગહન વ્યાકરણ જોવા મળતું નથી જે સંસ્કૃત વ્યક્ષરણમાં જોવા મળે છે. 'નાસા' ના વૈજ્ઞાનિકો જ્યારે અંતરિક્ષમાં જનારાઓને સંદેશો મોકલતા હતા ત્યારે તેના વાક્યો ઉલટસૂલટ થતા હતા જેનાથી ઘણી જ સમસ્યાઓ થતી હતી. અને ઘણી વખત વાક્યનો અર્થ જ બદલાઈ જતો હતો. પછી સંસ્કૃતમાં શબ્દો ઉલટ-સૂલટ થયા છતાં તેનો અર્થ જાવાય રહે છે. જેમ જે રામેણ રાવણ: હત: જ્યારે અંગ્રેજીમાં Ram killed Ravan ઉલટાવીને Ravan killed Ram આખો ભાવાર્થ જ બદલાય જાય છે.

2.5.5 ટેકનિકલ ક્ષેત્રે મહત્વની ભાષા:

સંસ્કૃત કમ્પ્યુટર માટે સર્વોત્તમ ભાષા છે. એટલે જ કમ્પ્યુટરમાં ગણિતના સવાલો જેવા કે Algorithms સંસ્કૃતમાં બનાવેલ છે અંગ્રેજીમાં નહિ. કમ્પ્યુટરને એક પૂર્ણ ભાષાની જરૂર હોય છે કમ્પ્યુટર માટે સંસ્કૃત ભાષા અનિવાર્ય થઈ પડી ફોર્બ્સ મેગેઝીન જુલાઈ 1987 એ સંસ્કૃતને કમ્પ્યુટર સોફ્ટવેર માટેની શ્રેષ્ઠ ભાષા ગણાવી હતી. નાસાના વૈજ્ઞાનિકો છઠ્ઠી અને સાતમી પેઢીના જે કમ્પ્યુટર બનાવે છે. તે સંસ્કૃત પર આધારિત છે આમ કમ્પ્યુટર માટે સંસ્કૃતભાષા એક શ્રેષ્ઠ વિકલ્પ છે.

2.5.6 આયુર્વેદ/ સ્પીચ થેરાપીની ભાષા

સ્પીચ થેરાપી માટે સંસ્કૃત શ્રેષ્ઠ છે. સંસ્કૃતથી એકાગ્રતા વધે છે. સંસ્કૃત વિશ્વની એકમાત્ર એવી ભાષા છે જેનાથી જીભની બધી જ માંસપેશીઓનો ઉપયોગ થાય છે. અષ્ટધ્યાયીનાં માહેશ્વર સૂત્રોનું રટણ જીભને સમ્પૂર્ણ થેરાપી આપે છે આમ સંસ્કૃત એક સર્વ સ્વીકૃત ભાષા બની રહી છે.

2.5.7 સંસ્કૃત સાથે હિન્દી અને ગુજરાતીની સરખામણી:

સંસ્કૃત સર્વ ભાષાઓની જનની ગણાય છે. આપણી રાષ્ટ્રભાષા હિન્દી અને માતૃભાષા ગુજરાતી તો સીધી જ સંસ્કૃતમાંથી ઉતરી આવી છે આ બન્ને ભાષાઓ ઉપરાંત બહુધા ભારતીય ભાષાઓ શબ્દભંડોળ અને વ્યાકરણ માટે સંસ્કૃતની ઋણી છે વિશ્વની અનેક ભાષાઓ પર પણ સંસ્કૃતનો પ્રભાવ જોવા મળે છે. જેમ કે અંગ્રેજી ભાષાના Mother અને Brother જેવા શબ્દો સંસ્કૃતના ‘માતૃ’ અને ‘ભાતૃ’ પરથી ઉતરી આવ્યા છે. આજે પણ કર્ણાટક રાજ્યના ‘મુત્તુર ગામ ઉપરાંત કેટલાંક ગામોની વ્યવહારની ભાષા સંસ્કૃત છે.

2.5.8 વિશ્વના અન્ય દેશોમાં સંસ્કૃત ભાષાનો પ્રભાવ:

સંસ્કૃત ભાષાની વૈશ્વિકતા તપાસીએ તો આજે પણ જર્મનીમાં સંસ્કૃત ભાષાના જાણકારની ખૂબ માંગ છે. કેમ કે ત્યાંની 14 યુનિવર્સિટીઓમાં સંસ્કૃત ભાષા ભણાવવામાં આવી રહી છે આમ સંસ્કૃત ભાષાનું સારું એવું ખેડાણ જર્મનીમાં પણ થયું છે. અમેરિકન હિન્દુ યુનિવર્સિટીએ એવું તારણ કાઢ્યું છે કે સંસ્કૃત ભાષામાં વાતચીત કરનારાઓને બીપી., ડાયાબિટીસ અને કાલેસ્ટોરેલ જેવા રોગોથી મુક્તિ મળી શકે છે. સંસ્કૃત ભાષાના સંવાદ્ય શરીરમાં એક સકારાત્મક પરીવર્તન થાય છે.

2.6 સારાંશ:

સંસ્કૃત ભાષાનું મહત્વ અને તેની વૈશ્વિક જરૂરિયાત ખૂબ જ હોવા છતાંપ્રવર્તમાન સમયમાં પ્રતિદિન તેને બોલનારાઓની સંખ્યા ઓછી છે. કેટલાક લોકો એવા પૂર્વગ્રહથી પિડાતા હોય છે કે સંસ્કૃત

ભાષાનું વ્યાકરણ ઘણું જ કઠિન અને ક્લિષ્ટ છે. વસ્તુતઃ આ પૂર્વગ્રહને વર્તમાન સમયની સાથે કદમ મિલાવવા માટે દૂર કરવો જ રહ્યો. કેમ કે સંસ્કૃતમાં વાત કરવા માટે પાણિનીય અષ્ટાધ્યાયી શીખવાની કોઈ જરૂર નથી. કોઈ પણ ભાષા થોડા સમયના મહાવરાથી આત્મસાત થઈ જતી હોય છે. માટે વૈશ્વિક કક્ષાએ દેવભાષાને ફેલાવવા શીખવી જ રહી.

આમ સંસ્કૃત સાહિત્ય વેદોથી માંડીને લૌકિક અને આધુનિક સાહિત્ય સુધી વિસ્તરેલ અપાર છે. જેના ગૂઢ અને ગહન જ્ઞાનની કથાઓ - ગાથાઓ, અલૌકિક, નિરાલી અને અનુપમ છે. મેક્સમૂલરથી આઈન્સ્ટાઇન સુધીના પશ્ચિમી વિદ્વાનોએ સંસ્કૃત જ્ઞાનને મહત્ત્વ આપી અપનાવ્યું છે. તો આપણે સંસ્કૃત ભાષાના મહત્ત્વની જાણકારીને સ્વીકારએ અને વૈશ્વિક ફલક પર સંસ્કૃતને ઉચ્ચસ્થાને લઈ જવા પ્રયાસ કરીએ.

2.7 એસાઇન્મેન્ટ:

1. પ્રશિષ્ટ સંસ્કૃત સાહિત્યની કૃતિઓની યાદી તૈયાર કરો.
2. 'સ્વપ્નવાસદત્તમ', 'અભિજ્ઞાનશાકુંતલમ' તેમજ ઉત્તરરામચરિતમનો અભ્યાસ કરી તેના કથાવસ્તુનો સારાંશ લખો.
3. અંગ્રેજી અને સંસ્કૃત ભાષાના સામ્ય ધરાવતા શબ્દોની યાદી તૈયાર કરો.

3. સંસ્કૃત અધ્યયન અને અધ્યાપન પદ્ધતિઓ અને મૂલ્યાંકન

- 3.1 પ્રસ્તાવના
 - 3.2 ઉદ્દેશ્ય
 - 3.3 સંસ્કૃત અધ્યયન-અધ્યાપનનું મહત્વ તેની અસર અને જરૂરિયાત
 - 3.4 સંસ્કૃત ભાષાની અધ્યાપન પદ્ધતિઓ
 - 3.4.1 આશ્રમ વ્યવસ્થાથી પ્રવર્તમાન સમય સુધી
 - 3.4.2 વૈશ્વિક ફલક પર પ્રયોજાતી પદ્ધતિઓ
 - 3.4.3 સંભાષણ પદ્ધતિ અને તેનું મહત્વ
 - 3.5 મૂલ્યાંકનની રીતો
 - 3.6 સંસ્કૃત અધ્યયન-અધ્યાપનમાં ટેકનોલોજીનો ઉપયોગ
 - 3.7 સમગ્ર એકમનો સારાંશ
 - 3.8 અસાઈનમેન્ટ
 - 3.9 સંદર્ભ સાહિત્ય
 - 3.10 પ્રાયોગિક કાર્ય
-

3.1 પ્રસ્તાવના

વિષયવસ્તુને જે પદ્ધતિ કે રીતથી વિદ્યાર્થીઓ સમક્ષ રજૂ કરવામાં આવે તેને આપણે અધ્યાપન પદ્ધતિ કહીએ છીએ. વર્તમાનમાં અધ્યાપન કરતાં અધ્યયન પદ્ધતિઓનું મહત્વ વધારે છે કારણ કે NCF-2005 મુજબ વિદ્યાર્થી સ્વયં જ્ઞાનનું સર્જન કરે છે તેથી વિદ્યાર્થીઓ જાતે અધ્યયન કરી શકે તેવી પદ્ધતિઓ, પ્રયુક્તિઓનો ઉપયોગ વર્ગખંડમાં કરવાનો આગ્રહ સેવવામાં આવે છે વિષયવસ્તુની તુલનાએ અધ્યયન-અધ્યાપન પદ્ધતિનું મહત્ત્વ અનેકગણું છે. જેમ રસોઇ કરવાની તમામ સામગ્રી ઉપલબ્ધ હોય પણ રસોઇ બનાવવાની કળા ન હોય તો સામગ્રી ગમે તેટલી સારી હોય છતાં રસોઇ બગડી જાય તેવી જ રીતે વિષયવસ્તુની રજૂઆત પણ યોગ્ય અધ્યયન-અધ્યાપન પદ્ધતિથી ન થાય તો મૂળભૂત ઉદ્દેશ્ય સિદ્ધ થતો નથી. આમ, શિક્ષક વિષયવસ્તુના જ્ઞાનની સાથે સાથે અધ્યયન-અધ્યાપન પદ્ધતિઓનો જ્ઞાતા તથા તેનો વર્ગખંડમાં ઉપયોગ કરી શકે તેવો કૌશલ્યવાન હોવો જોઈએ.

આ હેતુને ધ્યાનમાં રાખીને આ પ્રકરણમાં અમણે સંસ્કૃત અધ્યાપનનું મહત્ત્વ સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણની અધ્યયન-અધ્યાપન પદ્ધતિઓ, પ્રયુક્તિઓ, મૂલ્યાંકનની રીતો તથા શિક્ષણમાં ICT નો

ઉપયોગ જેવા મુદ્દાઓનો અભ્યાસ કરીશું.

3.2 ઉદ્દેશ્ય

પ્રસ્તુત પ્રકરણના હેતુ ઓ નીચે મુજબ છે.

- પ્રશિક્ષણાર્થીઓ સંસ્કૃત અધ્યાપનનું મહત્વ તેની અસર અને જરૂરિયાત સમજે.
- સંસ્કૃત ભાષાની વિવિધ અધ્યયન-અધ્યાપન પદ્ધતિઓ જાણે અને સંભાષણ પદ્ધતિનું મહત્વ તથા તેનો ઉપયોગ વર્ગખંડમાં કરતાં શીખે.
- અધ્યેતાના મૂલ્યાંકનની વિવિધ રીતો જાણે તથા અધ્યાપન અને અધ્યેતાનું મૂલ્યાંકન કરી શકે.
- સંસ્કૃત અધ્યયન-અધ્યાપનમાં ICT નો ઉપયોગ કરે.

3.3 સંસ્કૃત અધ્યાપનનું મહત્વ તેની અસર તથા જરૂરિયાત

સંસ્કૃતભાષાના અધ્યાપનનું મહત્વ

શિક્ષણની પ્રક્રિયામાં કયા વિષયને કેટલું સ્થાન અને મહત્ત્વ મળવું જોઈએ તે પ્રાચીન સમયથી ચર્ચાનો મુદ્દો રહ્યો છે. પરંતુ શિક્ષણને માનવ જીવનના ઘડતર અને વિકાસની પ્રક્રિયા તરીકે જોવામાં આવે તો તેમાંના કેટલાંક મુદ્દાઓમાં કોઈ વિવાદ રહેતો નથી તે પૈકીનો એક વિષય છે સંસ્કૃત ભાષા. સંસ્કૃતભાષાના અધ્યયનના પિરણામે વ્યક્તિના આંતરિક અને બાહ્ય જીવનને પ્રભાવપૂર્ણ અને પૂર્ણતા તરફની ગતિવાળું બનાવી શકાય છે. વિજ્ઞાન, ગણિત, સામાજિક વિજ્ઞાન કે અન્ય વિષયોનો તેમાં સમાવેશ થઈ જાય છે.

ભાષાકીય મહત્ત્વ

વિશ્વની પ્રવર્તમાન બહુધા ભાષાઓનો મૂળસ્રોત સંસ્કૃત ભાષા છે. જર્મન, રશિયન, અંગ્રેજી વગેરે ભાષાનો શબ્દવૈભવ સંસ્કૃતભાષાના આશ્રયને કારણે છે. સંસ્કૃતભાષાના ઉચ્ચારણોની વ્યવસ્થા વિશિષ્ટ છે કે જેના કારણે જીભ, દાંત, હોઠ, કંઠ અને તાળવું વગેરેને યોગ્ય કસરત મળી રહે છે. સંસ્કૃત ભાષાનું સૂત્રબદ્ધ વ્યક્ષરણ વિશ્વની તમામ ભાષાઓના વ્યાકરણ માટે માર્ગદર્શક બન્યું છે. કેટલાક ભાષા વૈજ્ઞાનિકો સંસ્કૃતને કમ્પ્યુટરના કમાન્ડ માટેની વધુમાં વધુ ઉપયોગી ભાષા માને છે.

3.4 સંસ્કૃત ભાષાની અધ્યયન-અધ્યાપન પદ્ધતિઓ

પ્રત્યેક ભાષાશિક્ષણ માટે મોટાભાગની પદ્ધતિઓ સમાન હોય છે. એટલે કે વિવિધ ભાષાઓ જેવી કે ગુજરાતી, હિન્દી, અંગ્રેજી વગેરે જે પદ્ધતિથી શીખવવામાં આવે તે પદ્ધતિઓ સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણના અધ્યાપનમાં પણ વપરાય ઉદાહરણ તરીકે અનુવાદ પદ્ધતિ, વ્યાકરણ શિક્ષણપદ્ધતિ, ભાષાબિંદુઓ વડે શિક્ષણ, functional approach, માળખાગત પદ્ધતિ (structural method), આગમન-નિગમન પદ્ધતિ, પ્રત્યક્ષ પદ્ધતિ, સંભાષણ પદ્ધતિ વગેરે. અહીં આપણે વિવિધ સમયે પ્રયોજાયેલી ભાષાશિક્ષણની પદ્ધતિઓનો સૌ પ્રથમ ખ્યાલ મેળવીએ.

3.4.1 આશ્રમશાળા વ્યવસ્થાથી પ્રવર્તમાન સમય સુધી પ્રયોજાયેલી સંસ્કૃત ભાષાની અધ્યાપન પદ્ધતિઓ

વૈદિક કાળમાં આશ્રમ વ્યવસ્થામાં શિક્ષણનું માધ્યમ સંસ્કૃત ભાષા જ હતી. એટલે કે સંસ્કૃત માધ્યમમાં જ તમામ પ્રકારનું શિક્ષણ થતું હતું. તમામ વૈદિક સાહિત્ય પણ સંસ્કૃત ભાષામાં જ લખાયેલું હતું. એટલે શિક્ષણનું માધ્યમ જ સંસ્કૃત ભાષા હોવાથી સંસ્કૃત ભાષાનું શિક્ષણ સહજ સરળતાથી તથા કુદરતી રીતે થતું હતું.

ભારતીય શિક્ષણના ઇતિહાસનાં અનુશીલનથી આપણને વિભિન્ન પ્રકારની શિક્ષણ પદ્ધતિઓનો પરિચય મળે છે. ઉપનિષદકાળમાં ઉપયોગમાં લેવાયેલી શિક્ષણપદ્ધતિનું સ્વરૂપ નિમ્નલિખિત શ્લોકમાં સુંદર રીતે પ્રગટ થાય છે.

શ્રવણં તુ ગુરુપૂર્વ મનન તદનન્તરમ્ ।

નિદિધ્યાસનમિત્યેતત્પૂર્ણબોધસ્યકારણમ્ ॥

બ્રહ્મદારણ્યક ઉપનિષદમાં જ્ઞાનાર્જનની શ્રવણ, મનન તથા નિદિધ્યાસન આ ત્રણ પ્રક્રિયાઓની વ્યાખ્યા મળે છે. તે સમયે કંઠસ્થીકરણ પર વધારે ભાર મૂકવામાં આવતો હતો એટલે કે સૌ પ્રથમ મંત્ર સૂત્ર કે શ્લોકનું શ્રવણ કર્યા બાદ વિદ્યાર્થીઓ કંઠસ્થ કરતા અને ત્યાર બાદ તેનું મનન અર્થગ્રહણ કરીને સાધનાત્મક અનુભૂતિ કરતા વૈદિક સાહિત્યમાં શિક્ષણની પદ્ધતિ મુખ્યત્વે મૌખિક પ્રકારની હતી આ ઉપરાંત પ્રશ્નોત્તર પદ્ધતિનો પણ ઉપયોગ કરવામાં આવતો હતો જેમાં દૃષ્ટાંત કથા, જીવનવૃત્તાંત વગેરે દ્વારા સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવતું હતું આ ઉપરાંત પ્રાચીન સમયમાં આશ્રમ વ્યવસ્થામાં વાદવિવાદ, શંકા-સમાધાન, ચર્ચા પદ્ધતિ વગેરે દ્વારા પણ શિક્ષણકાર્ય થતું હતું આશ્રમ વ્યવસ્થાના શિક્ષણમાં સૌથી મહત્વની વાત એ હતી કે, ત્યાં વ્યક્તિગત શિક્ષણ પ્રણાલી પ્રચલિત હતી. દરેક વિદ્યાર્થીઓની વિશેષતાઓ અને મર્યાદાઓને ધ્યાનમાં રાખીને તે મુજબ તેને અનુકૂળ આવે એવી પદ્ધતિથી શિક્ષણ અપાતું હતું.

ત્યારબાદ અર્વાચીન સમયમાં સંસ્કૃત ભાષાના શિક્ષણ માટે અનુવાદ પદ્ધતિ, ભાંડારકર પદ્ધતિ, વ્યાકરણ પદ્ધતિ વગેરે પ્રયોજાય છે. અન્ય ભાષાઓનાં પદ્ધતિના પુસ્તકોમાં કેટલીક પદ્ધતિઓનો વિસ્તૃત પરિચય આપેલ હોઈ અહીં પુનરાવર્તન અનાવશ્યક છે.

3.4.2 વૈશ્વિક ફલક પર પ્રયોજાતી પદ્ધતિઓ

પ્રવર્તમાન સમયમાં વૈશ્વિક ફલક પર દ્વિતીય ભાષાના શિક્ષણ માટે અનેક પદ્ધતિઓ પ્રચલિત છે. જેમાંથી કેટલીક વિખ્યાત પદ્ધતિઓનાં નામ તથા ટૂંકસાર નીચે આપેલો છે. જે આપણને સંસ્કૃત ભાષાના શિક્ષણ માટે ઉપયોગી નિવડશે.

1. Communicative Language Teaching(CLT) (વાતચીત દ્વારા ભાષાશિક્ષણ)

આ પદ્ધતિમાં અધ્યેતાના વિવિધ પરિસ્થિતિમાં અસરકારક અને યોગ્ય પ્રત્યાયન કરવા પર ભાર મૂકવામાં આવ્યો છે. CLT અભ્યાસક્રમના વિષયવસ્તુમાં એવા કાર્યોનો સમાવેશ કરવામાં આવે છે જેમાં આમંત્રિત કરવું, સૂચનો કરવા, સમય, સ્થળ અને જથ્થાની અભિવ્યક્તિના સંદર્ભે ફરિયાદ કે અભિપ્રાય આપવો વગેરે.

2. Audio Lingual (ભાષાશ્રવણ)

આ પદ્ધતિની પાછળ એવો સિદ્ધાંત રહેલો છે કે ભાષા શીખવી એટલે નિશ્ચિત વલણ, આદત કે ટેવ પડવી. પ્રત્યેક પરિસ્થિતિના સંવાદોનો ખૂબ અભ્યાસ કરવો. નવી ભાષાને પ્રથમ સાંભળવી અને લેખિત સ્વરૂપમાં તેને જોતાં પહેલાં તેનો શ્રવણ દ્વારા ખૂબ જ મહાવરો કરવો

3. Total Physical Response (TPR) શારીરિક પ્રતિભાવ

TPR પદ્ધતિમાં અધ્યેતા સાદી સૂચનાઓનો પ્રતિભાવ જે તે ભાષામાં આપી શકે તેના પર ભાર મૂકવામાં આવે છે. જેમ કે: ઉત્તિષ્ઠ, ઉપવિશ, પુસ્તક પિધાન કુર્વન્તુ. દ્વારં ઉદઘાટયતુ ઇત્યાદી, આ પદ્ધતિ મૌખિક અર્થગ્રહણ પર ભાર મૂકે છે

4. Community Language Learning સામુદાયિક ભાષાશિક્ષણ

આ પદ્ધતિમાં એવો પ્રયાસ કરવામાં આવે છે કે શિક્ષક અને વિદ્યાર્થી વચ્ચે ગાઢ વ્યક્તિગત સંબંધ સ્થપાય. જેથી કરીને શીખવાની પ્રક્રિયામાં કોઈ ભંગાણ ન પડે અહીં માતૃભાષામાં ખૂબ જ વાતચીત કરીને પછી વિદ્યાર્થીના પુનરાવર્તન માટે શિક્ષક દ્વારા તેનો અનુવાદ કરવામાં આવે છે

5. Task based language Learning પ્રકાર્ય આધારિત ભાષાશિક્ષણ

આ પદ્ધતિમાં શિક્ષણનું કેન્દ્રિય પ્રકાર્ય / પ્રવૃત્તિ પૂર્ણ કરવા પર હોય છે જે અધ્યેતા માટે રસપ્રદ બની રહે છે. અધ્યેતા પ્રકાર્ય / પ્રવૃત્તિને પૂર્ણ કરવા માટે ભાષાનો ઉપયોગ કરે છે અને ભૂલોને ઓછામાં ઓછી સુધારવામાં આવે છે

6. The Natural Approach કુદરતી અભિગમ

આ અભિગમમાં પ્રથમ અને દ્વિતીય ભાષાના શિક્ષણ વચ્ચે રહેલી સમાનતાને કેન્દ્રમાં રાખવામાં આવે છે. ભૂલોને સુધારવામાં આવતી નથી ભાષાનો ઉઘાડ એવી રીતે કરવામાં આવે છે કે જે વિદ્યાર્થીને સરળતાથી સમજાય અને તેનું શિક્ષણ થાય

7. Learning Experience Approach ભાષાનુભૂતિ અભિગમ

આ અભિગમમાં ભાષાશિક્ષણના કૌશલોને હસ્તગત કરવા માટે વિદ્યાર્થીઓના પોતાના અનુભવ જગતમાં આવેલી ભાષાના શબ્દો તથા કથાઓનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે.

8. Oral Communication Method મૌખિક પ્રત્યાયન પદ્ધતિ

આ પદ્ધતિમાં ભાષાશિક્ષણ માટે મૌખિક પ્રત્યાયનનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે.

9. Language Laboratories ભાષા પ્રયોગશાળા

ભાષા શીખવા માટે ઓડિયો (શ્રાવ્ય) સાધનોનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે.

10. Peer Teaching (જૂથશિક્ષણ)

સહપાઠી દ્વારા જોડીમાં ભાષાના પ્રત્યાયન દ્વારા ભાષા શીખવવામાં આવે છે.

આ ઉપરાંત Direct Method, Grammar Translation Method અને Structural approach method નો પણ વૈશ્વિક સ્તરે ભાષાશિક્ષણમાં ઉપયોગ થાય છે.

3.4.3 સંભાષણ પદ્ધતિ અને તેનું મહત્ત્વ

ભાષા શબ્દની વ્યાખ્યા છે 'યા ભાષ્યતે સા ભાષા' જ્યાં સુધી બોલાય નહીં ત્યાં સુધી એ ભાષા બનતી નથી. જગતની બધી ભાષાઓ પ્રથમ બોલાઈ છે તે પછી જ લખાઈ છે. ભાષાશિક્ષણનો ક્રમ છે: સાંભળવું, બોલવું, વાંચવું અને લખવું એટલે કે શ્રવણ, કથન, વાંચન અને લેખન. સાંભળવા માટે ય પહેલાં બોલાવું તો જોઈએ જ બોલતાં ન આવડતું હોય પણ વાંચતાં આવડે તો તે ખરેખર દેવનાગરી લિપિનું વાંચન છે સંસ્કૃત ભાષાનું નહીં લખેલાનો અર્થ તો અનુવાદથી જ સમજાય છે. વાંચતાં ન આવડે ત્યાં સુધી લખતાં પણ ન આવડે સંસ્કૃત શિક્ષણનું પહેલું પગથિયું છે સંસ્કૃત બોલવાનું શિક્ષણ

એટલા માટે જ સંભાષણ પદ્ધતિ પર વધુ ભાર મૂકવામાં આવે છે કારણ કે તેમાં સંસ્કૃત ભાષામાં વાતચીત કરતાં પ્રથમ શીખવાનું હોય છે તે પછી સંસ્કૃત વાંચન અને લેખન

અર્થ

સંસ્કૃત ભાષાને રોજબરોજના જીવન વ્યવહાર સાથે સાંકળીને પરસ્પર વાતચીતના માધ્યમથી શીખવવાની પદ્ધતિ એટલે સંભાષણ પદ્ધતિ.

સંભાષણ પદ્ધતિમાં વ્યક્તરણના નિયમોની ગોખણપટ્ટી કરવી પડતી નથી. કારણ કે વ્યાકરણ એ ભાષા નથી, ભાષાનું શા છે. વ્યવહારમાં ભાષા પ્રથમ બોલાય, તેનું શા પછી શીખાય. તેથી વ્યાકરણના નિયમો ગોખ્યા વગર માત્ર ભાષાના ઉપયોગ પર ભાર મૂકવામાં આવે છે એટલે કે સંસ્કૃત ભાષા બોલવા પર વધારે ધ્યાન આપવામાં આવે છે અને બોલવાનું કૌશલ્ય એવું છે કે બોલતાં બોલતાં શીખાય. અહીં વિદ્યાર્થી દ્વારા સંસ્કૃત બોલવામાં ક્ષતિ થાય તો તે તરફ ધીરજથી શાંતિથી અને થોડા અભ્યાસ બાદ સુધારવાનો પ્રયાસ કરવામાં આવે છે સૌ પ્રથમ અધ્યેતાના આત્મવિશ્વાસને દૃઢ કરવા અને તેને નિર્ભિક રીતે બોલવા માટે પ્રેરણા અને પ્રોત્સાહન આપવામાં આવે છે. આમ, આ પદ્ધતિમાં જ્ઞાત પરથી અજ્ઞાત તરફ જવાનો ક્રમ છે. બાળકોને બોલતાં કરવા માટે બોલવાની તકો આપવામાં આવે છે તથા બોલવાનો સતત અભ્યાસ કરાવવામાં આવે છે.

સંભાષણ પદ્ધતિનું આગવાપણ એ તેમની ભાષા શીખવવાની વિવિધ પ્રયુક્તિઓમાં રહેલું છે અહીં અભ્યાસના બિંદુઓને વિવિધ રમતો, રોલપ્લે, અભિનય, અભિનય ગીતો, પ્રશ્નોત્તર, સુંદર સંવાદો વગેરે પ્રયુક્તિઓ દ્વારા શીખવવામાં આવે છે. જેથી ભાષા શીખવાનો ભાર લાગતો નથી પણ સરળતાથી, સહજતાથી દૈનિક વાર્તાલાપ દ્વારા ભાષાને આત્મસાત કરી શકે છે.

આમ, સંભાષણ પદ્ધતિ એટલે સહજ ક્રિયાઓ દ્વારા અધ્યેતાના આત્મવિશ્વાસને જાગૃત કરીને, શીખવવાના મુદ્દાને નાના નાના બિંદુઓમાં વિભજિત કરીને, પ્રત્યેક બિંદુને શીખવતાં શીખવતાં સંસ્કૃત ભાષાને વ્યાવહારિક રીતે આત્મસાત કરાવવાની કળા

મહત્ત્વ

ભારતસ્ય પ્રતિષ્ઠે દ્વે સંસ્કૃતં સંસ્કૃતિસ્તથા। ભારતની પ્રતિષ્ઠા બે બાબતોમાં સમાયેલી છે. એક તેની સંસ્કૃતિમાં અને બીજી તેની સંસ્કૃત ભાષામાં. વૈજ્ઞાનિક રીતે પૂરવાર થયેલી હકીકત છે કે સંસ્કૃત એ વિશ્વની શ્રેષ્ઠ ભાષા છે. ભાષાવિજ્ઞાન હોય, સાહિત્ય સર્જન હોય કે શાસ્ત્રીય અધ્યયન હોય, દુનિયાની બધી ભાષાઓએ સંસ્કૃત પાસેથી આજના આધુનિક સમયમાં પણ ઘણું શીખવાનું છે સંસ્કૃતનું આટલું મહત્ત્વ હોવા છતાં પણ આપણે ત્યાં સંસ્કૃત વ્યવહારભાષા રહી નથી. (જો કે ભારતમાં કેટલાંક ગામો તથા પરિવારોમાં આજે પણ સંસ્કૃતભાષા વ્યવહારભાષા તરીકે બોલાય છે.) તેમ છતાં તેના આંતરિક માધુર્ય અને સ્તવને કારણે આ ભાષા આપણા રાષ્ટ્રમાં જીવંત રહી છે આવી અત્યંત મધુર અને

પ્રાણવાન સંસ્કૃત ભાષા શીખવા માટે સંભાષણ ઉત્તમ પદ્ધતિ હોવાનું બિજ્જન સ્વીકારે છે. શીખવાની પ્રક્રિયામાં પ્રથમ આંખથી આંગિક અભિનયમાં તેનું અનુકરણ કરવાનો સ્વાભાવિક ક્રમ સંભાષણ પદ્ધતિમાં રહેલો છે. તેથી તેનું મહત્વ ખૂબ જ વધી જાય છે આ પદ્ધતિની મહત્વની બાબતો જોઈએ તો.....

- ભાષા શીખવા માટે પ્રથમ સોપાન શ્રવણ છે. આ પદ્ધતિમાં વિદ્યાર્થીઓને સંસ્કૃત ભાષા શ્રવણનું પૂરતું વાતાવરણ પૂરું પાડવામાં આવે. છેવર્ગખંડમાં શિક્ષક દ્વારા નાની નાની સૂચનાઓ ટૂંકો પરિચય, વસ્તુઓના નામ સંસ્કૃતમાં બોલીને વગેરે દ્વારા સંસ્કૃત ભાષાના શ્રવણની પૂરતી તકો આપવામાં આવે છે.
- યા ભાષ્યતે સા ભાષા ભાષાનો પાયાનો ઉપયોગ તેના બોલવાપણમાં છે. તેથી કોઈ પણ ભાષા શીખવા માટે તે યોગ્ય ઉચ્ચારણોથી શીખાય તે જરૂરી છે. સંભાષણ પદ્ધતિમાં પરસ્પર સંવાદ થતો હોવાથી શુદ્ધ ઉચ્ચારણ પર વિશેષ ધ્યાન આપી શકાય છે.
- સંસ્કૃત ભાષાના હલન્ત, દીર્ઘ તેમજ અનુનાસિકોનાં ઉચ્ચારણોનો ખ્યાલ આપવા આ પદ્ધતિ ખૂબ જ જરૂરી બની જાય છે. ઉદાહરણ : જનઃ નો ઉચ્ચાર - જનહ, જનાઃ નો ઉચ્ચારણ જનાહા પણ જનૈઃ નો ઉચ્ચારણ જનૈહિ થાય. હરિઃ નો ઉચ્ચારણ હરિહિ થાય છે આનો ખ્યાલ વાંચવાથી આવી શકે નહિ.
- આપણી માતૃભાષા ગુજરાતીની ગંગોત્રી સંસ્કૃત છે પરિણામે ગુજરાતીમાં ઘણા તત્ત્વ (સંસ્કૃત ભાષાના જ) શબ્દો મળી આવે છે. દા.ત. અતિથિ, મનુષ્ય, ભોજન, શયન, ચર્યા, વિવાદ આવા સહસ્રો શબ્દોનો ભંડાર આપણા માટે સહજ ઉપલબ્ધ છે. આ પદ્ધતિમાં તેનો ઉપયોગ કરીને જ્ઞાત ઉપરથી અજ્ઞાત તરફ લઈ જવામાં આવે છે અને અધ્યેતા કશા જ ભાર વગર સંસ્કૃત બોલતા શીખી જાય છે.
- વર્તમાન સમયમાં શિક્ષણ મેળવવાની પ્રક્રિયા આનંદદાયી અને પ્રવૃત્તિમય બને તેના ઉપર ખાસ કરીને માનસશાસ્ત્રીઓ ભાર મૂકે છે સંભાષણ પદ્ધતિમાં આ બંનેનો સુમેળ જોવા મળે છે
- કોઈ પણ ભાષા પ્રારંભિક તબક્કે ક્ષતિઓ સાથે જ શીખી શકાય છે. સંભાષણ પદ્ધતિમાં આ મૂળભૂત સત્ત્વો સ્વીકાર કરવામાં આવ્યો છે. અધ્યેતાને પ્રારંભમાં માત્ર બોલવા માટે પ્રોત્સાહિત કરવામાં આવે છે. તેમાં સાચું-ખોટું જોવાના બદલે અધ્યેતાની ક્ષતિઓને ધીરજપૂર્વક તેમજ કુનેહપૂર્વક દૂર કરવાનો પ્રયત્ન કરવામાં આવે છે. પરિણામે અધ્યેતાના આત્મસન્માનને ઠેસ પહોંચતી નથી તેમજ તે બોલવાનો મહાવરો કરવા પ્રેરાય છે.
- સંભાષણ પદ્ધતિમાં અનુવાદનો આશ્રય લેવામાં આવતો નથી સંસ્કૃત ભાષા સંસ્કૃત માધ્યમમાં જ શીખવવામાં આવે છે. પરિણામે અનુવાદ પદ્ધતિની ખામી અહીં દૂર થાય છે.

- શિક્ષક દ્વારા વર્ગવ્યવહારમાં સંસ્કૃતમાં કરવામાં આવે તેવો આગ્રહ(દૂરાગ્રહ નહીં) રાખવામાં આવે છે. આ વર્ગવ્યવહારમાં શિક્ષક આંગિક અભિનયનો પણ ઉપયોગ કરે છે અને તેનો સીધો લાભ અધ્યેતાઓને મળે છે.
- સંસ્કૃતમાં જ વર્ગવ્યવહાર અને અનુવાદ નહીં - આ બંને આગ્રહો હોવા છતાં માતૃભાષાના ઉપયોગને સર્વથા ત્યાજ્ય ગણવામાં આવતો નથી, એ આ પદ્ધતિની વિશેષતા છે. જરૂર પડે ત્યાં માતૃભાષાનો ઉપયોગ આવકાર્ય ગણવામાં આવે છે ખાસ કરીને જ્યારે સૂચનાઓ આપવાની હોય કે સામાન્ય સમજૂતીનો આગ્રહ હોય ત્યારે અધ્યેતાઓની સરળતા માટે માતૃભાષાનો ઉપયોગ કરવાની છૂટ આ પદ્ધતિમાં લઈ શકાય છે.
- શ્રવણ-ભાષણ-વાંચન અને લેખન એ ભાષાશિક્ષણનાં સોપાનો છે આ સોપાનોનાં ક્રમશઃ વિકાસ ઉપર ભાર મૂકવામાં આવે છે આમ, માનસશાસ્ત્રીય દૃષ્ટિએ પણ આ પદ્ધતિ અગત્યની બની રહે છે.
- ભાષાના વ્યાવહારિક પાસા ઉપર ભાર મૂકાતો હોવાથી વર્ગખંડની બહાર પણ અધ્યેતાઓને તેના અભ્યાસની પૂરતી તકો પ્રાપ્ત થાય છે.
- સમગ્ર બાબતો એકસાથે શીખવી દેવાની વાત આ પદ્ધતિમાં સ્વીકાર્ય નથી. અભ્યાસનાં બે-ત્રણ બિંદુઓને લઈ તેના ઉપયોગ ઉપર ભાર મૂકવામાં આવે છે. પરિણામે તેની અસરકારકતા વધે છે.
- સંભાષણ પદ્ધતિમાં અત્યંત મહત્વપૂર્ણ વાત એ છે કે અહીં અધ્યેતાને સક્રિય રાખવામાં આવે છે. અધ્યેતાને વ્યક્તિગત રીતે માર્ગદર્શન આપવામાં આવે છે. શિક્ષક પણ દરેકને વ્યક્તિગત રીતે માર્ગદર્શન આપી શકે તે માટેનો અવકાશ રહે છે.
- પુનરાવર્તન, દૃઢિકરણ તેમજ ઉપચારાત્મક શિક્ષણની પૂરતી તકો આ પદ્ધતિમાં પ્રાપ્ત થાય છે.
- વર્ગખંડનું વાતાવરણ જીવંત બને છે અને શિક્ષણકાર્ય અસરકારક બને છે.

સંભાષણ પદ્ધતિની પ્રવૃત્તિઓ

સંભાષણ પદ્ધતિથી શિક્ષણકાર્ય કરવા માટે વર્ગખંડ પ્રવૃત્તિઓથી સભર બનીરહે તે જરૂરી છે. સામાન્ય રીતે વિવિધ ભાષાઓના શિક્ષણકાર્યમાં ઉપયોગમાં લેવાતી ઘણી પ્રવૃત્તિઓ આમાં આમેજ થઈ જાય છે. તેથી અત્રે સંસ્કૃત ભાષાને લક્ષમાં રાખી વિશેષ પ્રવૃત્તિઓ અંગે થોડીક ચર્ચા કરીએ

- શિક્ષક દ્વારા વર્ગવ્યવહાર સંસ્કૃત ભાષામાં કરવામાં આવે તે જરૂરી છે તમામ શિક્ષકો ધારાપ્રવાહરૂપે સંસ્કૃત બોલી શકે જે સંભવ સંભવિત નથી પણ સામાન્ય વ્યવહારમાં કેટલાંક વાક્યો વારંવાર ઉપયોગમાં લઈ શકાય છે. જેમકે, નમો નમઃ!, ઉપવિશતુ, (એક જ વિદ્યાર્થી

માટે) ઉપવિશન્તુ (બધા વિદ્યાર્થીઓ માટે) ઉત્તિષ્ઠતુ। ધ્યાનં દદાતુ।, ગીતં ગાયતું।, પુસ્તકં પઠતું।, વાતાયનમ્ ઉદ્ઘાટયતુ।, ઉત્તરં દદાતુ।

- સંસ્કૃત ભાષાનાં ગીતો સુભાષિતો વગેરેનું જ્ઞાન તેમજ પઠન વારંવાર કરવામાં આવે તો વિદ્યાર્થીઓ તેના તાલ, લય અને ઢબથી પરિચિત થાય. સંધિયુક્ત શબ્દોના ઉચ્ચારણથી પણ અવગત થાય. આ માટે ઓડિયો કેસેટ / સીડીનો ઉપયોગ પણ લાભદાયી બની શકે.
- શાળાની પ્રાર્થનાસભામાં સુભાષિતો-શ્લોકો તેમજ મંત્રોને આવરી લેવાથી વર્ગખંડના કાર્યભારને હળવો કરી શકાય. આ સમયે વિદ્યાર્થીઓના માનસમાં વર્ગના કાર્યનો ભાર હોતો નથી આમ છતાં તે ભાષાને આત્મસાત્ કરે છે. પ્રાર્થનાની પૂર્વતૈયારી સમયે પણ ઓડિયો કેસેટ દ્વારા કેટલાંક પદ્યો રજૂ કરવામાં આવે તો તે ફળદાયી બને છે.
- વર્ગખંડના કાર્યમાં ફલેશકાર્ફ, ભીંતચિત્રો તેમજ સાભિનય રજૂઆત અપેક્ષિત છે.
- ભાષાનાં વિવિધ કૌશલ્યોના વિકાસ માટે શિક્ષક દ્વારા વિવિધ ભાષાક્રીડા (રમતો) ઉપયોગી બની શકે છે. તેનો વધુમાં વધુ ઉપયોગ કર્યો જોઈએ.
- તેજસ્વી વિદ્યાર્થીઓના સહયોગથી વર્ગખંડમાં તેમજ શાળાના સમૂહ કાર્યક્રમોમાં સંસ્કૃત ભાષાના કાર્યક્રમો રજૂ કરી શકાય.
- સંસ્કૃત ભાષામાં બાળગીતો અભિનયગીતો, જોડકણાં તેમજ મનોરંજક કથાઓ-ટુચકાઓ, લોકગીતો, ગરબાઓ ઉપલબ્ધ છે. શિક્ષકે તે મેળવીને તેનો ઉચિત ઉપયોગ કરવો ઘટે.
- નાની નાની વસ્તુઓ નિર્દેશી તેનું વર્ણન સરળ સંસ્કૃત ભાષામાં- ટૂંકાં વાક્યોમાં કરવું જોઈએ
- વર્ગખંડમાં વિદ્યાર્થીને અભિવ્યક્ત થવાની પૂરતી મોકળાશ આપવી જોઈએ વિવિધ કાર્યક્રમોમાં તેઓની સામેલગીરી કરવી જોઈએ. સુભાષિત ગાનસ્પર્ધા, સંવાદ જેવી વિવિધ સ્પર્ધાઓનું આયોજન કરવું જોઈએ
- કિમ્, કદા, કુત્ર જેવા પ્રશ્નવાચક સર્વનામોના ઉપયોગથી શક્ય તેટલા વધુમાં વધુ પ્રશ્નો પૂછી તેના ઉત્તર મેળવવા પ્રયત્ન કરવો જોઈએ.
- દૃશ્ય-શ્રાવ્ય સાધનોનો ઉપયોગ, ચિત્રો જેવી અધ્યયન-અધ્યાપન સામગ્રીનો મહત્તમ ઉપયોગ આ પદ્ધતિની સફળતા માટે અનિવાર્ય છે. જેમકે, શાળાના માનચિત્ર (નકશા દ્વારા) પ્રાર્થનાખંડ: કુત્ર અસ્તિ ? અત્ર અસ્તિ। આચાર્યખંડસ્ય સમીપે અસ્તિ। જેવાં વર્ણનાત્મક વાક્યોનો ઉપયોગ થઈ શકે.
- શાળામાં દૂરદર્શન પર આવતા સંસ્કૃત પાઠોનું અવલોકન કરાવીને પ્રાર્થનાસભામાં પણ સંસ્કૃતમાં સમાચાર, સુવાક્યો રજૂ થાય તેવી તકો આપવી જોઈએ.

- સંસ્કૃત સાહિત્યની રસપૂર્ણ કૃતિઓમાંથી કથાઓ પ્રસંગો, મનભાવન શ્લોકો વગેરેની રજૂઆત કરવાથી સંસ્કૃત ભાષામાં રસ જાગૃત થાય છે.
- બાયસેગ પરથી પ્રસારિત થતાં સંસ્કૃત પાઠોનું અવલોકન કરાવવું જોઈએ
- શાળાના કાર્યક્રમની નાની નાની આમંત્રણ પત્રિકા સંસ્કૃતમાં બનાવવી જોઈએ
- સંસ્કૃત ભાષા બોલી શકતા વિદ્વાન વ્યક્તિને વર્ગખંડમાં બોલાવીને તેની સાથે વિદ્યાર્થીઓનો વાર્તાલાપ કરાવવો જોઈએ. વિશેષદિન નિમિત્તે તેનું વ્યાખ્યાન સંસ્કૃતમાં ગોઠવવું જોઈએ
- શાળામાં વસ્તુઓ પર સંસ્કૃત નામના સ્ટીકર લગાવવા જોઈએ. જેથી જે તે વસ્તુનું નામ સંસ્કૃતમાં બોલવાનો અભ્યસ થાય.

આમ, વિવિધ પ્રવૃત્તિઓ દ્વારા સંભાષણ પદ્ધતિને સફળ બનાવી શકાય છે. અધ્યેતાના રસને જાગૃત કરી - વિવિધ પ્રવૃત્તિઓના માધ્યમથી સંસ્કૃત ભાષાને આત્મસાત્ કરવા પ્રેરી શકાય છે. આપણા પ્રાચીન જ્ઞાનભંડાર સાહિત્ય, કલા, શિલ્પ જેવા વિષયોનો ગહન અભ્યાસ કરવા ઇચ્છનારે સંસ્કૃત ભાષાનું જ્ઞાન મેળવવું જરૂરી બની ગયું છે વિશ્વના શ્રેષ્ઠ સાહિત્ય પૈકીનું સાહિત્ય આ ભાષામાં ઉપલબ્ધ છે. પરંતુ મમ્મટે કહ્યું છે તેવા બ્રહ્માનંદ સહોદર આનંદની પ્રાપ્તિમાટે એ સાહિત્યનું અઠંઠ પાન કરવું રહ્યું ધોરણ 8માં વિદ્યાર્થીઓ સંસ્કૃતનું સ્મૃતિક, ભાષાકીય અને સાહિત્યિક મહત્વ સમજે તે માટે સંસ્કૃતની તમામ વિશેષ બાબતો તેમની સમક્ષ ઉજાગર કરવી જોઈએ. સારી ભાષા અને સાહિત્યની પ્રાપ્તિ થવી તે પણ સદ્ભાગ્ય ગણાય છે. એક સુભાષિતમાં આવાત સરસ રીતે રજૂ કરવામાં આવી છે.

સરસા સાલઙ્કારા સુપદન્યાસા સુવર્ણમયમૂર્તિઃ।

આર્યા તથૈવ ભાર્યા ન લભ્યતે પુણ્યહીનેન ।।

રસવાળી, અલંકારથી શોભતી, સારા પદન્યાસવાળી (જેનાં પદો સરસ રીતે ગોઠવાયેલાં છે તેમજ સરસ રીતે પગલાં પાડતી કે ચાલતી) જેની કાંતિ સુર્ણમય છે તેવી આર્યા (છંદની રચના) અને પત્ની પુણ્યરહિત પુરુષને મળતી નથી

શુદ્ધ અને સુવાચ્યલેખનની રીતો

ભાષા શિક્ષણમાં લેખિત અભિવ્યક્તિના કૌશલ્યને મહત્વપૂર્ણ ગણવામાં આવે છે. શ્રવણ-કથન અને વાચન કૌશલ્યોના વિકાસનું પરીક્ષણ લેખિત અભિવ્યક્તિ દ્વારા થાય છે. લેખન કૌશલ્યના વિકાસ માટેની વિવિધ પદ્ધતિઓ આપણે અન્ય ભાષાઓમાં શીખીએ છીએ સંસ્કૃત ભાષાના સંદર્ભમાં ધ્વજ્ઞમાં રાખવાની કેટલીક વિગતો અહીં યાદ કરી લઈએ.

- જોડાક્ષરોના અનુલેખનની પ્રવૃત્તિ પ્રાથમિક કક્ષાએ ખાસ કરવાની રહે છે. દેવનાગરી લિપિમાં કેટલાંક સંયુક્તક્ષરો વિશિષ્ટ રીતે લખાય છે. દ + ય = ઘ, ર + ક્ + અ = કર્, ક્ + ર + અ = કર, હ + ય = હ્ય, ત્ + ઋ = તઙ્, હ + મ્ + અ = હ્મા આ પ્રકારના સંયુક્તક્ષરોના લખાણમાં ભૂલો ન

થાય તે માટે સાવધાની રાખવાની જરૂર છે. કેટલીક વાર $દ + ય = દ્ય$ $ધ + ધ = ધ્ધ$ આ પ્રકારના સંયુક્તક્ષરો તેમજ $ધ + ય = ધ્ય$ માં પરસ્પર ભેદ ન સમજાવાથી પણ ક્ષતિઓ થાય છે. વિદ્યાર્થીઓમાં $દ + ય = દ્ય$ થયેલું છે જ્યારે ધ્યાન માં $ધ + ય = ધ્ય$ થયેલું છે તેની સમજ આવશ્યક બની રહે છે.

- ફ્લેશકાર્ડઝ અથવા ચાર્ટ્સમાં જોડણીમાં ક્ષતિ થવાની સંભાવના હોય તેવા શબ્દો બતાવવા. નિરીક્ષણ માટે પૂરતો સમય આપ્યાબાદ તે જ શબ્દોનું શ્રુતલેખન કરાવવું આ પ્રકારની પ્રવૃત્તિ હાથ ધરવાથી વિદ્યાર્થીઓમાં શબ્દોની જોડણી સાચી રીતે લખવાની આદત કેળવાય છે.
- વર્ગમાં વિદ્યાર્થીઓને મુક્તલેખનની પર્યાપ્ત તક પ્રાપ્ત થવી જોઈએ. પાઠ્યપુસ્તકમાંથી ગમતા ભાગનું લેખન કરવામાં તેઓ ઉત્સાહ બતાવતા હોય છે. સાથે સાથે પોતાને સ્મરણમાં હોય તેવાં વાક્યો, ગમતા શબ્દો, પોતે વ્યવહાર કરતા હોય તેવાં વાક્યો, સૂક્તિઓ વગેરેનું લેખન કરવાનો સમય પણ મળવો જોઈએ.
- કંઠસ્થ થયેલાં સુભાષિતોનું લેખન કરવાનો અભ્યક્ષ કરાવી શકાય. ગદ્ય અને પદ્ય લેખનમાં જે તફાવત હોય તે પણ તેમના ધ્યાન ઉપર લાવવા જોઈએ.
- ભાષાશિક્ષણ રસપ્રદ અને આનંદદાયી બની રહે તે માટે ભાષારમતો સહાયભૂત બની રહે છે શિક્ષક દ્વારા બોલાયેલા અંકોને ઝડપથી લખવા, બે-બેનાં જૂથમાં ઝડપથી શબ્દો લખવાની સ્પર્ધા, સુભાષિત લેખનની સ્પર્ધા, બુલેટિન બોર્ડમાં સંસ્કૃત ભાષાનાં સરળ સુભાષિતો રમૂજ કથાઓ, સૂક્તિઓ લખવા અને તેને સુશોભિત કરવાનું કાર્ય આ પ્રકારની રમતો અને પ્રવૃત્તિઓ સતત થતી રહે તો લેખનકાર્યમાં ચોક્કસાઈ આવી શકે છે.
- વિદ્યાર્થીઓ દ્વારા કરવામાં આવતા સ્વાધ્યાય, ગૃહકાર્ય તેમજ અન્ય પ્રકારના લેખનકાર્યની કાળજીપૂર્વકની તપાસ શિક્ષક દ્વારા થવી જોઈએ લેખન દરમિયાન થતી ક્ષતિઓ પ્રત્યે વિદ્યાર્થીઓનું ધ્યાન દોરવું જોઈએ એ માટે શિક્ષક દ્વારા ઉપયોગમાં લેવાતા ચિહ્નોથી બાળકોને પરિચિત કરવાં અને તેનું અનુકાર્ય થાય તેનું ધ્વ્નિ રાખવાની આવશ્યકતા રહે છે.
- વિદ્યાર્થીઓને સારા અને સુવાચ્ય અક્ષરોનાં લક્ષણોથી પરિચિત કરવા જોઈએ જેમાં સંસ્કૃત ભાષાની - દેવનાગરી લિપિના અક્ષરોનો મરોડ, અક્ષરોનું સપ્રમાણ કદ બે અક્ષરો તેમજ શબ્દો વચ્ચે ઉપરાંત લીટીઓ વચ્ચેનાં પ્રમાણસર અંતરનો ખ્યાલ, વિરામચિહ્નોનો ઉપયોગ, લખાણમાં સ્વચ્છતા, સીધી લીટીમાં લખાણ, અક્ષરો સ્થૂળ કે કૃશ ન થાય તેનું ધ્યાન, શિરોરેખા વગેરે બાબતો ઉપર ભાર મૂકવો જોઈએ આ માટે વિદ્યાર્થીઓનું સામૂહિક તેમજ વ્યક્તિગત સ્તરે વારંવાર ધ્યાન દોરવું અનિવાર્ય રહે છે.

- સુંદર અક્ષરો માટે વિદ્યાર્થીઓની બેસવાની પદ્ધતિ, પેન પકડવાની પદ્ધતિ, લેખનસામગ્રી પણ અગત્યની રહે છે. તે માટે વર્ગખંડમાં અનુલેખન અને શ્રુતલેખનની પ્રવૃત્તિઓ કરાવતી વખતે શિક્ષકે સૂક્ષ્મ નિરીક્ષણ કરતા રહેવું જોઈએ અને વિદ્યાર્થીઓને માર્ગદર્શન આપવું જોઈએ
- કોઈપણ બાબતનો વધુમાં વધુ મહાવરો તેમાં સારી સફળતા આપે છે બાળકો નિયમિતપણે લખવાની ટેવ પાડે તે માટે તેમને પ્રેરવાં જોઈએ
- વર્ગમાં સારા અક્ષરે લખતાં બાળકોનું લખાણ દરેકને બતાવવું જોઈએ અને સારા અક્ષરે લખનારને પ્રોત્સાહિત કરવા જોઈએ. વિદ્યાર્થીઓની હસ્તાક્ષરમાં થતી પ્રગતિ તેમજ સુધારા અંગે પણ તેઓને પ્રોત્સાહિત કરવા અનિવાર્ય રહે છે.
- ભાષામાં સાચી જોડણીનું મહત્વ વિદ્યાર્થીઓને સમજાવવું જોઈએ તેઓની જોડણીમાં ક્યાં ક્યાં ક્ષતિઓ રહે છે તેનું નિરીક્ષણ કરી અને તેની સુધારણા માટે ઉપચારાત્મક કાર્યક્રમ હાથ ધરવો જોઈએ.

આમ, વિવિધ પ્રવૃત્તિઓ દ્વારા વિદ્યાર્થીઓને સુવાચ્ય અને શુદ્ધ લેખનની ટેવ પડે તે આવશ્યક છે.

પારિભાષિક શબ્દો

હલન્ટ: વ્યંજનથી અંત આવતો હોય તેવો વર્ણ.

અનુલેખન: કોઈના દ્વારા લખવામાં આવેલ કે છપાયેલ શબ્દો, વાક્યો કે ફકરાને જોઈને લખવું.

શ્રુતલેખન: સાંભળીને લખવું.

3.5 મૂલ્યકંનની રીતો

શિક્ષણનો મુખ્ય ઉદ્દેશ્ય વિદ્યાર્થીનો સર્વગ્રાહી વિકાસ છે. તેથી વિદ્યાર્થીનું મૂલ્યકંન પણ સર્વગ્રાહી રીતે થવું જોઈએ મૂલ્યકંન પદ્ધતિમાં વિદ્યાર્થીઓના જ્ઞાનાત્મક, સર્જનાત્મક, ભાવાત્મક તેમજ કૌશલાત્મક વિકાસનું સતત મૂલ્યકંન થવું જોઈએ

સંસ્કૃત ભાષાના મૂલ્યકંનમાં ધ્યાનમાં રાખવાની બાબતો

- સંસ્કૃત વિષય ઉચ્ચતર પ્રાથમિકના તબક્કે વિશેષરૂપે ભાષાના પરિચય માટે મૂકવામાં આવ્યો છે એટલે જ અહીં ભાષાના વ્યાવહારિક પાસાને ધ્યાનમાં રાખી વિષયવસ્તુ આપવામાં આવ્યું છે. વ્યાકરણ તેમજ પ્રશિષ્ટ સાહિત્યની ભાષાના મૂલ્યકંનમાં પડવાનો આગ્રહ નથી
- મૂલ્યકંનકારે માત્ર સાદી વ્યાવહારિક ભાષા અને તેના ઉપયોગ પર ધ્યાન કેન્દ્રિત કરવું જોઈએ જેમ કે સંખ્યાજ્ઞાનનું મૂલ્યકંન કરવા માટે પુસ્તકોની સંખ્યા કે પડેલાં સાધનોની સંખ્યાગણતરી કરી સંસ્કૃતમાં કહી શકે તેમજ તે અંકોમાં તેમજ શબ્દોમાં લખી શકે તેટલું જ પર્યાપ્ત છે.

- પાઠ્યપુસ્તકમાં આપવામાં આવેલ વિષયવસ્તુ ભાષાના કોઈ ચોક્કસ બિંદુને ધ્યાનમાં રાખીને રચવામાં આવેલું છે જેથી તેમાં આપેલાં પાત્રોનાં નામ ઘટના કે અન્ય વિગતો યાદ રાખવાને બદલે સંબંધિત ભાષાનો વ્યવહારિક ઉપયોગ કરી શકે તે ધ્યાનમાં રાખીને મૂલ્યક્રંન કરવું જરૂરી છે.
- ગીતો અને સુભાષિતોમાં તેનું ગાન મહત્વનું છે. તેનાથી વિદ્યાર્થીને ભાષાના માધુર્યનો ખ્યાલ આપવાનો હેતુ છે કંઠસ્થીકરણ ઉપર ભાર મૂકવાનો નથી પણ તેનું આદર્શ પઠન અથવા ગાન કરી શકે છે કે નહીં તે ધ્યાનમાં રાખવું આવશ્યક છે.
- ભાષાના લેખિત, મૌખિક તેમજ ક્રિયાત્મક મૂલ્યક્રંનમાં તેના વ્યાવહારિક ઉપયોગ ઉપર ભાર મૂકવાનો છે
- શ્રુતલેખન તથા અનુલેખનને મૂલ્યક્રંનમાં સ્થાન આપવું જોઈએ

સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણના મૂલ્યક્રંન માટે નીચેની પ્રયુક્તિઓ સતત અને સર્વગ્રાહી મૂલ્યક્રંનના સંદર્ભમાં અપનાવી શકાય

- (1) મૌખિક કસોટી
- (2) ક્રિયાત્મક કસોટી
- (3) લેખિત કસોટી
- (4) અવલોકન
- (5) ચેકલીસ્ટ
- (6) ક્રમમાપદંડ
- (7) પ્રોજેક્ટ કાર્ય

મૂલ્યક્રંન કસોટીના નમૂના માટે કક્ષા 6, 7 અને 8 નાં પાઠ્યપુસ્તકનાં સ્વાધ્યાય તથા પુનરાવર્તનમાં આપેલી પ્રવૃત્તિઓનો અભ્યાસ કરવો.

આમ, મૂલ્યક્રંન દ્વારા શિક્ષક પોતાની અધ્યાપન યોજનાઓ અને સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણના હેતુઓની નિષ્પત્તિ કેટલા પ્રમાણમાં થઈ શકી છે તે જાણી શકે છે.

3.6 સંસ્કૃત અધ્યયન-અધ્યાપનમાં ICT નો ઉપયોગ

વર્ગખંડ શિક્ષણમાં ICT ના ઉપયોગને વર્તમાનમાં ખૂબ જ પ્રોત્સાહન આપવામાં આવે છે. શિક્ષક અને વિદ્યાર્થી બંને પક્ષે તેને આવકાર મળી રહ્યો છે શિક્ષણમાં ICTના ઉપયોગથી નિશ્ચિત કરેલા ધ્યેયોની પ્રાપ્તિમાં ખૂબ જ લાભ થાય છે ખાસ કરીને સંસ્કૃત જેવી ભાષા કે જે હાલ વ્યવહારમાં નથી ત્યારે તેવી ભાષાના શિક્ષણ માટે ICT ખૂબ જ ઉપયુક્ત છે. તે નવી તકો ખોલી આપે છે. જેમ કે, online learning, e-learning, virtual learning, e-journal વગેરે માટે આધુનિક મોબાઈલનો ICTમાં સમાવેશ

થાય છે. તેના દ્વારા ગમે તે સ્થળે સરળતાથી તથા ઓછા ખર્ચે કોઈપણ માહિતી સચિત્ર મેળવી શકાય છે. ICT શિક્ષક અને વિદ્યાર્થીને વર્ગખંડ તથા પુસ્તકાલયમાં ખૂબ જ સ્પષ્ટ સાહિત્ય પૂરું પાડે છે સંસ્કૃત શિક્ષણમાં ICTના ઉપયોગના હેતુઓ નીચે પ્રમાણે છે

- સમજનો વિકાસ અને ખ્યાલોનું અમલીકરણ/વ્યાવહારીકરણ
- અભિવ્યક્તિનો વિકાસ
- તર્ક અને વિચારશક્તિનો વિકાસ
- ન્યાયસંગતતાનો વિકાસ અને નિર્ણય ક્ષમતાનો વિકાસ
- અર્થગ્રહણ, ઝડપ અને શબ્દભંડોળ સુધારણા
- સ્વ-ખ્યાલ ઘડતર અને મૂલ્યોની સ્પષ્ટતા
- યોગ્ય અભ્યાસ ટેવોનો વિકાસ
- સહનશીલતા, અનિશ્ચિતતા, જોખમ લેવાની ક્ષમતા, વૈજ્ઞાનિક સ્વભાવ વગેરેનો વિકાસ

સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણમાં નીચેની બાબતોમાં ICTનો ઉપયોગ કરી શકાય.

- શ્લોક, મંત્ર, સૂક્તિ વગેરેના શુદ્ધ ઉચ્ચારણ માટે ઓડિયો ક્લિપીંગ્સ, ટેપરેકોર્ડર, સીડી કે વેબસાઈટ તથા યુ-ટ્યુબ પરથી શ્લોકોનું શ્રવણ કરાવી શકાય
- અભ્યાસનાં નાનાં બિંદુઓને powerpoint presentation પર ક્રમશઃ રજૂ કરી શકાય છે. આ ઉપરાંત કથા, પ્રસંગ વગેરેની .ppt દ્વારા સચિત્ર રજૂઆત કરીને અધ્યયન-અધ્યાપન પ્રક્રિયાને અસરકારક બનાવી શકાય છે.
- ફ્લેશકાર્ડઝ પર અમુક વસ્તુ કે ક્રિયાનાં ચિત્રો દોરવાં કે તૈયાર મળવાં મુશ્કેલ હોય ત્યારે તે ચિત્રો ઈન્ટરનેટ પર સરળતાથી મળી જાય છે તથા તેની ગુણવત્તા પણ સારી હોય છે. આમ, ઈન્ટરનેટ પરથી ચિત્રો શોધીને .ppt દ્વારા તેની રજૂઆત કરવાથી વિદ્યાર્થીઓને સરળતાથી ભાષા શીખવામાં સહાય મળે છે.
- સંસ્કૃત ગીતો, કાવ્યો, બાળગીતો વગેરેનું ગાન પણ અલગ અલગ વેબસાઈટ પર ઉપલબ્ધ છે. તો તેનો ઉપયોગ કરીને તે સંભળાવી શકાય તથા તેનું ગાન કરતા કરી શકાય
- વિદ્યાર્થીઓના નિદાન-ઉપચારાત્મક કાર્ય માટે ICTનો ઉપયોગ કરી શકાય છે.
- અભ્યાસના વિષયવસ્તુ સાથે સંબંધિત Video clippings ઈન્ટરનેટ પર ઉપલબ્ધ હોય છે. જેનો ઉપયોગ સંદર્ભ તરીકે કરાવીને વિદ્યાર્થીઓને વધારે મહાવરો આપી શકાય
- Language Libraryની મદદથી audio અને video સ્વરૂપે વિવિધ વિષય પર વાતચીત, સંવાદ સંભળાવીને સંસ્કૃત વાક્યરચના અને વ્યાકરણની સમજ, મહાવરો આપી શકાય છે.
- શબ્દભંડોળના વિકાસ માટે online અને offline Dictionary ઉપલબ્ધ છે. જેનો ઉપયોગ શિક્ષક અને વિદ્યાર્થી બંને કરી શકે

3.7 સમગ્ર એકમનો સારાંશ

ભાષાશિક્ષણની અનેક પદ્ધતિઓના પરિચય બાદ વર્તમાનમાં સંસ્કૃત ભાષાના અધ્યાપન માટે સંભાષણ પદ્ધતિ ખૂબ જ ઔચિત્ય છે. સંસ્કૃત સંભાષણ પદ્ધતિથી વિદ્યાર્થીઓ સંસ્કૃત ભાષાનું સ્ફૂર્તિક, ભાષાકીય અને સાહિત્યિક મહત્વની અનુભૂતિ કરીને તેનો વ્યવહારમાં ઉપયોગ કરવા પ્રેરાશે તેમ છતાં અભ્યાસ બિંદુઓને આધારે વૈશ્વિક ફલક પર યોજાતી અધ્યાપન પદ્ધતિઓ જેવી કે, Audio Language, Task Based Language Learning, The Natural Approach, Peer Group Learningનો ઉપયોગ પણ ફળદાયી રહેશે.

સંસ્કૃત ભાષાના શિક્ષણમાં ICTનો ઉપયોગ આવકારદાયક છે. ICTના ઉપયોગ થકી વિદ્યાર્થીઓ સરળતાથી, રસપૂર્વક ભાષાનું શિક્ષણ પ્રાપ્તકરી શકે છે.

સંસ્કૃત ભાષાના હેતુઓની સિદ્ધિ માટે રચનાત્મક તથા સત્રાંત મૂલ્યક્રમ માટે આપવામાં આવેલી અનેકવિધ મૂલ્યક્રમ પ્રયુક્તિઓનો ઉપયોગ કરી શકાય.

3.8 કસોટી પ્રશ્નો

1. સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણનું મહત્વ સમજાવો.
2. પ્રાચીન સમયમાં સંસ્કૃત ભાષાના અધ્યાપન માટે કઈ કઈ પદ્ધતિઓ પ્રયોજાતી હતી?
3. વૈશ્વિક ફલક પર પ્રયોજાતી ભાષાશિક્ષણની પદ્ધતિઓના નામ આપી તેની ટૂંકમાં સમજ આપો
4. સંભાષણ પદ્ધતિ એટલે શું? તેનું મહત્વ સમજાવો.
5. સંભાષણ પદ્ધતિની પ્રવૃત્તિઓ જણાવો
6. સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણની મૂલ્યક્રમની વિવિધ રીતો જણાવો.
7. સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણમાં ICTના હેતુઓ જણાવો
8. સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણમાં ICTનો ઉપયોગ જણાવો.
9. સંસ્કૃત ભાષાશિક્ષણની જરૂરિયાત સમજાવો

3.9 અસાઈનમેન્ટ

- સંસ્કૃત ભાષાના સંયુક્તક્ષરોનો ચાર્ટ તૈયાર કરો.
- અહીં આપવામાં આવેલી સંભાષણ પ્રવૃત્તિઓમાંથી કોઈ પણ ચાર પ્રવૃત્તિઓનો ઉપયોગ તમારા સંસ્કૃત પાઠના અધ્યાપનમાં કરીને તેના અનુભવો વર્ણવો
- તમારા સહપાઠીઓના સંસ્કૃત પાઠ આયોજનનું અવલોકન કરીને તેઓએ કઈ કઈ સંભાષણ પ્રવૃત્તિઓ પ્રયોજી છે તેની યાદી તૈયાર કરો
- વર્ગખંડમાં ઉપયોગમાં લઈ શકાય તેવાં પાંચ સંસ્કૃત બાળગીતો લખો

3.10 સંદર્ભ સાહિત્ય

તોમર, લજ્જારામ (૧૯૯૫). **ભારતીય શિક્ષા કે મૂલ તત્ત્વ**. દ્વિતીય સંસ્કરણ, નई દિલ્હી: સુરુચિ પ્રકાશન।

થાનકી, આશા. મધુરા ભાષા સંસ્કૃત અમદાવાદ: સંસ્કાર ગુર્જરી, ગુજરાત પ્રદેશ

સંસ્કૃત પદ્ધતિશા પ્રકાશન: ગુજરાત રાજ્ય પાઠ્યપુસ્તક મંડળ

Richards Jack C. & Rodgers, T. S. **Approaches and Methods in Language Teaching**. Cambridge University Press.

ટશાળાકીય સર્વગ્રાહી મૂલ્યક્રમ (SCE) શિક્ષક માર્ગદર્શિકા. ધોરણ 1 થી 8, જીસીઈઆરટી, 2014.

શિક્ષક આવૃત્તિ, સંસ્કૃત ધોરણ 6-8, ગુજરાત રાજ્ય શાળા પાઠ્યપુસ્તક મંડળ, 2012

3.11 પ્રાયોગિક કાર્ય

1. રેડિયો અને ટીવીમાં પ્રસારિત થતાં સંસ્કૃત સમાચારોનું શ્રવણ કરો
2. વિવિધ વિષયો પર વાર્તાલાપો તૈયાર કરો અને રોલપ્લે દ્વારા રજૂ કરો.

વર્ગખંડમાં અપેક્ષા

વર્ગખંડમાં સંસ્કૃત ભાષાનું શિક્ષણકાર્ય શક્તિરતી વખતે શિક્ષક પાસે નીચેની અપેક્ષાઓ છે.

- વર્ગખંડમાં સંસ્કૃતભાષાનું શિક્ષણકાર્ય કરતી વખતે સંસ્કૃત ભાષાના માધ્યમો જ ઉપયોગ કરવાનો આગ્રહ રાખીશું.
- કોઈપણ પાઠનો અનુવાદ તો કોઈપણ સંજોગોમાં નહિ જ કરીએ
- કોઈપણ પાઠની શરૂઆત કરીએ ત્યારે તેના અભ્યાસબિંદુઓ તેમજ અગત્યના શબ્દો ઉપર જ પ્રથમ ધ્યાન આપવું જરૂરી છે અલબત્ત, આ પાઠમાં આ અભ્યાસબિંદુ છે અને આટલા શબ્દો નવા છે, તેવું બાળકોને કહેવાનું નથી આના પરિચય માટે પ્રત્યક્ષ ક્રિયા, અભિનય, ચિત્ર અને અન્ય ઉપકરણો જ ઉપયોગી બનશે. પાઠનો આરંભ કરતી વખતે જ કેટલીક પૂર્વપ્રવૃત્તિ દ્વારા આ બાબતો બરાબર સ્પષ્ટ કરવી પડશે.
- ઉચ્ચારશુદ્ધિ એ ભાષાનું અનિવાર્ય અંગ છે શિક્ષકે તો શુદ્ધ ઉચ્ચાર કરવા જ જોઈએ, જેથી બાળકો ખોટા ઉચ્ચાર ના કરે. હ્રસ્વ-દીર્ઘ, અનુનાસિકો, હલન્ત 'મ્', વિસર્ગ વગેરેના ઉચ્ચાર ઉપર પ્રારંભથી જ ધ્યાન આપવું જરૂરી છે
- લેખન એ ભાષાશિક્ષણનું મહત્વનું પાસું છે તેથી અહીં તેને ગૌણ સ્થાન આપવાનો હેતુ નથી પરંતુ પ્રારંભમાં ચાર પાઠોમાં આપણે શ્રવણ અને ભાષણ ઉપર જ ભાર મૂકવાનો છે લેખનનો પ્રારંભ થયા બાદ અક્ષરોના કદ, શબ્દો વચ્ચેના અંતર અને વિરામ ચિહ્નોની સમાનતા પર ભાર મૂકવો

- અભ્યાસબિંદુઓ અને પાઠ્યસામગ્રીનું શિક્ષણકાર્ય પ્રવૃત્તિલક્ષી બને આનંદદાયી બને તે જરૂરી છે.
- સુભાષિતો-મંત્રો અને ગીતનું ભાવવાહી ગાન કરીશું અને કરાવીશું તેનો અર્થ કરવાની કે કરાવવાની પળોજણમાં પડવાની જરૂર નથી તેના માધુર્યને માણવાની જરૂર છે. આનો ઉપયોગ શાળાના દૈનિક કાર્યક્રમોમાં અને સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમોમાં પણ કરાવી શકાય.
- જરૂરી ટી.એલ.એમ.નો ઉપયોગ તો કરીશું જ.
- લેખનનો પ્રારંભ કરવામાં બાળકો દેવનાગરી લિપિથી મહદઅંશે પરિચિત છે જ, તે ધ્યાનમાં રાખીને વળાંકો લખે તે જોઈશું.

4. સંસ્કૃત સમજપત્રક અને વ્યાવહારિક વ્યાકરણ

- 4.1 પ્રસ્તાવના
- 4.2 ઉદ્દેશ્ય
- 4.3 સમજપત્ર
- 4.4 વ્યાવહારિક વ્યાકરણ
- 4.5 શ્લોક અને સુભાષિત ગાનનું મહત્ત્વ
- 4.6 સમગ્ર એકમનો સારાંશ
- 4.7 અસાઈનમેન્ટ

4.1 પ્રસ્તાવના

પ્રસન્નાઃ કાન્તિહારિણ્યો નાનાશ્લેષવિચક્ષણાઃ।

ભવન્તિ કસ્યચિત્પુણ્યૈર્મુખે વાચો ગૃહે સ્ત્રિયઃ।.

પ્રસન્ન સ્વભાવવાળી, મનોહર કાંતિવાળી, આલિંગન અને હાસ્યવિનોદમાં નિપુણ સ્ત્રી જેમ પુણ્યયોગે મળે છે તેમ પ્રસન્ન, મનોહર અનેક પ્રકારના શ્લેષ-ગૂઢ અર્થોથી યુક્ત અને વિચક્ષણતાથી ભરેલી વાણી પણ કોઈક જ માણસના મુખને પુણ્યયોગે મળે છે.

પ્રસ્તુત સુભાષિતમાં ભાષાપ્રભુત્ત્વી પ્રસંશા કરવામાં આવી છે ભાષામાં નિપુણતા મેળવવી એ પુણ્યયોગથી તો થતું હશે પણ તેમાં અભ્યાસયોગ અનિવાર્ય છે. તે બાબત ધ્યાનમાં રાખી આપણે દેવભાષાના અભ્યાસને આગળ વધારીએ.

આ પ્રકરણ માં આપણે સંસ્કૃત ભાષા ના સમજ પત્રક ઉપરાંત ધોરણ 6 થી 8 ના સંસ્કૃત ભાષાના પાઠ્યપુસ્તકમાં સમાવિષ્ટ વિષયવસ્તુને સમજાવવામાં ઉપયોગી થાય તેવા વ્યાકરણના મુદ્દાઓ સમજાવવા પ્રયાસ કરીશું.

4.2 ઉદ્દેશ્ય

પ્રશિક્ષણાર્થીઓ

- સંસ્કૃત ભાષાના સમજ પત્રક અંગે માહિતગાર થશે.
- ધોરણ 6 થી 8 ના અધ્યયન અને અધ્યાપનમાં ઉપયોગી થાય તેવા વ્યાવહારિક વ્યાકરણના મુદ્દાઓથી માહિતગાર થશે

- સુભાષિત અને શ્લોક ના ગાનના મહત્વ અંગે માહિતગાર થશે .

4.3 સમજપત્ર - સંસ્કૃત

ગુજરાતમાં સંસ્કૃત વિષયના શિક્ષણના હેતુઓ ધ્યાનમાં આવે તે માટે સમજપત્રનો અભ્યાસ અનિવાર્ય છે.

સંસ્કૃત શા માટે ભણાવવું જોઈએ ?

સંસ્કૃત ભારત ની સાંસ્કૃતિક રાષ્ટ્રભાષા છે. સમગ્ર રાષ્ટ્રને એકસૂત્રે બાંધનારી મહત્વની કડી છે. માત્ર ભારતીય નહિ પણ વિશ્વની અનેક ભાષાઓની જનની છે. ઉપરાંત જગતની પ્રાચીનતમ ભાષા છે. જેથી ભારતીય શિક્ષણને સંસ્કૃતથી અલગ પાડીને જોવું એ અસંભવ છે. એટલે આપણા અભ્યાસક્રમમાં સંસ્કૃતભાષાનું સ્થાન અચળ રહ્યું છે. પ્રવર્તમાન સમયમાં પ્રાથમિક કક્ષાએ સંસ્કૃતભાષા શીખવવાના મહત્વના હેતુઓ આ પ્રમાણે છે

- સંસ્કૃત ભાષા માનવીય અને માનસિક વિકાસ માટેનું ઉત્તમ માધ્યમ બની શકે છે.
- ભાષાની પોતાની સંરચના વૈજ્ઞાનિક છે. જેથી કમ્પ્યુટર વૈજ્ઞાનિકો તેને કમ્પ્યુટર માટેની સર્વોત્તમ ભાષા ગણે છે. સામાન્ય રીતે આ પ્રકારની શાસ્ત્રીય ભાષા અથવા શાસ્ત્રીય કલા અંગે અભ્યાસ થવાથી તેની અસર વ્યક્તિની વૈચારિક પ્રક્રિયા પર પડે છે અને તેનાથી માનસિક વિકાસ થાય છે. ઉપરાંત માનવીય વિકાસ માટે પણ એ જ વસ્તુ ઉપર્યુક્ત બને છે.
- સંસ્કૃત ભાષાના માધુર્ય અંગે કોઈ વિવાદને સ્થાન રહેતું નથી આજે પણ અનેક પરિવારોમાં ગવાતી સ્તુતિઓ કે મંત્રોના ગાનથી વાતાવરણ સરસ બને છે આ જગ્યાએ અર્થબોધ ન થતો હોવા છતાં માત્ર ભાષાના માધુર્યથી આ પરિણામ આવે છે. આમ, ભાષાના માધુર્યને માણવા માટે પણ સંસ્કૃત ભાષાનું શિક્ષણ અનિવાર્ય બની રહે છે.
- સંસ્કૃત એ વિશ્વની સમૃદ્ધ ભાષાઓમાં અગ્રેસર છે, તેમજ આપણી માતૃભાષા તેમજ રાષ્ટ્રભાષા ઉપરાંત અન્ય ભારતીય ભાષાઓ પણ શબ્દભંડોળ માટે સંસ્કૃતભાષાની ઋણી છે. તેથી સંસ્કૃત ભાષા શીખવાને કારણે માતૃભાષા તેમજ રાષ્ટ્રભાષાની સમૃદ્ધિ આકસ્મિકપણે પ્રાપ્ત થાય છે. જેના કારણે અન્ય ભારતીય ભાષાઓ શીખવામાં પણ સંસ્કૃત ભાષાનું જ્ઞાન ઉપયોગી બની રહે છે.
- સંસ્કૃત ભાષા પાસે અદ્વિતીય સાહિત્ય સમૃદ્ધિ છે. આપણી તમામ ભારતીય ભાષાઓના સાહિત્ય ઉપર રામાયણ, મહાભારત જેવા ગ્રંથોની બહુ મોટી અસર જણાય છે વર્તમાન સમયમાં પણ રચાતા અનેક સાહિત્યનું મૂળ આપણા આ મહાગ્રંથોમાં જોવા મળે છે.

- આ સાહિત્ય નો રસાસ્વાદ માણવા માટે ભાષાનું જ્ઞાન અનિવાર્ય થઈ પડે છે. જેથી તેનું સિંચન પ્રાથમિક કક્ષાએથી કરવામાં આવે એ જરૂરી છે.
- આપણા સમાજ જીવનમાં અનેક સારા પ્રસંગોમાં તેમજ જાહેર સમારંભોમાં સંસ્કૃત ભાષાના મંત્રો શ્લોકો તેમજ સ્તુતિઓનો ઉપયોગ થતો જોવા મળે છે. એ સૂચવે છે કે સંસ્કૃત એ આપણી સાંસ્કૃતિક ભાષા હોવા ઉપરાંત આપણા સમાજ જીવનનું અભિન્ન અંગ રહ્યું છે.
- આપણા અનેક સરકારી વિભાગો, સંસ્થાઓ, જાહેર ક્ષેત્રોમાં શૈક્ષણિક અને અન્ય સંસ્થાઓ તેમજ ખાનગી ક્ષેત્રોમાં પણ સંસ્કૃતના કોઈ એકાદ વાક્ય ને પોતના ધ્યેય વાક્ય તરીકે મૂકવાની પ્રથા છે.
- આપણા રાષ્ટ્રના મુદ્રાલેખમાં પણ ‘સત્યમેવ જયતે’ લખાયેલું છે. આ પ્રમાણે ધ્યેય વાક્ય તરીકે સંસ્કૃત ભાષાના સાહિત્યની કોઈક પંક્તિ કે સૂક્તિ મુકાયેલી જોવા મળે છે તાર, ટપાલ વિભાગની અહર્નિશ સેવામહે, જીવન વિમા નિગમની યોગક્ષેમમ્ વહામ્યહમ્. ભારતીય સુપ્રીમ કોર્ટની ચતોર્થ ધર્મ તત્ત્વો જય.. આ પ્રમાણે લગભગ તમામ વિભાગોમાં સંસ્કૃતભાષાનાં દર્શન થાય છે.
- ભારતીય જીવન પદ્ધતિ જેને સમગ્ર વિશ્વ આદરથી જુએ છે. તે તમામના મૂળ સંસ્કૃત ભાષામાં પડેલાં છે. માતૃ દેવો ભવ, પિતૃ દેવો ભવ, અતિથિ દેવો ભવ વગેરે તેના ઉદાહરણ રૂપ છે.
- આપણા માનવીય વિકાસને પોષક અનેક મૂલ્યો સંસ્કૃત ભાષાના સાહિત્યમાં સ્ફૂટ થતાં જોવા મળે છે. શિક્ષણનું ધ્યેય સુસંસ્કૃત માનવના નિર્માણનું પણ છે. આ ધ્યેયની સિદ્ધિ માટે વિચારધારા રોપવાનું કાર્ય સંસ્કૃતભાષા સક્ષમ રીતે કરી શકે તેમ છે.
- પ્રસ્તુત હેતુઓ જોતા સંસ્કૃત ભાષાને પૂર્ણમિક તબક્કાથી સ્થાન આપવું જરૂરી થતું હોઈ છઠ્ઠા ધોરણથી (11 વર્ષની ઉંમરે) સંસ્કૃત ભાષાના શિક્ષણનો પ્રારંભ કરવામાં ન્યાયપૂર્ણ બને છે

ધોરણ આઠના અંતે અપેક્ષિત ગુણ વિકાસ-

- સંસ્કૃતભાષા પ્રત્યે પ્રેમ અને ગૌરવ
- મૂલ્યોની સમજ
- રાષ્ટ્રપ્રેમ, માતૃ પ્રેમ આતિથિ ભાવના, આદરભાવ, સત્ય, ચાતુર્ય દયા, શ્રમ, કડુણા, વિવેક, સમાનતા, સહિષ્ણુતા
- ભાષાભિવ્યક્તિ
- ઉચ્ચારશુદ્ધિપણ
- ભાષાના માધુર્યને માણે

- સંસ્કૃતિની ઓળખ
- અર્થગ્રહણ કૌશલનો વિકાસ
- ભારતના વૈભવપૂર્ણ વારસાનું ગૌરવ
- સંસ્કૃત સંભાષણ

શીખવાનાં લક્ષ્યો:-

- કરીક્યુલમ આઉટલાઇન
- કક્ષા-8 ના અંતે વિદ્યાર્થીઓ 50 જેટલાં સુભાષિતો, મંત્ર, શ્લોક, 10..... ગીતો, કેટલીક ટૂંકી વાર્તા, બોધકથા, પ્રસંગકથા સાંભળતો અને સમજતો થશે
- સાદી સરળ વાતચીત, સંવાદ અને પાંચ છ વાક્યોમાં સંસ્કૃત ભાષામાં થશે
- સરળ પદોનું શુદ્ધ ઉચ્ચાર સાથે પઠન કરતો થશે
- સંધિયુક્ત શબ્દો સાથેનાં સ્વતંત્ર વાક્યો તેમજ નાના ફકરાનું શુદ્ધ વાંચન કરતો થશે
- સાદા તથા જોડાક્ષર યુક્ત પદો સાથેના પરિચ્છેદનું શ્રુતલેખન કરતો થશે
- સંસ્કૃતમાં વર્તમાનકાળ અને સામાન્યભવિષ્યકાળનો ઉપયોગ કરતો થશે.
હસ્તન ભૂતકાળ, વિભક્તિની સમજ તથા તેના સામાન્ય ઉપયોગ કૃદન્તનો વ્યવહારિક ઉપયોગ જાણતો થશે.
- સ્વરસંધિ વિશે જાણતો થશે
- પ્રારંભિક રીતે સંભાષણમાં જરૂરી એવા સર્વનામો વિશેષણો, અવ્યયોથી પરિચિત થશે.

4.4 વ્યાવહારિક વ્યાકરણ;

પરિચય

આપણે વ્યાવહારિક વ્યાકરણનો પ્રારંભ પરસ્પર પરિચયથી કરીએ.

શિક્ષક: (મૂકેશને) ભવતઃ નામ કિમ્ ?

મુકેશ : મમ નામ મૂકેશઃ।

શિક્ષક: (સ્મૃતિને) ભવત્યાઃ નામ કિમ્ ?

સ્મૃતિ : મમ નામ સ્મૃતિ।

ઉપર્યુક્ત સંવાદમાં ધ્યાનમાં આવ્યું હશે કે જ્યારે પુરુષને - છોકરાને પ્રશ્ન પૂછવો હોય તો ભવતઃ (આપનું) શબ્દનો ઉપયોગ થયો છે. જ્યારે મહિલા-છોકરીને પ્રશ્ન પૂછવા માટે ભવત્યાઃ (આપનું) શબ્દનો ઉપયોગ થયો છે.

શિક્ષક : (મૂકેશને) ભવાન્ મૂકેશઃ।

(સ્મૃતિને) ભવતી સ્મૃતિ।

ભવાન્ (આપ - તમે) ભવતઃ (આપનું - તમારું) પુલ્લિંગ માટે, ભવતી (આપ - તમે) ભવત્યાઃ (આપનું - તમારું) સ્ત્રીલિંગ માટે. આ ઉપરાંત અહમ્ (હું) અને મમ (મારું) આટલાં રૂપો યાદ રાખો અને નીચેનાં વાક્યો વાંચો

મમ નામ નરેન્દ્રઃ। ભવતઃ નામ ઇન્દ્રઃ। અહં શિક્ષકઃ ભવાન્ વૈદ્ય। ભવત્યા નામ વાણી। ભવતી લેખિકા।

હવે વર્ગખંડમાં થતા આ વાર્તાલાપને સમજો

શિક્ષકઃ (દૂર ઊભેલી વીણાને બતાવીને) સા કન્યા। તસ્યાઃ નામ વીણા। સા છાત્રા।

શિક્ષકઃ (દૂર ઊભેલા પ્રબોધને બતાવીને) સઃ પ્રબોધઃ। તસ્ય નામ પ્રબોધઃ। સઃ છાત્રઃ।

વિચારો અને સમજો :

અહીં આપણે કેટલાંક સર્વનામોનો પરિચય મેળવ્યો છે. આ સર્વનામો પ્રથમા અને ષષ્ઠી વિભક્તિમાં વપરાયાં છે. તેનું પુનરાવર્તન કરીએ

પુલ્લિંગઃ	અહમ્ (હું)	મમ (મારું)
	ભવાન્ (આપ)	ભવતઃ (આપનું)
સ્ત્રીલિંગઃ	અહમ્ (હું)	મમ (મારું)
	ભવતી (આપ)	ભવત્યા (આપનું)
	સા (તે)	તસ્યાઃ (તેમનું)

આટલાં સર્વનામોના આધારે શક્ય તેટલાં વાક્યો બોલો અને લખો.

નામ અને ક્રિયાપદ :

અહીં આપેલાં વાક્યો વાંચો :

ગજઃ ચલતિ। હાથી ચાલે છે. શીલા પઠતિ। શીલા વાંચે છે.

સચીનઃ ધાવતિ। સચિન દોડે છે. કમલં વિકસતિ। કમલ ખીલે છે.

વન્દના નમતિ। વંદના નમે છે. વરુણઃ હસતિ। વરુણ હસે છે.

उदयः नमति।

ઉદય લખે છે.

ક્ષમા ગાયતિ।

ક્ષમા ગાય છે.

આ વાક્યોમાં ગજः, શીલા, સચીનः, કમલમ્, વન્દના, उदय, ક્ષમા નામો છે. કોઈ અવયવ, પ્રાણી, દિશા, જૂથ, વસ્તુ, વૃક્ષ, પક્ષી વગેરેનાં નામો વાક્યોમાં હોઈ શકે. આવા શબ્દોને સંજ્ઞા કે નામ તરીકે ઓળખવામાં આવે છે.

પ્રસ્તુત વાક્યોમાં ચલતિ, પઠતિ, ધાવતિ, વિકસતિ, મનતિ, હસતિ, લિખતિ અને ગાયતિ જેવાં પદોનો ઉપયોગ થયો છે તે ક્રિયાનાં સૂચક છે તેમને ક્રિયાપદ કહે છે.

નામપદ અને ક્રિયાપદના ઉપયોગથી વાક્ય બને છે. વાક્યરચનામાં નામ, ક્રિયાપદ ઉપરાંત સર્વનામ, અવ્યય વગેરેનો ઉપયોગ થાય છે. અહમ્, ભવાન્, ભવતી, સઃ, તત્, તે વગેરે સર્વનામો છે. જ્યારે ગન્ત્રી, ગચ્છતિ, ગાડી જાય છે. અગ્રે ગચ્છતિ, પૃષ્ઠે ગચ્છતિ, મન્દં ગચ્છતિ. શીઘ્રં ગચ્છતિ, વક્ત્રં ગચ્છતિ, સરલં ગચ્છતિ. આ વાક્યોમાં અગ્રે, પૃષ્ઠે મન્દમ્ શીઘ્રમ્ વક્ત્રમ્ અને સરલમ્ જેવા શબ્દોનો ઉપયોગ થયો છે. કોઈ પણ પુરુષ વચન, લિંગમાં આ શબ્દો કોઈ પણ જાતના ફેરફાર વગર વપરાય છે. તેથી તે અવ્યવ છે.

આટલી સમજ બાદ આપણે નામપદ અને ક્રિયાપદનો ઉપયોગ કરી કેટલીક સાદી વાક્યરચનાઓ જરૂર કરી શકીશું.

શીલા પઠતિ । આ વાક્યમાં શીલા એ પઠતિ ક્રિયાપદની કર્તા છે. વાંચવાનું કામ કરનાર શીલા છે. એટલે ક્રિયાપદે કર્તાને અનુસરવું પડે છે જો કર્તા તરીકે અહમ્ આવે તો ક્રિયાપદ કર્તાને અનુસરીને બદલાશે.

અહં પઠામિ । હું વાંચું છું કર્તા શીલા હોય તો પઠતિ ક્રિયાપદ આવે પણ અહમ્ હોય તો પઠામિ થાય.

વિચારો અને સમજો

	એકવચન	દ્વિવચન	બહુવચન
પ્રથમ પુરુષ	મિ	વઃ	મઃ
બીજો પુરુષ	સિ	થઃ	થ
ત્રીજો પુરુષ	તિ	તઃ	અન્તિ

અહીં વર્તમાનકાળના પરસ્મૈપદના પ્રત્યયો દર્શાવ્યા છે. મિ, મઃ, તિ, અને અન્તિ પ્રત્યયોને ઘાટા કરવામાં આવ્યા છે. એટલે કે તે પ્રત્યયો પ્રત્યે ધ્યાન આપવામાં આવે અને તેનો ઉપયોગ કરવામાં આવે

તો સરળ સંભાષણમાં ચાલી શકે બાકીના પ્રત્યયોનો ઉપયોગ ખરો. પણ આપણા અભ્યાસક્રમને સંબંધ છે ત્યાં સુધી તેનો વિશેષ ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો નથી.

અહં હસામિ। (હું હસું છું) ક્ષમા હસતિ। (ક્ષમા હસે છે.)

અહં ગાયામિ। (હું ગાઉં છું.) વન્દના ગાયતિ। (વંદના ગાય છે.)

અહં લિખામિ। (હું લખું છું) સચીનઃ લિખતિ। (સચીન લખે છે.)

ઉપર મુજબ સમાન્ય ભવિષ્યકાળ અને હસ્તનભૂતકાળના પ્રત્યયો લગાડવાથી તે કાળનાં રૂપો બને છે. તેના પ્રત્યયો ધોરણ આઠના પાઠ્યપુસ્તકમાંથી મેળવીને લખો અને બન્ને કાળનાં વાક્યો બનાવો.

વિભક્તિ

રામો રાજમણિ સદા વિજયતે રામં રમેશં ભજે

રામેણાભિહતા નિશાચરચમ્ રામાય તસ્મૈ નમઃ।

રામાન્નાસ્તિ પરાયણં પરતરં સામસ્ય દાસોઽસ્મ્યહમ્

રામે ચિતલયઃ સદા ભવતુ મે ભો રામ મામુદ્ધર।

ભગવાન શ્રીરામની મહત્તા તેમજ તેમના પ્રત્યેની ભક્તિને નિરૂપતા આ શ્લોકને વ્યાકરણની દૃષ્ટિએ સમજીએ.

- રાજમણિ: રામ: સદા વિજયતે। રાજાઓમાં મણિ જેવા રામ સદા વિજય પામે છે. આ વાક્યમાં રાજમણિ: એ રામ: નું વિશેષણ છે સાદા અવયવ છે. અહીં વિજયતે ક્રિયાપદના કર્તા તરીકે રામ: છે.
- રામં રમેશં ભજે। આ વાક્યમાં કર્તા અધ્યાહાર છે. અહં રમેશં રામં ભજે। હું રમાના પતિ રામને ભજું છું ફરીથી રમેશમ્ એ વિશેષણનો ઉપયોગ થયો અને આ વાક્યમાં રામમ્ એ કર્મ તરીકે આવેલ છે.
- રામેણ + અભિહતા = રામેણાભિહતા
રામેણાભિહતા નિશાચરચમ્। રામ વડે રાક્ષસોની સેના હણી નંખાઇ. રામેણ એ રામ: નું ત્રીજી વિભક્તિ એટલે કરણ વિભક્તિનું એકવચનનું રૂપ છે
- રામાય તસ્મૈ નમઃ। તેવા રામને નમસ્કાર હો. અહીં રામાય ચતુર્થી સંપ્રદાન વિભક્તિમાં છે. નમઃ શબ્દની સાથે ચતુર્થી વિભક્તિજ આવે. સ્ત્રીલિંગમાં તસ્યૈ નમઃ। બોલાય જ્યારે પુલ્લિંગમાં તસ્મૈ નમઃ।
- રામાત્ + ન + અસ્તિ = રામાન્નાસ્તિ।
રામાત્ રામ પરથી વધીને વધુ ઉત્તમ પ્રિયકર કોઈ નથી

रामात् ऐ पं यमी अपादान विभक्तिनं रूप ऐ

- दासः + अस्मि + अहम् = दासोऽस्म्यहम्

अहम् रामस्य दासः अस्मि। हुं रामनो दास हुं.

रामस्य संबं धक ऐटले के षष्ठीविभक्ति ऐकवचननं रूप ऐ

- मम चितलयः सदा रामे भवतु। मारुं मन हंमेशा राममां रहो रामे सप्तमी -अधिकरण विभक्तिमां ऐ.
- माम् + उद्धार = मामुद्धार। भो राम माम् उद्धार। हे राम मने उगारो. भो राम रामने करायेल संबोधन ऐ.

प्रस्तुत श्लोकमां राम पुल्लिंग नामनां तमाम विभक्तिमां ऐकवचननां रूपोनो क्रमशः उपयोग थयेलो ऐ. ऐ साथे ज संस्कृतनी वाक्यरचना, विभक्ति क्रियापद, विशेषण, संधि, अव्यय वगैरेनी समज पण आ श्लोकना माध्यमथी मणी शके ऐ.

वाक्यमां नामपद अने क्रियापद वच्ये ज संबं ध ऊलो थयो ऐ तेने विभक्तिकहे ऐ. नामपद अने नामपद वच्ये संबं धनी रचनाने पण संबं धक विभक्तिकहे ऐ. आ संबं ध कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबं धक केअधिकरणना रूपमां थाय ऐ.

1. कर्ता विभक्ति सामान्य रीते क्रिया करनारने आ विभक्तिमां मू कवामां आवे ऐ दा.त. शकुन्तला सिञ्चयति। (शकुंतला सींचे ऐ.) आ वाक्यमां सींचवानी क्रिया करनार शकुंतला ऐ
2. शकुन्तला जलेन वृक्षं सिञ्चयति । शकुंतला जण वडे वृक्षने सींचे ऐ. सींचवा माटेनूं साधन करण जण ऐ. ऐटले ते तृतीया-करण विभक्ति ऐ.
3. शकुन्तला कूपस्य जलेन वृक्षं सिञ्चयति। शकुंतला झूवाना पाणीथी वृक्षने सींचे ऐ. कूपस्य झूवाना अहीं झूवा अने पाणीनी वच्ये मालिकीपणानो संबं ध सू चवायो ऐऐटले ते संबं धक विभक्तिमां आवे ऐ. जेने षष्ठी विभक्ति कहेवाय ऐ.

शकुन्तला उद्याने कूपस्य जलेन वृक्षं सिञ्चयति। शकुंतला बगीचामां झूवाना पाणीथी वृक्षने सींचे ऐ. शकुंतला सींचवानी क्रिया क्या स्थणे करे ऐ? उद्यानमां. ऐटले के क्रियानूं अधिकरण उद्यान ऐ जेनो सप्तमी अधिकरण विभक्तिमां प्रयोग थयो ऐ.

अहीं यतु र्थी अने पं यमी विभक्तिनो प्रयोग पण आ प्रमाणे ज समज शकय ऐ. विभक्तिना उपयोग अंगे केटलां क मनभावन सुभाषितो पण याद राभववा जेवां ऐ

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्ति पराक्रमः।

षडेते यत्र विद्यन्ते तत्र देवः सहायकृत्।।

આમ, ઉદ્યમ, સાહસ, ધૈર્ય, બુદ્ધિ, શક્તિ અને પરાક્રમ - આ છ સાહસ હોય ત્યાં દેવો સહાય કરનાર થાય છે. આ શ્લોકમાં ઉદ્યમઃ, પરાક્રમઃ અને દેવઃ એ પુલ્લિંગ, બુદ્ધિઃ અને શક્તિઃ એ સ્ત્રીલિંગ તેમજ સાહસમ્ અને ધૈર્યમ્ એ નપું સકલિંગના પ્રથમ વિભક્તિ એકવચનનાં રૂપો છે.

ગંગા પાપં શશી તાપં દૈન્યં કલ્પતરુસ્તથા।

પાપં તાપં ચ દૈન્યં ચ હન્તિ સાધુસમાગમ।।

ગંગા પાપને, શશી તાપને અને કલ્પતરુ દૈન્યને હણે છે. (જ્યારે) સંતોનો સમાગમ પાપ, તાપ અને દૈન્ય (ત્રણેય)ને હણે છે.

આ શ્લોકમાં ગંગા, શશી, કલ્પતરુઃ સાધુસમાગમઃ એ પ્રથમ વિભક્તિ એકવચનનાં જ્યારે પાપમ્, તાપમ્ અને દૈન્યમ્ એ દ્વિતીયા વિભક્તિ એકવચનનાં રૂપો છે.

અભ્યાસાદ્ધાર્થતે વિદ્યા કુલં શીલેન ધાર્યતે।

ગુણેન જ્ઞાયતે આર્યઃ કોપો નેત્રેણ ગમ્યતે।।

અભ્યાસથી વિદ્યા ધારણ થાય છે. શીલ-ચારિત્ર્ય વડે કૂળને ધારણ કરાય છે. ગુણો વડે આર્ય ઓળખાય છે અને આંખો વડે ક્રોધ જણાઈ આવે છે.

આ સુભાષિતમાં શીલેન, ગુણેન અને નેત્રેણ એ રૂપો ત્રીજી વિભક્તિ એકવચનનાં છે.

દરિદ્રતા ધીરતયા વિરાજતે કુવસ્ત્રતા શુભ્રતયા વિરાજતે।

કદન્નતા ચોષ્ણાતયા વિરાજતે કુરૂપતા શીલતયા વિરાજતે।।

આ સુભાષિતમાં ઘાટા અક્ષરે છાપેલાં પદો તૃતીયા વિભક્તિનાં છે.

મણિના વલયં વલયેન મણિ

મણિના વલયેન વિભાતિ કરઃ।

પયસા કમલં કમલેન પયઃ

પયસા કમલેન વિભાતિ સરઃ।

મણિના, વલયેન, પયસા, કમલેન આ રૂપો ત્રીજી વિભક્તિનાં જોવા મળે છે.

વિદ્યા વિવાદાય ધનં મદાય શક્તિઃ પેરષાઃ પરિપીડતાય।

ખલસ્ય સાધોર્વિપરિતમેતત્ જ્ઞાનાય દાનાય ચ રક્ષણાય।।

દુર્જનની વિદ્યા વિવાદ માટે, ધન અભિમાન માટે અને શક્તિ બીજાને પીડવા માટે હોય છે.

તેનાથી ઊલટું સજ્જનોની (વિદ્યા) જ્ઞાન માટે, (ધન) દાન માટે અને (શક્તિ) રક્ષણ માટે હોય છે.

આ સુભાષિતમાં વિવાદાય, મદાય પરિપીડનાય, જ્ઞાનાય, દાનાય અને રક્ષણાય જેવાં ચતુર્થી વિભક્તિનાં રૂપો જોઈ શકાય છે.

નરસ્યાભરણં રૂપં રૂપસ્યાભરણં ગુણઃ।

ગુણસ્યાભરણં જ્ઞાનં જ્ઞાનસ્યાભરણં ક્ષમા।।

માણસનું આભૂષણ રૂપ છે રૂપનું આભૂષણ ગુણ છે ગુણનું આભૂષણ જ્ઞાન છે અને જ્ઞાનનું આભૂષણ ક્ષમા છે

પ્રસ્તુત સુભાષિતમાં નરસ્ય, રૂપસ્ય, ગુણસ્ય તેમજ જ્ઞાનસ્ય એ ષષ્ઠી વિભક્તિનાં રૂપો છે.

વિવાદે વિષાદે પ્રમાદે પ્રવાસે

જલે ચાનલે પર્વતે શત્રુમધ્યે।

અરણ્યે શરણ્યે સદા માં પ્રપાહિ

ગતિસ્ત્વં ગતિસ્ત્વં ત્વમેકા ભવાની ।।

હે શરણ લેવા યોગ્ય હંમેશાં વિવાદમાં વિષાદમાં, આળસમાં, પ્રવાસમાં જળમાં, અગ્નિમાં, પર્વત ઉપર, શત્રુઓ વચ્ચે અને જંગલમાં મારું રક્ષણ કરોતમે એક જ (મારા માટે) ગતિ છો.

જગદંબાની સ્તુતિમાં બોલાતા આ શ્લોકમાં નવ જેટલાં નામો સપ્તમી વિભક્તિ એકવચનમાં છે.

આમ, વિવિધ નામોનાં વિભક્તિનાં રૂપો યાદ રાખવા માટે રૂપો કંઠસ્થ કરવાનો પરિશ્રમ કરવાની જરૂર નથી. વિવિધ સુભાષિતો, શ્લોકો તેમજ સંભાષણમાં વારંવાર ઉપયોગ કરવાથી તે સહજ રીતે યાદ રહી જાય છે.

યાદ કરીએ:

- સંસ્કૃત ભાષામાં નામ પુલ્લિંગ, સ્ત્રીલિંગ અથવા નપુંસકલિંગમાં હોય છે પ્રત્યેક લિંગમાં નામના અંતિમ વર્ણના ઉચ્ચારણ પ્રમાણે અકારાન્ત, ઉકારાન્ત, ઈકારાન્ત જેવા ભેદ પાડવામાં આવે છે.
- રામ, હરિ, કરી, ભૂ, ભૃત્, ભાનુ, કર્તા, ચન્દ્રમા, તસ્થિવાન, ભગવાન અને આત્મા આ દશ પુલ્લિંગ નામોના નાયક ગણવામાં આવે છે.
- રમા, રુચિ, નદી, ધેનુ, વાગ્, ઘી, સરિત્, ક્ષુત્, પાવૃદ્ અને શરદ્ : આ દશ સ્ત્રીલિંગ નામોના નાયકો ગણાય છે.

- જ્ઞાનમ્, દધિ, પયઃ, વર્મઃ, ધનુઃ, વારિ, જગત્, મધુ, નામ, મનોહારિ : આ દશ નપુંસકલિંગના નાયકો ગણાય છે.

વાક્યરચના

સંસ્કૃત ભાષામાં સાદી વાક્યરચના સમજવા પ્રયત્ન કરીએ :

• સઃ (મૂળ શબ્દતદ્)	પુલ્લિંગ એકવચન
સઃ રામઃ।	તે રામ છે.
સઃ ગણેશઃ।	તે ગણેશ છે.
સઃ બાલકઃ।	તે બાળક છે.
• સામ્ (મૂળ શબ્દતદ્)	સ્ત્રીલિંગ એકવચન
સા સીતા।	તે સીતા છે.
સા રમા।	તે રમા છે.
સા સરસ્વતી	તે સરસ્વતી છે.
સા લેખની	તે કલમ છે.
• તત્ (મૂળ શબ્દતદ્)	નપુંસકલિંગ એકવચન
તત્ વ્યજનમ્।	તે પંખો છે.
તત્ દ્વારમ્।	તે દ્વાર છે.
તત્ ચિત્રમ્।	તે ચિત્ર છે.
તત્ વાતાયનમ્।	તે બારી છે.
• એષઃ (મૂળ શબ્દતદ્)	પુલ્લિંગ એકવચન
એષઃ રામઃ।	આ રામ છે.
એષઃ ગણેશઃ।	આ ગણેશ છે.
એષઃ બાલકઃ।	આ બાળક છે.

આ સર્વનામનાં બહુવચનનાં રૂપો નીચે પ્રમાણે થાય છે :

• તે (મૂળ શબ્દતદ્)	પુલ્લિંગ બહુવચન
તે યુવકાઃ।	તે યુવકો છે. (બેથી વધારે)
તે બાલકાઃ।	તે બાળકો છે. (બેથી વધારે)
તે છાત્રાઃ।	તે વિદ્યાર્થીઓ છે. (બેથી વધારે)
• તાઃ (મૂળ શબ્દતદ્)	સ્ત્રીલિંગ બહુવચન
તાઃ બાલાઃ।	તે બાલિકાઓ છે. (બેથી વધારે)
તાઃ ભગિન્યઃ।	તે બહેનો છે.
તાઃ અન્ગલ્યઃ।	તે આંગળીઓ છે.
• તાનિઃ (મૂળ શબ્દતદ્)	નપુંસકલિંગ બહુવચન
તાનિ વ્યજનાનિ।	તે પંખાઓ છે. (બેથી વધારે)
તાનિ દ્વારાણિ।	તે દરવાજા છે.

	તાનિ વાતાયનાનિ।	તે બારીઓ છે.
•	એતે ભૂ ળ શબ્દ એતદ્ એતે યુવકાઃ। એતે દેવાઃ। એતે બાલકાઃ	પુલિંગ બહુવચન આ યુવકો છે. આ દેવો છે. આ બાળકો છે.
•	એતાઃ ભૂ ળ શબ્દ એતદ્ એતા ભગિન્યઃ એતાઃ અઙ્ગલ્યઃ। એતાઃ નાર્યઃ।	સ્ત્રીલિંગ બહુવચન આ બહેનો છે. આ આંગળીઓ છે. આ સ્ત્રીઓ છે.
•	એતાનિ ભૂ ળ શબ્દ એતદ્ એતાનિ વ્યજનાનિ। એતાનિ દ્વારાણિ એતાનિ ચિત્રાણિ	નપું સકલિંગ બહુવચન આ પંખાઓ છે. આ દરવાજા છે. આ ચિત્રો છે.

સ્વ-અધ્યયન

1.	કૌંસમાં આપેલા શબ્દો પૈકી ઉચિત શબ્દ વડે ખાલી જગ્યા પૂરો:	
	૧। સા છાત્રા। નામ ડમાઃ। ૨। અહં શિક્ષકઃ। નામ પરેશઃ। ૩। સુરેખા। ૪। મમ નામ સૌમ્ય। નામ સેતુ। ૫। ભવાની, મામ્ રક્ષતુ।	(તસ્ય, તસ્યાઃ, મમ) (મમ, તસ્ય, કસ્ય) (ભવાન્, ભવતિ, તાઃ) (ભવાન્, સઃ, ભવતઃ) અનલમ્, અંનલ, અનલે)
2.	અહીં આપેલાં વાક્યોમાં ક્ષતિ હોય તો સુધારીને ફરી લખો:	
	1. ગન્ત્રી અચ્છતિ। ગન્ત્રી ગચ્છતિ। 2. અહં વાણી। અહં હસતિ। 3. અહં લિખામિ। સચિનઃ લિખામિ। 4. રામં તસ્મૈ નમઃ। 5. ક્ષમા જલં વૃક્ષં સિજ્વયતિ। 6. સ્મૃતિ ડઘાનાય અસ્તિ।	
3.	નીચેનાં વાક્યો સંસ્કૃતમાં અનુદિત કરો:	
	1. તે મોહન છે. 2. આ સરલા છે. 3. પેલાં બાળકો છે. 4. તે યુવકો છે 5. તે પંખો છે.	

અવ્યય અને અન્ય શબ્દો

સંસ્કૃત ભાષામાં કેટલાક શબ્દો કોઈ પણ વાક્યરચનામાં કોઈ જાતનો ફેરફાર થયા સિવાય એકના એક રૂપે જ વપરાતા હોય છે. તેમને ‘અવ્યય’ તરીકે ઓળખવામાં આવે છે. વ્યાકરણ પરંપરામાં અવ્યય માટે આ શ્લોક પ્રચલિત છે.

સદ્દશં ત્રિષુ લિંગષુ સર્વાસુ ચ વિભક્તિષુ।

વચનેષુ ચ સર્વેષુ યન્ન વ્યેતિ તદવ્યયમ્।

ત્રણેય લિંગમાં તમામ વિભક્તિમાં અને ત્રણેય વચનમાં જે સમાન રીતે પ્રયોજાય છે તે અવ્યય કહેવાય છે.

ધોરણ 6થી 8ના સંસ્કૃતના પાઠ્યપુસ્તકમાં સમાવિષ્ટ થયેલા અવ્યયો અને તેના વ્યાવહારિક ઉપયોગને જોઈએ.

આમ, ન, અત્ર, તત્ર, કુત્ર, અન્યત્ર, એકત્ર, સર્વત્ર, અપિ, ચ, અતઃ, યતઃ, સહ, વિના, અગ્રે, પૃષ્ઠે, ઉચ્ચૈ, નીચૈ, મન્દમ્, શીઘ્રમ, વક્રમ, સરલમ્, પ્રતિદિનમ્, અન્તરમ્, ચ, ઇતિ, એવ, યથા, તથા, યદિ વગેરે.

નમઃ, સ્વાહા, સ્વધા, અલમ્, વિના વગેરે પણ અવ્યયો છે અને તેના ઉપયોગ પણ રસપ્રદ છે.

ઉદાહરણો :

- | | |
|-----------------------------------|-----------------------------------|
| ૧. લેખની અત્ર અસ્તિ। | : કલમ અહીં છે. |
| ૨. પુસ્તકં તત્ર અસ્તિ। | : પુસ્તક ત્યાં છે. |
| ૩. ઇશ્વરઃ સર્વત્રઃ અસ્તિ। | : ઇશ્વર દરેક જગ્યાએ છે. |
| ૪. આચાર્યઃ અન્યત્ર અસ્તિ। | : આચાર્ય બીજે ક્યાંક છે. |
| ૫. મિત્રં કુત્ર અસ્તિ। | : મિત્ર ક્યાં છે? |
| ૬. બાલઃ એકત્ર સન્તિ। | : બાળકો એકત્ર (એક બાજુ) છે. |
| ૭. રામેણ સહ ગચ્છતુ। | : રામની સાથે જાવ. |
| ૮. મિત્રેણ વિના ન રોચતે। | : મિત્ર વિના ગમતું નથી |
| ૯. મમ અગ્રે છાત્રાઃ સન્તિ। | : મારી આગળ વિદ્યાર્થીઓ છે. |
| ૧૦. મમ પૃષ્ઠે બાલઃ અસ્તિ। | : મારી પાછળ બાળક છે. |
| ૧૧. વ્યાઘ્રઃ ઉચ્ચૈઃ ગર્જતિ। | : વાઘ મોટેથી ગર્જે છે |
| ૧૨. માલા નીચૈઃ વદતિ। | : માલા નીચા અવાજે બોલે છે. |
| ૧૩. ગજઃ મન્દં મન્દં ચલતિ। | : હાથી ધીમે ધીમે ચાલે છે. |
| ૧૪. શશકઃ શીઘ્રં ધાવતિ। | : સસલું ઝડપથી દોડે છે. |
| ૧૫. અહં પ્રતિદિનં શાલાં ગચ્છામિ। | : હું દરરોજ શાળામાં જાઉં છું |
| ૧૬. ભોજન અનન્તરેં અહં શયનં કરોમિ। | : ભોજન કર્યા પછી હું સૂઈ જાઉં છું |

ઉપરોક્ત ઉદાહરણોથી અવ્યયના ઉપયોગ અંગે જાણકારી મળી હશે. કેટલીક જગ્યાએ ખાસ કરીને પદ્યરચનાઓમાં અવ્યયનો ઉપયોગ છંદ મેળવવા થાય છે. પણ તેનો અર્થ લેવામાં આવતો નથી.

દા.ત. ન હિ ન હિ તત્ર ધનાશાઃ। ત્યાં ધનની આશા નથી.

આ વાક્યમાં હિ અવ્યય છે, તેનો અર્થ લીધો નથી.

અપિ એવો અવ્યય છે. જે વાક્યની શરૂઆતમાં વપરાય ત્યારે વાક્યરચનાને પ્રશ્નવાક્ય બનાવે છે. જ્યારે વચ્ચે વપરાય ત્યારે 'વળી પણ' જેવો અર્થ થાય છે.

દા.ત. અહમ્ અપિ આગચ્છામિ। હું પણ આવું છું

અપિ ભવાન્ આગચ્છતિ ? શું તમે આવો છો ?

સંખ્યા :

ધોરણ 6માં 1 થી 12 અને ત્યારબાદ ધોરણ 7માં 50 અને ધોરણ 8માં 100 સુધીનું સંખ્યાજ્ઞાન બાળકોને આપવાનું થાય છે. અલબત્ત શિક્ષકોને તેનાથી વધારે સંખ્યાઓનું જ્ઞાન મેળવવું અનિવાર્ય છે.

1થી 4 સુધીની સંખ્યાઓનો જ્યારે વ્યવહારભાષામાં ઉપયોગ કરવાનો હોય ત્યારે વિભક્તિ અનુસાર તેનાં રૂપોનો ઉપયોગ કરવાનો રહે છે જેમકે : એકઃ બાલઃ અસ્તિ। એક બાળક છે પણ એકા બાલિકા અસ્તિ એકમ્ પુસ્તકમ્ અસ્તિ। એક બાલિકા છે, એક પુસ્તક છે. અહીં એકમ્ શબ્દ એકઃ , એકા અને એકમ્ એમ ત્રણ પ્રકારનાં રૂપો જોવા મળ્યા છે. ચારે સંખ્યાનાં પ્રથમા વિભક્તિનાં રૂપો આ પ્રમાણે થશે.

પુલ્લિંગ	સ્ત્રીલિંગ	નપું સકલિંગ
૧. એકઃ	એકા	એકમ્
૨. દ્વૌ	દ્વે	દ્વે
૩. ત્રયઃ	તિસ્રઃ	ત્રીણિ
૪. ચત્વારઃ	ચતસ્રઃ	ચત્વારિ

વાક્યપ્રયોગ :

પુલ્લિંગ	સ્ત્રીલિંગ	નપું સકલિંગ
એકઃ બાલકઃ।	એકા બાલિકા।	એકમ્ પુસ્તકમ્।
દ્વૌ બાલૌ।	દ્વે બાલિકે।	દ્વે ફલે।
ત્રયઃ બાલાઃ।	તિસ્રઃ બાલિકાઃ।	ત્રીણિ પુસ્તકાનિ।
ચત્વારઃ બાલાઃ।	ચતસ્રઃ બાલિકાઃ।	ચત્વારિ પુસ્તકાનિ।

આજ્ઞાર્થ :

સામેની વ્યક્તિને વિનંતી કરવા અથવા આજ્ઞા આપવા માટે આજ્ઞાર્થનો ઉપયોગ થાય છે. વર્ગખંડમાં વિદ્યાર્થીઓને વ્યક્તિગત કે સમૂહમાં સૂચના આપવા માટે પણ આજ્ઞાર્થનો જ ઉપયોગ કરવો પડે છે. વ્યવહારમાં આજ્ઞાર્થનાં રૂપોનો ઉપયોગ જરૂરી છે. વર્તમાનકાળ, ભૂતકાળ અને ભવિષ્યકાળની જેમ આજ્ઞાર્થનાં પણ ત્રણેય પુરુષ અને ત્રણેય વચનમાં રૂપો બને છે અલબત્ત આપણા અભ્યાસક્રમને અનુલક્ષીને ત્રીજો પુરુષ એકવચન તેમજ બહુવચનને શીખી લેવાથી પાઠ્યપુસ્ત્ર તેમજ વર્ગવ્યવહાર બંનેમાં ઉપયોગ કરી શકાશે

વર્ગખંડમાં આપણો પાઠ વંચો, પ્રશ્નનો જવાબ આપો. હું ગીત ગાઉં છું, બધા તે દોહરાવે... જેવાં વાક્યોનો ઉપયોગ કરીએ છીએ એ વાક્યો સંસ્કૃતમાં બોલવા આજ્ઞાર્થની જરૂર પડે છે

જેમકે :

પુસ્તક ઉઘાડો : પુસ્તકમ્ ઉદ્ઘાટયતુ।

પાઠ વાંચો : પાઠં પઠતુ।

સમૂહમાં સૂચના આપવા માટે

બધા પાઠ વાંચો : સર્વે પાઠં પઠન્તુ।

સ્વાધ્યાય લખો. : સર્વે સ્વાધ્યાયં લિખન્તુ।

અભિનય સાથે બોલો : અભિનયેન સહ વદન્તુ।

બધા ઊભા થવા. : સર્વે ઉત્તિષ્ઠન્તુ।

આ વાક્યોમાં ઉદ્ઘાટયતુ, પઠતુ વગેરે આજ્ઞાર્થ ત્રીજો પુરુષ એકવચનનાં રૂપો છે. જ્યારે પઠન્તુ, લિખન્તુ, વદન્તુ, ઉત્તિષ્ઠન્તુ વગેરે આજ્ઞાર્થ ત્રીજો પુરુષ બહુવચનનાં રૂપો છે

પરસ્મૈપદી ધાતુઓમાં આજ્ઞાર્થ ત્રીજો પુરુષ એકવચનમાં 'તુ' પ્રત્યય લાગે છે. કોઈ એક વ્યક્તિને વિનંતી કરવા કે આજ્ઞા આપવા તેનો ઉપયોગ થાય છે. જ્યારે બેથી વધારે વ્યક્તિઓને સૂચના આપવા વિનંતી કરવા કે આજ્ઞા આપવા માટે 'અન્તુ' પ્રત્યય લાગે છે.

મૂળ ધાતુ	એકવચન	બહુવચન
ભવ	ભવતુ થાવ	ભવન્તુ થાવ
કૃ	કરોતુ કરો	કુર્વન્તુ કરો
ષઠ	પઠતુ વાંચો	પઠન્તુ વાંચો
સ્વી + કૃ	સ્વીકરોતુ સ્વીકારો	સ્વીકુર્વન્તુ સ્વીકારો
ડા	દદાતુ આપો	દદતુ આપો
વદ્	વદતુ બોલો	વદન્તુ બોલો
લિખ્	લિખતુ લખો	લિખન્તુ લખો

આ પ્રમાણે રૂપો બનાવી તેનો ઉપયોગ કરો.

સમય નિર્દેશ :

આજે ઘટીયંત્રનો ઉપયોગ સામાન્ય થઈ ગયો છે. માનવજીવન ઘડિયાળના કાંટે ચાલવા લાગ્યું છે. એટલે ભાષાના વ્યાવહારિક ઉપયોગમાં સમયનું જ્ઞાન અનિવાર્ય બન્યું છે.

નીચેનાં વાક્યો વાંચો :

ક: સમય: ? શું સમય થયો છે ? (કેટલા વાગ્યા છે?)

एकवादनम् એક વાગ્યો છે.

એ પ્રમાણે : દ્વિવાદનમ્, ત્રિવાદનમ્, ચતુર્વાદનમ્ પંચવાદનમ્, ષડ્વાદનમ્, સપ્તવાદનમ્, અષ્ટવાદનમ્, નવવાદનમ્, દશવાદનમ્, એકાદશવાદનમ્, અથવા દ્વાદશવાદનમ્.

भवान् कदा उत्तिष्ठति ? : તમે ક્યારે ઊઠો છો?

अहं सप्तवादने उत्तिष्ठामि। : હું સવારે સાત વાગ્યે ઊઠું છું.

અહીં ધ્યાનમાં આવ્યું હશે કે ;

एकवादनम् એટલે એક વાગ્યો છે. પરંતુ एकवादने એટલે 'એક વાગ્યે' 'કદા' પ્રશ્નવાચક શબ્દ વડે પ્રશ્ન પૂછવામાં આવે ત્યજે આ પ્રમાણે જવાબ આપવામાં આવે છે.

(1) भवान् अथवा भवती कदा पाठशालां गच्छति ?

अहं एकादशवादने पाठशालां गच्छामि।

(2) भवती कदा भोजनं करोति ?

अहं दशवादने भोजनं करोमि।

આ ઉપરાંત 15 મિનિટ એટલે કે પા કલાક માટે 'સપાદ' શબ્દોને સમય સાથે જોડવામાં આવે છે.

જેમકે :

2:15 વાગ્યા માટે સપાદદ્વિવાદનમ્

5:15 વાગ્યા માટે સપાદપચ્ચવાદનમ્

30 મિનિટના સમય માટે સાર્ધનો ઉપયોગ થાય છે.

જેમકે :

6:30 વાગ્યા માટે સાર્ધષડ્વાદનમ્

10:30 વાગ્યા માટે સાર્ધદશવાદનમ્

જ્યારે કોઈ પૂર્ણાંકમાં 15 મિનિટ બાકી હોય ત્યારે 5:45 (છ વાગ્યામાં પા કલાક ઓછો) માટે પાદોનષડ્વાદનમ્

6:45 (સાત વાગ્યામાં પા કલાક ઓછો) માટે પાદોનસપ્તવાદનમ્

6:50 (સાત વાગ્યામાં દસ મિનિટ ઓછી) માટે દ્શોનસપ્તવાદનમ્

6:55 (સાત વાગ્યામાં પા કલાક ઓછો) માટે પન્ચોનસપ્તવાદનમ્

7.05 (સાત અને પાંચ મિનિટ) માટે પન્ચાધિકસપ્તવાદનમ્

આ પ્રમાણે વિવિધ સમયની ઓળખ અને એનો અભ્યાસ થાય છે.

કૃદન્ત :

ધોરણ 6 થી 8ના અભ્યાસક્રમમાં કૃદન્તોનો અભ્યાસ અપેક્ષિત નથી. પણ વ્યવહારભાષામાં કેટલાંક કૃદન્તોનો અભ્યાસ કરવામાં આવે તે જરૂરી છે. સામાન્ય રીતે આ કૃદન્તો વિશેષણ તરીકે આવે છે, તેઓ ક્રિયાનો પૂર્ણ અર્થ દર્શાવતા નથી. સંસ્કૃત ભાષામાં વર્તમાનનો અર્થ બતાવવા વર્તમાન કૃદન્ત, ભવિષ્યનો અર્થ બતાવવા ભવિષ્ય કૃદન્ત, ભૂતકાળનો અર્થ બતાવવા ભૂતકૃદન્ત જેવાં કૃદન્તરૂપોનો ઉપયોગ થાય છે.

સંબંધક ભૂતકૃદન્ત:

જ્યારે કોઈ એક વાક્યમાં બે ક્રિયાઓ દર્શાવવામાં આવે અને એક ક્રિયા પૂરી થઈ હોય ત્યાર બાદ બીજી ક્રિયા થતી હોય ત્યારે પહેલી ક્રિયાને સંબંધક ભૂતકૃદન્તમાં મૂકવામાં આવે છે

જેમકે:

સઃ શાલં ગત્વા અભ્યાસં કરોતિ। તે શાળામાં જઈને અભ્યાસ કરે છે. અહીં ગત્વા એટલે જઈને એ સંબંધક ભૂતકૃદન્તનું રૂપ છે

કૃષ્ણઃ જલં પીત્વા આગચ્છતિઃ કૃષ્ણ પાણી પીને આવે છે.

પીત્વા : પીને એ સંબંધક ભૂતકૃદન્ત છે

વૃતાન્તઃ ગીતં શ્રુત્વા આનન્દં અનુભવતિ। વૃતાન્ત ગીત સાંભળીને આનંદ અનુભવે છે

સંબંધક ભૂતકૃદન્તનું રૂપ બનાવવા માટે 'ત્વા', 'ત્ય' અથવા 'ય' પ્રત્યયનો ઉપયોગ થાય છે.

હેત્વર્થ કૃદન્ત:

જ્યારે કોઈ હેતુ દર્શાવવાનો હોય ત્યારે હેત્વર્થ કૃદન્તનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે જેમકે :

સા પત્રં લિખિતુમ્ ઇચ્છતિ। તે પત્ર લખવા ઇચ્છે છે.

અહીં લિખિતુમ્ લખવા માટે હેત્વર્થ કૃદન્ત છે.

વરુણઃ દાનં દાતુમ્ ઇચ્છતિ। વરુણ દાન આપવા ઇચ્છે છે.

હેત્વર્થ કૃદન્ત : દાતુમ્

અહં કારણં શ્રીતુમ્ ઇચ્છામિ।

હું કારણ સાંભળવા ઇચ્છું છું.

અહં શિક્ષકં ભવિતુમ્ ઇચ્છામિ।

હું શિક્ષક બનવા ઇચ્છું છું.

હવે, આ સુભાષિતોનો અભ્યાસ કરો:

उपकर्तुं प्रियं वक्तुं कर्तुं स्नेहमकृत्रिमम्।

सज्जनानां स्वभावोऽयं केनेन्द्रः शिशिरीकृतः

ઉપકાર કરવા માટેનો, પ્રિય બોલવા માટેનો, કુદરતી સ્નેહ કરવા માટેનો સજ્જનોનો (સહજ) સ્વભાવ છે. ચંદ્રને કોના વડે શીતળ બનાવાયો છે ? (શીતળતાના ચંદ્રનો સહજ સ્વભાવ છે.)

આ સુભાષિતમાં કર્તુમ્, વર્તુમ્, ઉપકર્તુમ્ એ હેત્વર્થ કૃદન્તનાં ઉદાહરણો છે

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा व भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः।

न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः ।।

જે નર સાંભળીને, સ્પર્શીને, જોઈને, ભોગવીને, સૂંધીને આનંદિત થતો નથી કે ખિન્ન થતો નથી તેને જિતેન્દ્રિય જાણવો જોઈએ.

આ સુભાષિતમાં વપરાયેલા શ્રુત્વા, સ્પૃષ્ટ્વા, દૃષ્ટ્વા, ભુક્ત્વા, ઘ્રાત્વા સંબંધક ભૂતકૃદન્તનાં ઉદાહરણો છે.

સંબંધક ભૂતકૃદન્ત અને હેત્વર્થ કૃદન્તનો અભ્યાસ કર્યા બાદ આ વાક્યો વાંચો :

- (1) दीनजनाय वित्तम् देयम्। ગરીબોને ધન આપવું જોઈએ
- (2) स राजा दर्शनीय अस्ति। તે રાજા દર્શન કરવા યોગ્ય છે.
- (3) पञ्चभिः जनैः सह गन्तव्यम्। પાંચ લોકો સાથે જવું જોઈએ

આ વાક્યોમાં આપવું જોઈએ દેયમ્, દર્શન કરવા યોગ્ય દર્શનીય, જવું જોઈએ ગન્તવ્યમ્ જેવાં રૂપો વપરાયાં છે. જેને વિધ્યર્થ કૃદન્ત કહેવામાં આવે છે

આમ સંસ્કૃત ભાષામાં ઉપયોગમાં લેવાતાં કૃદન્તોમહત્ત્વનાં છે. એ પૈકી સરળ સંભાષણ માટે ઉપયોગી કૃદન્તો આપણે જોયાં.

કેટલાંક વિશેષ રૂપો

ભાષામાં વપરાતા કેટલાક સામાન્ય શબ્દો-ધાતુ રૂપોનો અભ્યાસ અનિવાર્ય છે. જેની જાણકારીથી પાઠ્યક્રમ અને સંભાષણ બંનેમાં મદદ મળશે

सः युवकः अस्ति। : તે યુવક છે.

सा महिला अस्ति। : તે સ્ત્રી છે.

આ વાક્યોમાં અસ્તિ રૂપનો ઉપયોગ જુઓ. આમ તો અસ્ ધાતુનું વર્તમાનકાળ ત્રીજો પુરુષ એકવચનનું રૂપ છે પણ તેવી પિંજણ કર્યા સિવાય તેનો ઉપયોગ થાય તેવાં વાક્યો બનાવો અને બોલો. અસ્તિ, નાસ્તિ, સન્તિ, અને ન સન્તિ નો બહોળો ઉપયોગ સંભાષણમાં થાય છે

જેમ કે

લેખની અસ્તિ।	:	કલમ છે.
ફલમ્ નાસ્તિ।	:	ફળ નથી.
બાલકાઃ સન્તિ।	:	બાળકો છે. (બહુવચન)
યુવકાઃ ન સન્તિ।	:	યુવકો નથી
કઃ અસ્તિ ?	:	કોણ છે? (પુલ્લિંગ)
કાઃ અસ્તિ ?	:	કોણ છે? (સ્ત્રીલિંગ)
કિમ્ અસ્તિ?	:	શું છે? (નપું સકલિંગ)
કે અસ્તિ?	:	કોણ છે? (પુલ્લિંગ બહુવચન)
કાઃ સન્તિ?	:	કોણ છે? (સ્ત્રીલિંગ બહુવચન)
વાતાયનાનિ સન્તિ।	:	બારીઓ છે. (નપું સકલિંગ બહુવચન)

વિશેષણનો ઉપયોગ

નામના અર્થમાં વધારો કરે, તેના ગુણ કે લક્ષણને અભિવ્યક્ત કરે તેને વિશેષણ કહેવાય છે. ગુજરાતી ભાષામાં વાક્યરચનામાં મુખ્યનામોને જ વિભક્તિ પ્રત્યય લાગે છે, વિશેષણોને સામાન્ય રીતે વિભક્તિ પ્રત્યયો લાગેલા હોતા નથી. દા.ત. ઊંચો છોકરો તેમજ ઊંચા છોકરાથી. અહીં છોકરાથી એમ ત્રીજી વિભક્તિનો ઉપયોગ થયો, પણ 'ઊંચાથી છોકરાથી' એ પ્રમાણે પ્રયોગ થતો નથી. જ્યારે સંસ્કૃત ભાષામાં જે લિંગ-વચન-વિભક્તિ હોય તે જ લિંગ-વચન-વિભક્તિ વિશેષણનાં હોવાં જરૂરી છે

આ વાક્યો વાંચો :

भीतः मूषकः ऋषिसमीपं गच्छति। ડરેલો ઉંદર ઋષિની પાસે જાય છે. આ વાક્યમાં भीतः એ મૂષકઃ નું વિશેષણ છે.

कुपिता माता नरेन्द्रं प्रकोष्ठे स्थापयति। કોપિત માતા નરેન્દ્રને ઓરડામાં પૂરે છે નોંધો: કુપિતા માતા।

હવે આ વાક્યો વાંચો :

भीतः मूषकः ऋषीसमीपं गच्छति।

भीता कन्या ऋषिसमीपं गच्छति।

भीतः मूषकः पण भीता कन्या।।।

कुपितः राज्ञः सेवकं आदिशति। કોપિત રાજા સેવકને આદેશ આપે છે.

कुपिता माता वदति। કોપિત (થયેલી) માતા બોલે છે.

पुस्तके स्थितं ज्ञानं वृथा। પુસ્તકમાં રહેલું જ્ઞાન નકામું છે

અહીં જ્ઞાનમ્ નું વિશેષણ સ્થિતમ્ છે.

પ્રાસાદે સ્થિતાઃ રાજનઃ વદતિ। મહેલમાં રહેલા રાજા કહે છે.

સ્થિતમ્, સ્થિતઃ અને સ્થિતા વચ્ચે ભેદ સમજો.

વિભક્તિના વિશિષ્ટ પ્રયોગો

કેટલાંક ક્રિયાપદો તેમજ અવ્યયો સાથે નિશ્ચિત વિભક્તિ વપરાય છે.

(1) ‘અર્હ’ (અર્હતિ)ની સાથે પ્રથમા વિભક્તિનો પ્રયોગ થાય છે. અર્હ એટલે યોગ્ય હોવું, લાયક હોવું. જે યોગ્ય અથવા લાયક હોય તેની પ્રથમા વિભક્તિ આવે.

ઉદાહરણ :

રામઃ પૂજામ્ અર્હતિ। રામ પૂજાને યોગ્ય છે.

(2) ગમ્ : (ગમ્) (ગમ્) : જવું, જ્યાં જવાનું હોય તેની દ્વિતીયા વિભક્તિ આવે. દા.ત. રામઃ વનં ગમ્હતિ। રામ વનમાં જાય છે તે સ્થળ વન હોવાથી તેની દ્વિતીયા વનમ્ થયું.

(3) સહ ના અર્થમાં જેની સાથે રહેવા-હોવાનું હોય તેની તૃતીયા વિભક્તિ આવે.

દા.ત. રામેણ સહ સીતા વનં ગમ્હતિ। રામની સાથે સીતા વનમાં જાય છે. રામેણ ત્રીજી વિભક્તિમાં છે.

દિવ્ : જુગાર ખેલવો, એ અર્થમાં જેના વડે જુગાર ખેલવામાં આવે તે પાસાં(અક્ષ)ની દ્વિતીયા અથવા તૃતીયા વિભક્તિ થાય છે. સઃ અક્ષૈઃ દીવ્યતિ। અથવા સઃ અક્ષાન્ દીવ્યતિ। તે પાસાંથી જુગાર રમે છે.

(4) દા આપવું, ધાતુના પ્રયોગમાં જેને આપવાનું હોય તે વ્યક્તિને ચતુર્થી વિભક્તિમાં આવે છે.

ઉદાહરણ :

માતા પુત્રાય ભોજનં દદાતિ। માતા પુત્રને ભોજન આપે છે.

કુપ્ : કોપ કરવો તેમજ આ અર્થવાળા ધાતુઓમાં જેના પ્રત્યે કોપ કરવાનો હોય તેની ચતુર્થી વિભક્તિ થાય છે.

ઉદાહરણ :

રામઃ રાવણાય કુપ્યતિ। રામ રાવણ પર કોપે છે. કથ્ (કથયતિ) ધાતુમાં જેને કહેવાનું હોય તેની ચતુર્થી વિભક્તિ થાય છે. ઉદાહરણ : પિતામહઃ દુષ્યન્તાય કથાં કથયતિ। દાદા દુષ્યન્તને કથા કહે છે.

‘સ્પૃહ’ (સ્પૃહયતિ) ધાતુના પ્રયોગમાં જેના પ્રત્યે સ્પૃહ કરવાની હોય તેની ચતુર્થી વિભક્તિ લાગે છે.

ઉદાહરણ :

શકુન્તલા મૃગાય સ્પૃહયતિ। શકુંતલા મૃગલાની સ્પૃહ કરે છે.

(5) ‘ત્રસ્’ અને ‘ભી’ ધાતુના પ્રયોગમાં જેનાથી ત્રાસ કે ભય પામવાનો હોય તે પદાર્થની કે વ્યક્તિની પંચમી વિભક્તિ થાય છે.

ઉદાહરણ :

પાદપાનાં ભયં વાતાત્। વૃક્ષોને પવનનો ભય (હોય છે.)

(6) નમઃ અવ્યય તરીકે વપરાયેલ હોય ત્યારે જેને નમન કરવાનું હોય તેની ચતુર્થી વિભક્તિથાય છે.

ગણેશાય નમઃ। રામાય નમઃ। સરસ્વત્યૈ નમઃ। દેવાય નમઃ। દેવ્યૈઃ નમઃ। ગુરવે નમઃ।

વિકલ્પ

વિભક્તિના ઉપયોગમાં ક્યારેક કઠિનતા લાગે ત્યારે તેના વિકલ્પમાં થતા પ્રયોગોનો ઉપયોગ થઈ શકે છે. સંભાષણમાં આ પ્રયોગોથી સરળતા રહે છે

(1) અહં હસ્તેન લિખામિ। હું હાથ વડે લખું છું

અહીં હસ્તેન તૃતિયા વિભક્તિના વિકલ્પે 'હસ્ત દ્વારા' બોલી શકાય. જેમકે અહં હસ્ત દ્વારા લિખામિ।

ઉદાહરણો :

ગજઃ શુણ્ડયા જલં પિબતિ। ગજઃ શૂણ્ડ દ્વારા જલં પિબતિ

અહં મનસા સ્મરામિ। અહં મન દ્વારા સ્મરામિ.

(૨) અર્જુન હસ્તિનાપુરાત્ દ્વારિકાં ગચ્છતિ। અહીં હસ્તિનાપુરની પંચમી વિભક્તિ થઈ છે. ઝાડ પરથી પાન પડે છે. વૃક્ષાત્ પર્ણ પતતિ। આ વાક્યમાં વૃક્ષની પંચમી વિભક્તિ થઈ છે. અહીં પંચમી વિભક્તિના વિકલ્પે તઃ પ્રત્યયનો ઉપયોગ થઈ શકે છે. જેમકે :

અર્જુનઃ હસ્તિનાપુરતઃ દ્વારિકાં ગચ્છતિ

વૃક્ષતઃ પર્ણ પતતિ।

'તઃ' પ્રત્યય સમયના નિર્દેશમાં પણ ઉપયોગી થાય છે.

અહં દશવાદનતઃ પચ્ચવાદપર્યંતં કાર્યાલયે કાર્યં કરોમિ।

હું દસ વાગ્યાથી પાંચ વાગ્યા સુધી કાર્યાલયમાં કામ કરું છું

સપ્તવાદનતઃ અષ્ટવાદનપર્યંતં અભ્યાસં કરોમિ।

સાત વાગ્યાથી આઠ વાગ્યા સુધી અભ્યાસ કરું છું.

વિચારો અને સમજો :

સંસ્કૃતનાં કેટલાંક ધાતુઓનાં વિવિધ રૂપો ધ્યાનમાં રાખો

વર્તમાનકાળ	આજ્ઞાર્થ	સંબંધક ભૂતકૃદન્ત	હેત્વર્થ કૃદન્ત
ગચ્છતિ	ગચ્છતુ	ગત્વા	ગન્તુમ્
પઠતિ	પઠતુ	પઠિત્વા	પઠિતુમ્
પતતિ	પતતુ	પતિત્વા	પતિતુમ્
ક્રીડતિ	ક્રીડતુ	ક્રીડિત્વા	ક્રીડિતુમ્
વદતિ	વદતુ	ઉક્તવા	વક્તુમ્
પિબતિ	પિબતુ	પીત્વા	પાતુમ્
લિખતિ	લિખતુ	લિખિત્વા	લેખિતુમ્
નયતિ	નયતુ	નીત્વા	નેતુમ્

પશ્યતિ	પશ્યતુ	દૃષ્ટ્વા	દ્રષ્ટુમ્
પૃચ્છતિ	પૃચ્છતુ	પૃષ્ટ્વા	પ્રષ્ટુમ્
કરોતિ	કરોતુ	કૃત્વા	કર્તુમ્
દદાતિ	દદાતુ	દત્વા	દાતુમ્
ઉત્તિષ્ઠતિ	ઉત્તિષ્ઠતુ	ઉત્થાય	ઉત્થાતુમ્
સ્મરતિ	સ્મરતુ	સ્મૃત્વા	સ્મર્તુમ્

(પ્રસ્તુત રૂપોમાં વર્તમાનકાળ અને આજ્ઞાર્થના રૂપો ત્રીજા પુરુષએકવચનનાં છે.)

સ્વ-અધ્યયન

પ્રશ્ન: 1 નીચેના કોષ્ટકના આધારે વાક્યરચના કરો :

રામ:	ગૃહમ્	ગચ્છતિ
રાધા	વિદ્યાલય:	પશ્યતિ
મયૂર:	પ્રશ્ન:	પૃચ્છતિ
સુધા	ખગ:	
	ચિત્રમ્	
	નદી	
	શાળાં	

(નોંધ : કોષ્ટકના બીજા ભાગમાં આવેલ નામોની દ્વિતીયા વિભક્તિ છે.)

પ્રશ્ન: 2 નીચેના કોષ્ટકના આધારે વાક્યરચના કરો.

રામ:	ભરત:	સહ	ગચ્છતિ
લક્ષ્મણ:	સીતા		
સુરેશ:	કૃષ્ણ:		
રાકેશ:	માલા		
સીતા	બાલક:		
રાધા	બાલિકા		

(નોંધ : કોષ્ટકના બીજાભાગમાં આવેલ નામોની તૃતીય વિભક્તિથશે.)

પ્રશ્ન: 3 નીચેના કોષ્ટકના આધારે વાક્યરચના કરો.

મોહન:	કેયૂર:	પુસ્તકમ્	દદાતિ
લતા	રામ:	ચિત્રમ્	
સુરેશ:	ગણેશ:	સુધાખણ	
રાધા	બાલક:	ડ:	
		લેખની	
		પત્રમ્	

(નોંધ : કોષ્ટકના બીજા ભાગમાં આવેલ નામોની ચતુર્થી વિભક્તિતેમજ ત્રીજા ભાગમાં આવેલ નામોની દ્વિતીયા વિભક્તિ થશે.)

પ્રશ્ન: 4 નીચેના કોષ્ટકના આધારે વાક્યરચના કરો :

રામ:	તાત:	લય:।
રાવણ:		મેઘનાદ:।

શક્કર:	પતિ:	ગણેશ:।
સીતા		રામ: ।
પાર્વતી		શક્કર:।
દ્રૌપદી		અર્જુન:।

(નોંધ: કોષ્ટકના પહેલા ભાગમાં આવેલાં નામો ષષ્ઠીવિભક્તિ થશે.)

પ્રશ્ન: 5 કૌંસમાં આપેલ વિકલ્પો પૈકી યોગ્ય વિકલ્પ વડે ખાલી જગ્યા પૂ રો:

- (૧) _____ નમ:। (ગુરુવે, ગુરુમ્, ગુરુ)
 (૨) _____ નામ સુરેશ:। (સઃ, તસ્ય, એષઃ)
 (૩) _____ નામ રાધા। (સા, એષા, તસ્યાઃ)
 (૪) તત્ _____ અસ્તિ। (લેખની, વ્યજનમ્, આસન્દઃ)
 (૫) એષઃ _____ બાલકઃ (દક્ષમ્, દક્ષઃ, દક્ષા) અસ્તિ।

પ્રશ્ન: 6 અ વિભાગમાં આપેલ સર્વનામોને બ વિભાગના અનુરૂપ નામ સાથે જોડો:

- | (અ) | (બ) |
|----------|----------------|
| (૧) એષઃ | (૧) ભગિની |
| (૨) સા | (૨) બાલકઃ |
| (૩) તત્ | (૩) પુસ્તકમ્ |
| (૪) એષા | (૪) દેવઃ |
| (૫) એતત્ | (૫) લતા |
| | (૬) સુધાઘ્વણ્ડ |
| | (૭) વ્યજનમ્ |

પ્રશ્ન: 7 નીચે આપેલ સંખ્યાઓને શબ્દોમાં લખો :

- | | | | |
|----|-------|----|-------|
| 6 | _____ | 12 | _____ |
| 11 | _____ | 28 | _____ |
| 21 | _____ | 17 | _____ |
| 15 | _____ | | |

4.5 સુભાષિત અને શ્લોકના ગાનનું મહત્વ

શ્લોકના ગાનનું મહત્વ

- કોઇપણ વસ્તુ પદ્યમાં હોય અને વારંવાર ગાન કરવામાં આવે તો ગદ્ય કરતાં વધારે ઝડપથી અને સરળતાથી કંઠસ્થ થાય છે.
- પદ્ય રચનામાં કવિત્વ અને સર્જનાત્મકતાનો સુમેળ હોવાના કારણે તેના ગાનથી આસપાસ ના ભાવાવરણમાં સુગંધ ભળે છે

- રણભૂમિ પર વીર પુરુષોને રાષ્ટ્રરક્ષણ માટે પ્રેરવામાં, કરુણા જન્માવવામાં , મનોરંજનમાં તમામ સ્થળોએ જે કામ ભાષણોથી થતું નથી તે ગાનથી સહજ રીતે થઈ શકતું હોવાનો અનુભવ નોંધાયેલો છે.
- આપણી સમાજ વ્યવસ્થામાં પ્રાચીન કાળથી સુખના તેમજ શોકના પ્રસંગોની સાથે ગીતોના ગાનના તાણાવાણા ગૂંથાયેલા જોવા મળે છે.
- લોકો સખત પરિશ્રમની સાથે ગાનને જોડે છે અને શ્રમની પીડાને ભૂલી જાય છે
- ગાનના સ્વરૂપમાં યાદ રાખવામાં આવેલ માહિતી ઘણા લાંબા સમય સુધી યાદ રાખી શકાય છે અથવા તેના પુનઃસ્મરણ માટે બહુ ઓછા પરિશ્રમ ની જરૂર પડે છે.
- સંસ્કૃતના સુભાષિતોની ઉધ્ધરણ ક્ષમતા વિશેષ હોવાથી અનેક શબ્દોના સ્થાનેએકાદ સુક્તિ કે સુભાષિતનું ગાન બસ થઈ જાય છે

શિક્ષણમાં ઉપયોગિતા

પોતાનો વર્ગવ્યવહાર આનંદદાયી અને જીવંત બને તેવી કામના તમામ શિક્ષકોની રહેવાની જ. આ કામનાની પૂર્તતા માટે ગાન એ માનવ સ્વભાવ માટે અત્યંત અનુકૂળ પ્રવૃત્તિ છે

- સંસ્કૃત જેવા વિષયમાં વિદ્યાર્થીઓને રસ લેતા કરવા માટે શ્લોકોના ગાન મારફત આ ભાષાના વિશાળ ભંડાર અને ગૂઢ તત્વો રજુ કરવામાં સરળતા રહે છે.
- વ્યાકરણ જેવા એકમો રૂપોની ગોખણ પટ્ટી કરાવવાના બદલે વિવિધ શ્લોકોના માધ્યમથી રૂપો અને વાક્ય રચનાઓની સમજ કેળવવામાં આવે તો વ્યાકરણ પણ રસમય બને છે અને ભાર વિનાના ભણતરનો અભિગમ સિદ્ધ થાય છે.
- સંસ્કૃતમાં ગણિત શાસ્ત્ર, ચિકિત્સા શાસ્ત્ર તેમજ ગૂઢ અધ્યાત્મને સૂત્રો તેમજ શ્લોકોમાં વણી લેવામાં આવ્યું છે જેના માધ્યમથી વિવિધ વિષયોમાં પારંગતતા મેળવવામાં પણ સહાયભૂત બની શકાય છે.
- મૂલ્ય શિક્ષણ એ વર્તમાન સમયમાં પડકાર રૂપ વિષય છે સંસ્કૃત ભાષામાં શ્લોક ગાનનાં માધ્યમથી સત્યરિત્ર, સત્ય, રાષ્ટ્રનિષ્ઠા, પ્રામાણિકતા, વિનય, નિર્લોભીપણ, અહિંસા, માનવતા જેવાં મૂલ્યોનું મહત્વ સમજાવી તે આત્મસાત કરવા પ્રેરી શકાય છે.
- ભાષાનાં મુક્ત લખાણોમાં સંદર્ભો ટાંકવાથીતેનું સૌંદર્ય તેમજ અસરકારતા વધી જાય છે. સંસ્કૃતનાં શ્લોકો તેમજ શ્લોકોનાં ચરણો-વાક્યખંડોમાં આવી ઉદ્ધરણક્ષમતા અજબની છે.

શ્લોકગાન નાં આવશ્યક અંગો

સંસ્કૃત ભાષામાં ગાનનું મહત્વ વિશેષ છે સુભાષિતો, શ્લોકો, ખંડકવ્યોથી લઈને આપણા જ્ઞાન-ભંડારોમાંથી સમૃદ્ધ વૈભવ મળી રહે છે આમ છતાં કેટલીક બાબતો ધ્યાનમાં રાખવામાં ન આવે તો ન ગાનારને મજા આવે ન સાંભળનાર ને માત્ર બે ત્રણ બાબતો ધ્યાનમાં રાખવાથી આપણુ ગાન અસરકારક બને છે આ બાબતોમાં છંદ, ગતિ, ભાવ વગેરેનો સમાવેશ થાય છે.

- સૌ પ્રથમ જે શ્લોકનું ગાન કરવાનું છે તેના છંદની ઓળખ થવી ઘટે. અનુષ્ટુપ, શિખરિણી, મંદાકાંતા, શાર્દૂલવિકિરિત, ઇન્દ્રવજ્ર, ઉપેન્દ્રવજ્ર, મિશ્રોપજાતિ, વસંતતિલકા, આર્યા જેવાં છંદોનો ઉપયોગ વિશેષ પ્રકારે થયેલો જોવા મળે છે. જો આ છંદોના ગાન માટેનો લય, યતિ તેમજ ગતિનો ખ્યાલ રાખવામાં આવે અને ગાન કરવામાં આવે તો તે ગાન આનંદદાયક બને છે.
- શ્લોકનું ગાન અત્યંત મંદ ગતિથી કે અતિ શીઘ્રતાથીથાય તો પણ શ્રોતાના માટે તે કર્ણપ્રિય બનતું નથી તેથી યોગ્ય ગતિથી જ તેનું ગાન કરવાનો આગ્રહ જરૂરી છે.
- શ્લોકમાં અભિવ્યક્ત થતો ભાવ ગાયકના કંઠમાંથી પણ પ્રગટવો જોઈએ કરુણરસને જગાવતા શ્લોકને હસતા મુખારવિંદ સાથે ગાવો કે હાસ્યરસ પ્રગટાવતા સુભાષિતનું ગાન કરુણ અવાજે કરવું તે અનુચિત લાગે છે.
- અર્થબોધ સાથે થતા ગાનનુ આગવું સૌંદર્ય હોય છે જરૂર જણાય ત્યાં વિદ્યાર્થીઓને શ્લોકના અર્થથી અવગત કરવામાં આવે તે જરૂરી છે. આપણે ત્યાં ઘણા મૂર્ધન્ય કવિઓએ ઘણા શ્લોકોના સમશ્લોકી અનુવાદો કરેલા છે. એ જ ભાવાનુવાદો પણ પ્રચલિત છે. કવિ નાન્યાલાલે પોતાના સ્તુતિ અષ્ટક માં ‘ અસત્યો માંહેથી ’ વાળો શ્લોક એ ‘ અસતો મા સદ ગમય.’ ના ભાવાનુવાદ રૂપે રચેલો છે આ સિવાય રા. વિ. પાઠક, કે. હ. ધ્રુવ તેમજ ઘણા નામી કવિઓએ સમશ્લોકી અનુવાદો આપ્યા છે. મૂર્ધન્ય કવિ શ્રી ઉમાશંકર જોષીએ અભિજ્ઞાન શાકુન્તલમ્ તેમજ ઉત્તર રામચરિતમના અનુવાદો કર્યા છે તેમાં આવેલા શ્લોકોના સમશ્લોકી અનુવાદો પણ આપ્યા છે. આને તુલનાત્મક સ્વરૂપે રજૂ કરવામાં આવે તો વર્ગખંડ રસમય બની જાય.
- ગાનારના કંઠનુ માધુર્ય પણ શ્લોકના સૌંદર્યને ચાર ચાંદ લગાવે છે.

4.6 સારાંશ

- સમજપત્ર અભ્યાસક્રમનો પાયો છે. તેમાં જે તે વિષય શા માટે શીખવવો જોઈએ તેની ચર્ચા કરવામાં આવે છે. ઉપરાંત શું શીખવવું અને તેના આધારે અપેક્ષિત ગુણ વિકાસનો પણ સમાવેશ કરવામાં આવે છે.
- ધોરણ 6થી 8માં સમાવિષ્ટ શૈક્ષણિક સામગ્રી અનુસારના વ્યાહવારિક વ્યાકરણના કેટલાક મુદ્દાઓની સમજ આપણે મેળવી
- સંસ્કૃત શિક્ષણમાં સ્તુતિ સુભાષિતો, શ્લોકો, ગીતો વગેરે મહત્ત્વ ધરાવે છે. તેનું ગાન આગવું સ્થાન ધરાવે છે ગાનની બાબતમાં જરૂરી માહિતી અને શૈક્ષણિક ઉપયોગિતા અંગે ચર્ચા કરવામાં આવી

4.7 એસાઇનમેંટ

1. ધોરણ 6 થી 8નાં સંસ્કૃતનાં પાઠ્યપુસ્તકો તેમજ શિક્ષક આવૃત્તિના આધારે કક્ષાવાર અધ્યયન નિષ્પત્તિઓની યાદી તૈયાર કરો.
2. સંસ્કૃત વ્યાકરણમાં પ્રયોજાતી વિભક્તિઓનાં નામ લખો દરેક વિભક્તિનાં પાંચ પાંચ ઉદાહરણ આપો.
3. હસ્તન ભૂતકાળની માહિતી મેળવો અને તેનો ઉપયોગ કરીને દસ વાક્યો બનાવો
4. સંસ્કૃત વિષયમાં શ્લોક ગાનનું મહત્ત્વ દર્શાવો.
5. સંસ્કૃતમાં સુભાષિતો અને મુક્તકોનો સંગ્રહ કરો

દ્વિતીય વર્ષ

Course-5B Hindi

વિચાર પ્રેરક પ્રશ્નો.

- 1) હિંદીભાષાનું શિક્ષણકાર્ય કરતાં ટી.વી.થી લાભ થાય છે કે હાનિ? તમારા વિચારો કારણો સાથે રજૂ કરો.
- 2) કરિયાણાની દુકાન જેવું અન્ય કોઈ દુકાનનું ભાવપત્રક હિન્દીમાં બનાવો. તે કેવી રીતે બનાવ્યું તે લખો.

કોર્ષ:5-બ સંસ્કૃત

વિચાર પ્રેરક પ્રશ્નો.

1. શિક્ષક સંસ્કૃતમાં વર્ગવ્યવહાર કરવા માંગે છે,તો તે માટે કયાં કયાં વાક્યોનો ઉપયોગ વધારે પ્રમાણમાં કરશે? શા માટે?
2. તમારી સવારની દિનચર્યા કયા શ્લોક સાથે કરો છો? તેની સાથે ગુજરાતીનું કયું સુભાષિત જોડી શકો?
3. નાસ્તો કરતાં કે ભોજન પૂર્વે કયો શ્લોક બોલો છો? એનો અર્થ જણાવો.
4. ગુજરાતી ભાષા તથા સંસ્કૃતમાં તુલનાત્મક સુભાષિતો કયાં છે?
5. ધો. ૬થી ૭નાં સંસ્કૃતનાં પાઠ્યપુસ્તકોમાં વ્યાકરણની વિગતોનો સમાવેશ શા માટે કરવામાં આવ્યો નહીં હોય?
6. તમારા મતે સંસ્કૃતભાષાનું શિક્ષણકાર્ય કયા ધોરણથી શરૂ કરવું જોઈએ? શા માટે?
7. સંસ્કૃતભાષા શીખવાથી માતૃભાષા ઉપર કેવી રીતે અસર પડે છે? તે ઉદાહરણ સાથે સમજાવો.

નોંધ: મોડ્યુલ આધારિત આ વિચારપ્રેરક પ્રશ્નો ઉદાહરણ પૂરતાં આપેલાં છે.

અધ્યાપકશ્રીઓએ આ પ્રશ્નોનો આધાર લઈ બીજા પ્રશ્નો બનાવી વિદ્યાર્થીઓને મહાવરો કરાવવો.